अंतस

अर्धवार्षिक पत्रिका, अंक-23. 26 जनवरी 2023

साहित्य: नारी की कलम से

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएँ भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया–चित्र तथा आंकड़ों से संबन्धित आरेख स्पष्ट होना चाहिए।
- अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते है।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते है किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मण्डल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

स–आभार
सम्पादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर अभय करंदीकर

निर्देशन
प्रोफेसर एस गणेश

कुलसचिव
श्री कृष्ण कुमार तिवारी

मुख्य संपादक
डॉ. अर्क वर्मा

संपादक
श्री विजय कुमार पाण्डेय

सम्पादन सहयोग
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बालानी
प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र
प्रोफेसर ललित सारस्वत

अभिकल्प
अल्पना दीक्षित

अनुवाद
श्री जगदीश प्रसाद

छाया चित्र
श्री गिरीश पंत

विशेष सहयोग
प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार समस्त संस्थान
कर्मी एवं विद्यार्थी साहित्य सभा

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक 05

उपनिदेशक 06

कुलसचिव 07

सम्पादकीय

मुख्य सम्पादक 08

रिपोर्ट

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समारोह 2022 09

'अक्षर' आई आई टी कानपुर साहित्यिक उत्सव 12

विश्व हिंदी दिवस 14

अनंतिनी अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 15

वार्ता 16

गुरूदक्षिणा

पूर्व छात्रा सुश्री अंजलि जोशी 19

साहित्य यात्रा

'अम्मा' 22

मै अभी और पढ़ना चाहती हूं 23

आज की नारी 23

अभिलाषा 23

एनएफटी पुस्तकेः पढ़ने का क्रिप्टोभविष्य 24

हमेशा देर कर देता हूँ मैं 25

धुसपैठी तेंदुआ 26

बदलाव 27

आई आई टी 27

जीवन–संघर्ष 28

वो नारी है–नर लिखती है 28

श्रृंगार प्रेम 29

लूडो 29

एक नई पहल (सप्तरंग) 30

शिवानी की बातें 31

निसर्ग कन्याः बहिणाबाई चौधरी 33

प्रेम 36

अजनबी 36

तकनीकी लेख

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का हमारे समाज पर प्रभाव 37

विरासत

भारत की प्रमुख महिला साहित्यकार

महादेवी वर्मा 41

सुभद्रा कुमारी चौहान 42

ममता कालिया 43

मन्नू भंडारी 44

शिवानी 45

कृष्णा सोबती 46

मैत्रेयी पुष्पा 47

अतिथि रचनाकार

हिंदी भाषा की आधार शिला है 'देव नागरी' 48

बाज बत्तीसी

चतुराई 50

कार्यालयीन टिप्पणियाँ 51

शुभेच्छा
निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठक,

साहित्य समाज का दर्पण होता है जो हमारी संस्कृति एवं सभ्यता का संवाहक भी होता है । समाज में जो कुछ भी घटित होता है उसका प्रतिबिंब साहित्य में स्पष्ट देखा जा सकता है, तथा एक साहित्यकार समाज की तत्कालीन परिस्थितियों को आधार बनाकर अपने साहित्य का सृजन करता है। साहित्य के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है । मुंशी प्रेमचंद जी का भी यही मानना था कि जीवन में साहित्य का बहुत बड़ा स्थान है, साहित्य पढ़कर मनुष्य के संस्कारों एवं ज्ञान में परिमार्जन होता है, जिसके फलस्वरूप उसके विचारों तथा व्यक्तित्व में निखार आता है । साहित्य के माध्यम से ही हम अपने इतिहास के बारे में जान पाते हैं, यह एक ऐसी धरोहर है जो हमें सदैव प्रेरणा देती है । यह न केवल समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाती है बल्कि हमें इन कुरीतियों के प्रति जागृत करने का कार्य भी करती है । स्वाधीनता आंदोलन के दौरान, आजादी के लिए समाज को सही दिशा देने के साथ–साथ देशवासियों में नई चेतना पैदा करने में हिंदी कविताओं ने न सिर्फ वैचारिक उर्जा प्रदान की, बल्कि, सामान्य जनमानस में जोश भरने का कार्य भी किया । आजादी के इस अमृत महोत्सव काल में आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो हिंदी साहित्यकारों द्वारा अपनी कलम से आजादी में दिए गए योगदान के प्रति श्रद्धा से शीश नमन हो जाता है ।

इस संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का प्रस्तुत अंक महिला साहित्यकारों को समर्पित है तथा 'साहित्यः नारी की कलम से' शीर्षक के अधीन प्रकाशित है । हिंदी साहित्य में पुरुषों के साथ–साथ महिला साहित्यकारों ने भी अपनी कलम का जादू बिखेरा है । महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, शिवानी, मृणाल पाण्डे, मन्नू भंडारी के साथ–साथ हमारे देश की अन्य अनेकों महिला साहित्यकारों ने भारतीय हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपनी महती भूमिका निभाई है। इन सभी महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को सुसंस्कृत एवं जागरूक करने का कार्य किया है । निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि महिला साहित्यकारों ने भी हिंदी साहित्य में अप्रतिम योगदान दिया है एवं हमारे समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया है ।

गणतंत्र दिवस के इस अवसर पर हिंदी पत्रिका अंतस के 23वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे व्यक्तिगत रूप से अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है । इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादन मंडल एवं सभी रचनाकारों को बहुत–बहुत बधाई । सभी रचनाकारों से अपेक्षा है कि वे अंतस के लिए इसी तरह अपनी श्रेष्ठ एवं उपयोगी लेख/रचनाएं उपलब्ध कराते रहें ।

आप सभी को नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ!

धन्यवाद!

अभय करंदीकर
निदेशक

शुभेच्छा
उपनिदेशक की दृष्टि मे...

प्रिय पाठकगण,

आप सभी को गणतंत्र दिवस की बहुत बहुत बधाई!

प्रत्येक गणतंत्र दिवस की भांति इस गणतंत्र दिवस पर भी संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' को लेकर हृदय में उत्सुकता है । यह अंक 'साहित्यः नारी की कलम से' हिंदी साहित्य में नारी साहित्यकारों के योगदान के प्रति हमारा नमन है । इस क्षेत्र में, जहां महाकवियों ने साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की, वहीं महिला साहित्यकारों ने भी अपनी अमूल्य कृतियों से हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है । किसी भी देश या भाषा का साहित्य कई कारणों से प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण होता है । हिंदी साहित्य ने भी सभी दृष्टियों से प्रासंगिकता का निर्वहन किया है । साहित्य का सबसे बड़ा योगदान यह होता है कि वह पाठक को संवेदनशील बनाता है तथा उसके जीवन को सुंदरता और रमणीयता से भर देता है । आज भी, महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र की भांति हिंदी साहित्य क्षेत्र में भी अप्रतिम योगदान दे रही हैं तथा हाथ में कलम लिए महिला साहित्यकारों की विशाल फौज ने अपनी लेखनी से पाठकों में एक अद्वितीय एवं अमिट छाप छोड़ी है ।

संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ, शिवानी केंद्र, एवं हिंदी साहित्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में परिसर में समय–समय पर साहित्यिक गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों एवं साहित्यिक उत्सवों का आयोजन किया जा रहा है । इन सभी आयोजनों का मुख्य उद्देश्य हिंदी साहित्य में रुचि रखने वाले परिसरवासियों को देश के नामचीन हिन्दी साहित्यकारों से रू–ब–रू कराना होता है जिससे उनके अंदर हिंदी साहित्य की समझ विकसित हो सके तथा वे इसका लुत्फ भी उठा सकें । हमारे संस्थान के अनेक छात्र, संकाय एवं कर्मचारी हिन्दी साहित्य में गहरी रूचि रखते हैं जिन्हें वे अंतस पत्रिका के माध्यम से अभिव्यक्त भी करते हैं।

मैं अंतस के 23वें अंक को पाठकों को समर्पित करते हुये पत्रिका के समस्त रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ । आशा करता हूँ कि पत्रिका सभी की उम्मीदों पर खरी उतरेगी । मेरी आशा है कि सभी परिसरवासी अपनी मौलिक रचनाओं से पत्रिका को और अधिक समृद्ध एवं सुरुचि–संपन्न बनाने में अपना सहयोग जारी रखेंगे ।

धन्यवाद!

एस गणेश
उप निदेशक

शुभेच्छा
कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों,

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । अथर्ववेद के इस श्लोक के अनुसार जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। नारी नर की आत्मा का आधा भाग है। नारी के बिना, नर का जीवन अधूरा है, इस अधूरेपन को दूर करने और संसार को आगे चलाने के लिए नारी का होना नितांत आवश्यक है। नारी ही मां है और नारी ही सृष्टि। एक सृष्टि की कल्पना बगैर मां के नहीं की जा सकती है। मां अर्थात माता के रूप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है। मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है, क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी आदिशक्ति नारी ही हैं।

हिंदी साहित्य के भक्ति काल में हिंदी समाज में भक्ति का प्लावन फैलाते हुए मीराबाई ने भारतीय समाज को कृष्ण भक्ति से सराबोर कर दिया। उनकी कोमल वाणी ने भारतीय साहित्य में प्रेम और आशा से भरी हुई वह पावन सरिता प्रवाहित की जिसकी वेगवती धारा आज भी भारतीयों की अंतरात्मा में ज्यों की त्यों अबाध गति से बह रही है। भक्ति काल की इस मीराबाई से लेकर आधुनिक युग की मीरा अर्थात महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, मृणाल पाण्डे, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, शिवानी, कृष्णा शोबती, मृदुला सिन्हा आदि अनेकों महिला साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य में पुरुष साहित्यकारों के कंधे से कंधा मिलाकर बराबर का योगदान दिया है । इन्हीं के अप्रतिम योगदान को याद करते हुए संस्थान की हिंदी भाषा की पत्रिका अंतस का 23वॉ संस्करण "साहित्य : नारी की कलम से" शीर्षक के साथ प्रस्तुत है।

गणतंत्र दिवस के इस पावन अवसर पर इस पत्रिका को आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है । प्रबुद्ध रचनाकारों के मनमोहक रचनाओं एवं सम्पादक मंडल के निरंतर प्रयास से यह पत्रिका दिनों–दिन और निखरती जा रही है । आप सभी लोगों के योगदान हेतु साधुवाद ! आशा है कि आगे भी आप लोग अपनी रचनाओं एवं प्रयासों से इस पत्रिका को इसी तरह अभिसिंचित करते रहेंगे ।

कोरोना की आहट एक बार फिर से महसूस होने लगी है । प्रभु से प्रार्थना है कि आप सभी लोग सपरिवार स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें । इसी मनोकामना के साथ आप सभी को नव वर्ष – 2023 एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

धन्यवाद!

कृष्ण कुमार तिवारी
कुलसचिव

सम्पादकीय

सम्पादक की कलम से...

अंतस के सभी पाठकों को मेरा सादर प्रणाम !
आप सभी को नव वर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !!

समाज के दो पहलू स्त्री – पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं। किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नहीं है। नारी को आरंभ से ही सृजन, सम्मान और शक्ति का प्रतीक माना गया है, उसी सम्मान को लेकर, उसके अधिकार, उसकी पहचान को लेकर साहित्य में नारी लेखन की परंपरा रही है। साहित्य के हर काल में नारियों ने अपनी रचनाओं के जरिये योगदान दिया है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारियां, साहित्य की तमाम विधाओं में अपनी लेखनी के माध्यम से हिंदी साहित्य में अनुपम योगदान देती आ रही हैं। आज के समय में हर क्षेत्र में नारी के योगदान को देखते हुए ही, यह आपकी अपनी 'अंतस' एक नए कलेवर में, शीर्षक 'साहित्य : नारी की कलम से' आपके समक्ष प्रस्तुत है।

इस बार अंतस परिवार में, हमारे नए सहयोगी, संपादक श्री विजय कुमार पाण्डेय शामिल हुए है, जो कि भारतीय नौसेना, रक्षा लेखा नियंत्रक सिकंदराबाद एवं भारतीय वायु सेना की सेवा पश्चात इस परिवार से जुड़े हैं । मुझे पूर्ण विश्वास है कि अंतस परिवार उनके अनुभव से लाभान्वित होगा।

इस अंतस की शुरुआत हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस 2022 की रिपोर्ट के साथ है तत्पश्चात 'अक्षर' साहित्यिक उत्सव के आयोजन की विस्तृत रिपोर्ट, विश्व हिंदी दिवस एवं अनंतिनी–काव्योत्सव के आयोजन से आप रूबरू होंगे। इस बार की वार्ता में आप हिंदी साहित्य की जानी मानी महिला साहित्यकार श्रीमती गौरापंत जो कि अपना लेखन 'शिवानी' के नाम से करती थीं, की पुत्री और प्रख्यात लेखिका श्रीमती मृणाल पांडे और उनके भाई श्री पुष्पेश पंत जी की वार्तालाप से, आप शिवानी जी के जीवन के अनसुने पहलू से अवगत होंगे।

गुरु, गुरुकुल तथा शिष्य, इनका पारस्परिक नाता न तो शब्दों में वर्णित किया जा सकता है न ही पंक्तियों और वचनों से। इस बार की गुरुदक्षिणा में आप मिलेंगे, अपने पूर्व छात्रा सुश्री अंजली जोशी से। इस बार की अंतस अपने आप में कई महत्वपूर्ण जानकारियों को समेटे हुए है। रंगोली अवस्थी की **'एनएफटी पुस्तक : पढ़ने का क्रिप्टोभविष्य'** के साथ–साथ तकनीकी लेख में आप उपेन्द्र कुमार पराशर द्वारा लिखित **'सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का हमारे समाज पर प्रभाव'** के बारे में भी जानकारी हासिल करेंगे।

भरत सोमैया की **मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं,** समीर खांडेकर की **घुसपैठी तेंदुआ,** डॉ असित बाजपेई की **बदलाव,** देवेन्द्र नारायण राजपूत की **जीवन–संघर्ष,** संतोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु' की **वो नारी है–नर लिखती है** आदि कविताएं आपको मंत्रमुग्ध कर देंगी। आशा करता हूं कि मेरे द्वारा लिखित दो कविताएं **प्रेम** और **अजनबी** आपको पसंद आएंगी। संपादक मंडल द्वारा नारी साहित्यकारों **महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, ममता कालिया, मन्नू भंडारी, शिवानी, कृष्णा सोबती** एवं **मैत्रेयी पुष्पा** के ऊपर लेख इस पत्रिका के शीर्षक को चरितार्थ करती है। बबिता लोहनी की **शिवानी की बातें** तथा अंजलि कुलकर्णी की **निसर्ग कन्या : बहिणाबाई चौधरी** अद्भुत लेख हैं । अंतस में चार–चांद लगा रही सानिध्य अग्रवाल की **लूडो** तथा ज्योति मिश्रा की **हमेशा देर कर देता हूं मैं** बहुत ही अच्छी कहानियां हैं। इस बार की श्रद्धांजलि प्रख्यात पुरातत्वविद् और **लेखक ब्रज बासी जी** को अर्पित है।

अंत में मैं अंतस परिवार के सभी सदस्यों, सभी रचनाकारों एवं मुख्य रुप से सभी पाठकों को बधाई देता है। आप सभी पाठकों का प्यार ही है जो कि हमें इस पत्रिका को नित नए रुप में प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करता है। कृपया इसी तरह अपना प्यार बनाए रखें और हमें सुझाव प्रेषित करते रहें।

धन्यवाद !

अर्क वर्मा

अर्क वर्मा
मुख्य संपादक

रिपोर्ट

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समारोह–2022

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं इसके प्रयोग की गति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संस्थान के कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के लिए हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा 2022 का आयोजन दो चरणों में हुआ। पहला चरण 16 से 23 सितम्बर 2022 के मध्य सम्पन्न हुआ जिसमें संस्थान के कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया जबकि दूसरे चरण का आयोजन दिनांक 23 से 29 सितम्बर के मध्य हुआ जिसमें संस्थान के विद्यार्थियों ने अप्रत्याशित रूप से भारी संख्या में भाग लिया। दोनों चरणों के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं में संस्थान के लगभग 350 कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं को तकनीकी तथा गैर तकनीकी दो वर्गों में विभाजित किया गया था। हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार है।

कर्मचारी वर्ग

हिंदी टंकण प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री वैभव गुप्ता	कनिष्ठ सहायक	सतत् ऊर्जा अभियांत्रिकी विभाग	प्रथम
2.	श्री रामतेज	कनिष्ठ सहायक	स्वास्थ्य केन्द्र	द्वितीय
3.	सुश्री स्मृति मिश्रा	परियोजना सहायक	अधिष्ठाता संकाय कार्यालय	तृतीय

हिंदी टंकण प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री आशीष शर्मा	कनिष्ठ तकनीशियन	पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम	प्रथम
2.	श्रीमती प्रगति इंदौरिया	सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी	पी के केलकर पुस्तकालय	द्वितीय
3.	श्रीमती रंगोली अवस्थी	वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

वर्तनी शोधन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्रीमती सिन्धु श्री एस के.	कनिष्ठ सहायक	आंतरिक अंकेक्षण कार्यालय	प्रथम
2.	श्री प्रदीप कुमार मोहंती	कनिष्ठ अधीक्षक	जेईई कार्यालय	द्वितीय
3.	श्री दिलेश्वर मोहान्कुड़ो	कनिष्ठ तकनीशियन	सेंटर फॉर लेजर एण्ड फोटोनिक्स	तृतीय

हिंदी टंकण प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री विकास कुमार	कनिष्ठ सहायक	वातंरिक्ष अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	सुश्री शहाना सुल्ताना	कनिष्ठ सहायक	पी के केलकर पुस्कालय	द्वितीय
3.	श्री राम कृपाल	हेल्पर	विद्युत अभियांत्रिकी	द्वितीय
4.	सुश्री अलीशा सकलैनि	परियोजना सहायक	अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्यालय	तृतीय

हिंदी टंकण प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्रीमती प्रगति इंदौरिया	सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
2.	श्री शशिकपूर प्रजापति	वरिष्ठ तकनीशियन	अर्थशास्त्र विभाग	द्वितीय
3.	श्री रमाकांत	सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री मनोज कुमार वर्मा	कनिष्ठ अधीक्षक	प्रशासन अनुभाग	प्रथम
2.	श्री संदीप कुमार	कनिष्ठ अधीक्षक	अनुसंधान एवं विकास कार्यालय	द्वितीय
3.	श्री श्रीराम गुप्ता	कनिष्ठ सहायक	लेखा अनुभाग	तृतीय
4.	श्री रमेश साह	उप सुरक्षा अधिकारी	सुरक्षा इकाई	तृतीय

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्रीमती प्रगति इंदौरिया	सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
2.	श्री उमाशंकर	वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक	पी के केलकर पुस्तकालय	द्वितीय
3.	श्री आशीष शर्मा	कनिष्ठ तकनीशियन	पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम	तृतीय

आशुभाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	अभिषेक वर्मा	उप परियोजना प्रबंधक	अनुसंधान एवं विकास	प्रथम
2.	अजय सिंह चौहान	कनिष्ठ तकनीशियन	सतत् ऊर्जा अभियांत्रिकी विभाग	द्वितीय
3.	शिव शंकर शुक्ला	कनि. तकनीकी अधीक्षक	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

अनुवाद प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री मनोज कुमार वर्मा	कनिष्ठ अधीक्षक	प्रशासन अनुभाग	प्रथम
2.	श्री संदीप कुमार	कनिष्ठ अधीक्षक	अनुसंधान एवं विकास	द्वितीय
3.	श्री रामकृपाल	हेल्पर	विद्युत अभियांत्रिकी विभाग	तृतीय
5.	श्री विनोद पॉल	कनिष्ठ अधीक्षक	कुलसचिव कार्यालय	तृतीय
6.	श्री अनुभव कुमार आर्या	कनिष्ठ सहायक	अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्यालय	तृतीय

अनुवाद प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्रीमती प्रगति इंदौरिया	सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
2.	श्री उमाशंकर	वरिष्ठ तकनीशियन सूचना अधिकारी	पी के केलकर पुस्तकालय	द्वितीय
3.	श्री उपेन्द्र कुमार पाराशर	तकनीकी अधीक्षक	भौतिकी	तृतीय

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री रमाकांत	सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
2.	श्री कौशलेस	परियोजना सहायक	पी के केलकर पुस्तकालय	द्वितीय
3.	श्री विकास कुमार	कनिष्ठ सहायक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	तृतीय
4.	श्री विनोद पॉल	कनिष्ठ अधीक्षक	कुलसचिव कार्यालय	तृतीय

विद्यार्थी वर्ग

काव्यांजलि प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पाठ्यक्रम	विभाग	स्थान
1.	ध्रुव पाण्डेय	पीएचडी	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	ज्योति मिश्रा	पीएचडी	जैव विज्ञान एवं जैविक अभियांत्रिकी	द्वितीय
3.	प्रतीक रंजन दफ्तौर	बैचलर ऑफ साइंस	अर्थशास्त्र	तृतीय

कहानी लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पाठ्यक्रम	विभाग	स्थान
1.	प्रत्र लेखा सरकार	पीएचडी	रसायन	प्रथम
2.	भूपेन्द्र सिंह	पीएचडी	रसायन	द्वितीय
3.	वैभव सिंह	एम टेक	सिविल अभियांत्रिकी	तृतीय

तर्क प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पाठ्यक्रम	विभाग	स्थान
1.	अर्पित राज	बी.टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	प्रसंग वशिष्ठ	बी.टेक	सिविल अभियांत्रिकी	द्वितीय
3.	अमन कुमार	बी.टेक	रासायनिक अभियांत्रिकी	तृतीय

संसदीय वाद–विवाद प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार (टीम सानिध्य)

क्र.सं.	नाम	पाठ्यक्रम	विभाग	स्थान
1.	ईशान अग्रवाल	बैचलर ऑफ साइंस	अर्थशास्त्र	प्रथम
2.	प्रसंग वशिष्ठ	बी.टेक	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
3.	आरती यादव	बी.टेक	रासायनिक अभियांत्रिकी	प्रथम
4.	स्नेहल श्रीधर काने	बी.टेक	पदार्थ विज्ञान अभियांत्रिकी	प्रथम
5.	कमलराज रावत	बैचलर ऑफ साइंस	रसायन	प्रथम
6.	प्रभात कुमार	बी.टेक	यांत्रिक अभियांत्रिकी	प्रथम

द्वितीय पुरस्कार (टीम अंजलि)

क्र.सं.	नाम	पाठ्यक्रम	विभाग	स्थान
1.	हर्षित सचदेव	बी.टेक	पदार्थ विज्ञान अभियांत्रिकी	द्वितीय
2.	प्रदीप कुमार बागरी	बी.टेक	रासायनिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
3.	आशुतोष भारद्वाज	बी.टेक	रासायनिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
4.	हवी बोहरा	बैचलर ऑफ साइंस	गणित एवं सांख्यिकी	द्वितीय
5.	अर्पित राज	बी.टेक	सिविल अभियांत्रिकी	द्वितीय

तृतीय पुरस्कार (टीम हर्ष)

क्र.सं.	नाम	पाठ्यक्रम	विभाग	स्थान
1.	अमन कुमार	बी.टेक	रासायनिक अभियांत्रिकी	तृतीय
2.	सारन्य पाल	बैचलर ऑफ सांइस	रसायन	तृतीय
3.	ऋतं आचार्य	बी.टेक	रासायनिक अभियांत्रिकी	तृतीय
4.	आर्यन श्रीवास्तव	बी. टेक	विद्युत अभियांत्रिकी	तृतीय
5.	रमन कुमार	बी.टेक	सिविल अभियांत्रिकी	तृतीय
6.	अनिकेत संधान	बैचलर ऑफ साइंस	रसायन	तृतीय
7.	मोनिका कुमारी	बी.टेक	सिविल अभियांत्रिकी	तृतीय

दिनांक 30 सितम्बर 2022 को हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया । हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर अपने संबोधन में निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर ने संस्थान के संकाय सदस्यों एवं अनुसंधानकर्ताओं से आह्वान किया कि वे हिंदी को प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी की भाषा बनाने की दिशा में प्रयास करें ताकि हिंदी आसानी से सभी लोगों तक पहुंच सके जिससे हिंदी का व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग हो सके। हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ डॉ अर्क वर्मा ने गृह मंत्री जी के संदेश का वाचन किया जबकि कुलसचिव श्री कृष्ण कुमार तिवारी ने शिक्षा मंत्री जी के संदेश का वाचन किया। हिंदी दिवस के अवसर पर संस्थान से डॉ संतोष कुमार मिश्र, श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती शिप्रा सिंह, श्री रामजीत यादव के अतिरिक्त विद्यार्थियों ने अपने काव्य पाठ से सभी को आनंदित किया। इस अवसर पर डॉ. संतोष कुमार मिश्रा, डॉ. कांतेश बालानी, डॉ. अर्क वर्मा प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ, कुलसचिव श्री कृष्ण कुमार तिवारी के साथ–साथ संस्थान के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने हिंदी दिवस समारोह में भाग लिया।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर
INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY KANPUR
हिन्दी दिवस समारोह-2022
(दिनांक 30 सितम्बर 2022)
में
आप सभी का हार्दिक अभिनंदन है
आयोजक: राजभाषा प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं. कानपुर
राजभाषा प्रकोष्ठ
हिन्दी पखवाड़ा-2022
आई.आई.टी. कानपुर

'अक्षर'– आई आई टी कानपुर साहित्यिक उत्सव

'अक्षर'–'शिवानीः हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संपोषण एवं समन्वय केंद्र', 'राजभाषा प्रकोष्ठ' (हिंदी सेल), 'गाथा' – एक 'ऑडियो होस्टिंग प्लेटफॉर्म', एस आई आई सी, आई आई टी कानपुर 'इन्क्यूबेशन कंपनी', एवं 'हिंदी साहित्य सभा'– आई आई टी कानपुर के छात्रों का एक संगठन, द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया एक साहित्यिक महोत्सव है। यह तीन दिवसीय साहित्यिक उत्सव 14 अक्टूबर को शुरू तथा 16 अक्टूबर को समाप्त हुआ। इस उत्सव के प्रथम चरण में, कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, सुश्री राखी बख्शी, एक प्रसिद्ध मीडिया पेशेवर, 'हर वर्ल्ड इंडिया' की संस्थापक एवं प्रधान संपादक और हिंदुस्तान की कार्यकारी संपादक सुश्री जयंती रंगनाथन, सुप्रसिद्ध लेखिका द्वारा आई आई टी के 'आउटरीच ऑडिटोरियम' में किया गया था।

उद्घाटन समारोह के पश्चात राजभाषा प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. अर्क वर्मा ने स्वागत भाषण दिया। इसके अलावा प्रो. ब्रज भूषण, 'डीन ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन', प्रो. शलभ, 'डीन ऑफ एकेडमिक अफेयर्स', प्रो. अमिताभ बंद्योपाध्याय, 'इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन' आई आई टी कानपुर के प्रभारी, ने अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई और बाद में कार्यक्रम को संबोधित किया।

अपने पहले पुनरावृत्ति में, यह 3 दिवसीय उत्सव प्रसिद्ध हिंदी उपन्यासकार स्व. श्रीमती गौरा पंत जिन्हें 'शिवानी' के नाम से जाना जाता है, के जीवन और कार्यों के महत्व की जानकारी देते हुए किया गया। इस उत्सव के माध्यम से शिवानी जी के शताब्दी वर्ष जयंती समारोह की शुरुआत की गयी।

उद्घाटन समारोह के बाद डी ए वी कॉलेज, कानपुर के डॉ. राकेश शुक्ला द्वारा शिवानी की सबसे प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों, जैसे– 'मायापुरी', 'कृष्णकली', 'भैरवी', 'श्मशान चंपा' और 'विषकन्या' पर कार्यक्रम 'साहित्यावलोकन' में चर्चा की गयी। इन उपन्यासों के माध्यम से शिवानी ने भारतीय महिलाओं को अपनी आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। 1960 के दशक की शुरुआत में, उनके द्वारा लिखी गई कहानी 'लाल हवेली' ने उनकी प्रतिष्ठा स्थापित की, और अगले दशक में शिवानी जी ने कई महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं जो प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं।

इसके अतिरिक्त सत्र 'साहित्य की सतरंगिनी शिवानी' में 'कथारंग – ए स्टोरीटेलिंग ग्रुप' द्वारा शिवानी जी की सबसे प्रसिद्ध कहानियों का पाठ किया गया। इस कार्यक्रम में सुश्री नूतन वशिष्ठ, सुश्री अनुपमा, सुश्री पूजा विमल, सुश्री पुनीता अवस्थी और श्री सत्य प्रकाश ने शिवानी की सबसे प्रसिद्ध कहानियों – 'चिरस्वयंवर' और 'लाल हवेली' पर कथा सुनाई। उपस्थित सभी लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस कार्यक्रम को सराहा।

स्वर्गीय श्रीमती गौरा पंत 'शिवानी' के साथ ही, यह वर्ष प्रसिद्ध भारतीय कलाकार सैयद हैदर रजा, जो की एक पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण प्राप्तकर्ता रहे हैं, की भी शताब्दी वर्ष जयंती की शुरुआत का प्रतीक है। अतः 'अक्षर' साहित्यिक उत्सव के उद्घाटन के दिन (14 अक्टूबर) रजा साहब की स्मृति में सत्र 'सैयद हैदर रजा साहब की चित्रकला का एक परिचय' आयोजित किया गया । इस सत्र में आई आई टी कानपुर के मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग से डॉ. शतरूपा रॉय, कानपुर के डी ए वी कॉलेज के डॉ. हृदय गुप्ता और डॉ. राजर्षि सेनगुप्ता ने रजा के जीवन और कार्यों पर चर्चा की। साथ ही इस अवसर पर सैयद हैदर रज़ा साहब के चित्रकला की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

इसके उपरांत, डॉ. कमल मुसद्दी, श्री वीरू सोनकर, सुश्री हेमा दीक्षित, और श्री राजेश अरोड़ा जैसे वरिष्ठ कवियों ने कार्यक्रम 'काव्य संध्या' में अपनी कला की प्रस्तुति दी, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। उद्घाटन के दिन के अंत में, सभी कलाकारों को धन्यवाद प्रस्ताव 'गाथा' – एक ऑडियो होस्टिंग प्लेटफॉर्म के संस्थापक श्री अमित तिवारी द्वारा दिया गया।

साथ ही इस आयोजन में देश के प्रमुख प्रकाशकों के सहयोग से एक भव्य पुस्तक मेले का भी आयोजन किया गया।

आयोजन – 'अक्षर' के दूसरे दिन (15 अक्टूबर) की शुरुआत शिवानी सेंटर, आई आई टी कानपुर के समन्वयक, प्रोफेसर कांतेश बलानी द्वारा स्वागत भाषण से की गयी।

इसके बाद 'ओपन माइक' कार्यक्रम – 'हर दिल के कोने से' संपन्न हुआ, जिसमें आई आई टी परिसर के निवासियों और छात्रों के लिए 'कवि सम्मेलन' आयोजित किया गया। इस अवसर ने आई आई टी

कानपुर परिसर के निवासियों सहित अन्य स्थानों जैसे – उन्नाव, आगरा, हैदराबाद और लखनऊ के सभी महत्वाकांक्षी कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक मंच प्रदान किया।

इस कार्यक्रम में आई आई टी कानपुर के छात्र– श्री अर्पित राज, बी. टेक. द्वितीय वर्ष, 'सिविल इंजीनियरिंग', श्री शिवाशीष सिंह, एम.टेक. प्रथम वर्ष, 'सस्टेनेबल एनर्जी एंड इंजीनियरिंग', 'कंप्यूटर सेंटर' से श्री भरत सोमैया जैसे कर्मचारी शामिल हुए। आई आई टी के संकाय सदस्यों में – 'मैकेनिकल इंजीनियरिंग' से प्रो. समीर खांडेकर, 'बायोसाइंस एंड बायोइंजीनियरिंग' से प्रो. संतोष मिश्रा और 'पृथ्वी विज्ञान' विभाग से प्रो. दीपक ढींगरा ने इस कार्यक्रम में भागीदारी ली। अन्य स्थानों से आगरा की डॉ. नम्रता गुप्ता, कानपुर के डॉ. महेंद्र प्रताप सिंह, श्रीमती पल्लवी राज, डॉ. नमिता माथुर, डॉ. गीता द्विवेदी और श्री आर. पी. वार्ष्णेय, उन्नाव के श्री उपेंद्र बाजपेई सहित हैदराबाद की श्रीमती आर्या झा ने अपनी काव्य प्रस्तुति पेश

की। इस कार्यक्रम को दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया। इसके अतिरिक्त, 'आज के दौर में साहित्य की प्रासंगिकता' पर एक 'पैनल चर्चा' का आयोजन हुआ, जिसमें श्री आनंद कक्कड़, डॉ. शंभुनाथ तिवारी, श्री राहुल शिवॉय, सुश्री कमल मुसद्दी और श्री नवीन जोशी जैसे कई प्रसिद्ध साहित्यकारों ने भाग लिया। इस आयोजन ने दर्शकों में साहित्य के समकालीन महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने के प्रति अपनी विशेष भूमिका निभायी। सभी दर्शकों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में हुई हिंदी साहित्य पर चर्चा को खूब सराहा।

इसके उपरांत, प्रसिद्ध कहानीकार सुश्री महक मिर्जा प्रभु के साथ एक बेहद दिलचस्प संवादात्मक कहानी सुनाने का सत्र– 'शाम–ए–कहानी' का आयोजन हुआ। इस सत्र में उन्होंने दो कहानियाँ सुनाईं– 'मोहब्बत की कहानी' और 'विधि कैरी का अचार बनाने की'। अपने इस प्रदर्शन के माध्यम से उन्होंने दर्शकों को कल्पना की दुनिया से जोड़े रखा। कार्यक्रम की शानदार एवं सफल प्रस्तुति को वहां मौजूद सभी दर्शकों ने खूब सराहा।

साहित्य महोत्सव का समापन दिवस (16 अक्टूबर) आई आई टी कानपुर के मुख्य सभागार 'मेन ऑडिटोरियम' में आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय विधानसभा अध्यक्ष श्री सतीश महाना जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन आई आई टी कानपुर के निदेशक प्रो. अभय करंदीकर,

शिवानी जी की पुत्री डॉ. मृणाल पांडे एवं भतीजे डॉ. पुष्पेश पंत द्वारा किया गया। इसके उपरांत प्रोफेसर अभय करंदीकर ने साहित्य के समकालीन महत्व को संबोधित करते हुए न केवल साहित्य को एक विषय के रूप में बल्कि महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी विषयों को पढ़ाने के लिए भी इसकी महत्वत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिवानी के जीवन और उनके कार्यों से जुड़े महत्व पर भी अपने विचार साझा किए। इसके उपरांत, कार्यक्रम को मुख्य अतिथि श्री सतीश महाना जी ने संबोधित किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात, शिवानी जी की पुत्री डॉ. मृणाल पांडे – हिंदी पत्रकारिता में एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व, लेखिका, अग्रणी महिला–मुख्य संपादक, एवं पद्मश्री, और भतीजे –डॉ. पुष्पेश पंत, एक भारतीय अकादमिक, खाद्य समीक्षक, इतिहासकार और पद्मश्री

ने दिवंगत श्रीमती गौरा पंत के जीवन और अनमोल रचनाओं के बारे में बात की। 'दिद्दी पर बातचीतः शिवानी जी अपने बच्चों के चश्में से' शीर्षक वाले इस सत्र में, उन्होंने 20वीं शताब्दी की भारतीय महिला–केंद्रित कथा लेखन में शिवानी की अग्रणी यात्रा की झलक दी। साथ ही, उन्होंने शांतिनिकेतन में शिवानी के स्कूली दिनों की यादों को हास्य के साथ मिश्रित भावभीनी श्रद्धांजलि के रूप में साझा किया।

अपनी किशोरावस्था में, शिवानी को उनके भाई–बहनों के साथ शांतिनिकेतन भेज दिया गया था। उस समय वहां के संस्थापक

रवींद्रनाथ टैगोर जी जीवित थे और परिसर में ही थे। टैगोर की संगति में शिक्षा पाकर शिवानी जी को एक बोधगम्य और सतर्क मन की नींव रखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। उनकी शिक्षा नीतियों को अपनाकर शिवानी आगे चलकर 20वीं सदी की एक प्रसिद्ध हिंदी लेखिका बनीं।

'अपराधनी – एक नाटक सत्र में चेन्नई की सुश्री मीरा सीतारमन, जो की एक अभिनेत्री, नाटककार और निर्देशक के रूप में 'थिएटर ग्रुप–निशा' में कार्यरत हैं, शिवानी जी की सबसे लोकप्रिय कहानियों में से एक का मंचीय रूपांतरण किया। दर्शकों ने इस प्रदर्शन की जमकर सराहना की।

अंत में महाकवि सम्मेलन – 'कुछ अल्फाज़ो की परवाज' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. नरेश सक्सेना, डॉ. प्रवीण शुक्ला, डॉ. कीर्ति काले, डॉ. राजीव राज, डॉ. श्लेष गौतम, डॉ. विश्वनाथ विश्व, श्रीमती सुशीला पुरी और डॉ. पंकज चतुर्वेदी जैसे देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों की भागीदारी रही जिसको दर्शकों ने तहे दिल से सराहा।

इस आयोजन के साथ प्रसिद्ध कलाकार– सैयद हैदर रजा साहब के चित्रों की कला प्रदर्शनी और देश के प्रमुख प्रकाशकों द्वारा एक पुस्तक मेला भी लगाया गया था।

विश्व हिंदी दिवस

परिचर्चा : विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी शिक्षा को हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने में आने वाली कठिनाइयां एवं उनका समाधान

दिनांक 11 जनवरी 2023 को आई आई टी कानपुर के राजभाषा प्रकोष्ठ एवं शिवानी केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में "विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी शिक्षा को हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने में आने वाली कठिनाइयां एवं उनका समाधान" विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया । इस परिचर्चा का उद्घाटन मुख्य अतिथि एवं संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर जी द्वारा किया गया। इस परिचर्चा में इस संस्थान के प्रोफेसर अदित्य केलकर, प्रोफेसर मनोज हरबोला, प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल, प्रोफेसर नचिकेता तिवारी, प्रोफेसर अर्नब भट्टाचार्या तथा केन्द्रीय विद्यालय आई आई टी कानपुर के प्रधानाचार्य श्री आर सी पाण्डेय एवं दिल्ली पब्लिक स्कूल कल्याणपुर की प्रधानाचार्या श्रीमती अर्चना निगम जी ने भाग लिया।

परिचर्चा की शुरुआत डा. अर्क वर्मा, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ के स्वागत संबोधन से हुई । डा. अर्क वर्मा जी ने मुख्य अतिथि, संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर जी एवं परिचर्चा में शामिल सभी अधिकारियों एवं श्रोताओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया । तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिक का विकास हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में होना अतिआवश्यक है ताकि जो भी अनुसंधान हो रहे हैं वे सरलता से सभी तक पहुँच सकें और आने वाले विद्यार्थियों को सुगमता से उसका लाभ मिल सके। तत्पश्चात प्रोफेसर आदित्य केलकर जी के संचालन में इस परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए प्रोफेसर अविनाश अग्रवाल जी ने एक प्रेजेंटेशन के माध्यम से लोगों को अवगत कराया कि हमें इस विषय पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है । उन्होंने बताया कि अपनी मातृ भाषा में काम करने वाले विश्व के तमाम देश आज विकसित देशों की सूची में शामिल हैं जिसमें इजराइल, जापान, चीन, फ्रांस, जर्मनी आदि का उदाहरण उन्होंने पेश किया । उन्होंने कहा कि यह पूर्ण रुप से असत्य है कि विज्ञान और प्रोद्योगिकी को केवल अंग्रेजी में ही पढ़ा और समझा जा सकता है। अपितु यह हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में भी संभव है। इसके उपरांत दिल्ली पब्लिक स्कूल, कल्याणपुर की प्रधानाचार्या महोदया ने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि आज के समय में बच्चों को हिंदी में विज्ञान और प्रोद्योगिकी का ज्ञान उपलब्ध कराने के लिए हमारे पास उपयुक्त संसाधन नहीं हैं, जिसपर केन्द्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री आर सी पाण्डेय जी ने कहा कि यदि हम विभिन्न विषयों का ज्ञान भी अपनी मातृ भाषा में ही देने का प्रयास करें तो हम संसाधनों का यह अभाव बहुत हद तक कम कर सकते हैं । इसी पर

प्रोफेसर मनोज हरबोला जी ने कहा कि हमें बस भाषा पर ही नहीं अपितु उसकी प्रासंगिकता पर भी ध्यान देना होगा । अगर हम किसी भाषा में शिक्षा उपलब्ध कराएं परंतु वह प्रासंगिक न हो और विद्यार्थियों को उसका लाभ न हो तो ऐसी शिक्षा और उसकी भाषा की उपयोगिता व्यर्थ हो जाती है ।

चर्चा को और रोचक बनाते हुए प्रोफेसर नचिकेता तिवारी जी ने कहा कि हम संसाधनों की कमी की बात करते हैं पर यह ज्यादा विचारणीय विषय नहीं है, सर्वप्रथम हमें समाज से अपने जुड़ाव पर ध्यान देना होगा । एक उच्च शिक्षा प्राप्त होते ही हम समाज से कट जाते हैं और फिर उस सहजता से उस समाज से जुड़ नहीं पाते जिसका मुख्य कारण हमारी शिक्षा अपनी मातृ भाषा में न होना है । इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए प्रोफेसर अर्नब भट्टाचार्या जी ने कहा कि हम अंग्रेजी शिक्षा में उस भाषा और उसके शब्दों में फंसे रह जाते हैं और हम कुछ नया नहीं सोच पाते जबकि अपनी मातृ भाषा में हम बहुत कुछ नया आविष्कार संभव कर सकते हैं जैसा कि इजराइल ने कर दिखाया है । आज से सत्तर वर्ष पहले तक हिब्रू भाषा कहीं नहीं थी फिर वो कमेटी लाए और उन्होंने अपना सारा विकास अपनी मातृभाषा हिब्रू में ही किया। यहां तक कि अपने कम्प्युटर कोड भी हिब्रू में बनाए जिसको कि आज हैक करना नामुमकिन है । अतः

अपनी मातृभाषा में ही विज्ञान का विस्तार संभव है । अंत में प्रोफेसर अविनाश अग्रवाल जी ने कहा कि यूरोप के सभी देश जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि अपनी मातृ भाषा में ही कार्य कर के तरक्की कर रहे हैं जबकि वहाँ के रहने वाले बिना किसी अवरोध के एक दूसरे देशों में आते–जाते और घूमते रहते हैं, वे एक दूसरे की भाषा समझते हैं, ऐसे ही भारत में सभी क्षेत्र बेझिझक अपनी भारतीय भाषाओं के साथ उन्नति कर सकते हैं । इस तरह से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में विकास भी संभव हो सकता है ।

अंत में यह परिचर्चा, आयोजक डॉ. अर्क वर्मा, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुई । सम्पूर्ण परिचर्चा बड़ी ही रोचक, उत्साहवर्धक और ज्ञानवर्धक रही जो कि नयी शिक्षा नीति और मातृ भाषा के प्रति लगाव को प्रोत्साहित किया। सभी ने राजभाषा प्रकोष्ठ आई आई टी कानपुर एवं शिवानी केन्द्र का इस परिचर्चा के आयोजन हेतु धन्यवाद किया ।

अनंतिनी
अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

राजभाषा प्रकोष्ठ, शिवानी केंद्र, छात्र हिंदी साहित्य सभा एवं गाथा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 5 जनवरी 2023 को एक अखिल भारतीय कवि सम्मलेन का आयोजन किया गया। इस अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में देश के लब्धप्रतिष्ठ कवियों माननीय श्री नरेश सक्सेना, श्री राजेश रेड्डी, श्री यश मालवीय, श्रीमती अनिता वर्मा, श्रीमती सुशीला पुरी, श्री शोएब निजाम, श्री पंकज चतुर्वेदी, श्री अमृतांशु शर्मा, श्री शुभम श्याम एवं श्री व्योमेश शुक्ल ने अपनी श्रेष्ठ रचनाओं का वाचन किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य डॉ सिद्धार्थ पांडा, डॉ. अर्क वर्मा प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ एवं शिवानी केंद्र के प्रधान अन्वेषक डॉ. कांतेश बालानी ने सभी कवियों को पुष्पगुच्छ एवं प्रतीक चिह्न देकर उनका सम्मान एवं स्वागत किया। परिसरवासियों एवं विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साह के साथ इस कवि सम्मेलन में अपनी भागीदीरी की तथा कवि सम्मेलन का लुत्फ उठाया।

वार्ता

अंतस परिवार अपने 23 वें संस्करण के साथ भारतीय नारी साहित्यकारों के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तिगत जीवन तथा साहित्य और समाज के मध्य कलम के साथ दिए गए उनके योगदान के प्रति पाठकों को अवगत कराने का एक प्रयास कर रहा है।

इसी प्रक्रिया में आई आई टी कानपुर ने अपने प्रांगण में देश की जानी मानी हिंदी साहित्यकार श्रीमति गौरापंत जी जो कि अपना लेखन 'शिवानी' के नाम से करती थीं, उनकी पुत्री और प्रख्यात लेखिका श्रीमती मृणाल पांडे और उनके भाई श्री पुष्पेश पंत जी को अक्षर के दौरान आमंत्रित किया।

आई आई टी कानपुर के मंच से श्रीमती मृणाल पांडे और श्री पुष्पेश पंत जी नें आपसी वार्ता में शिवानी जी के जीवन से जुड़ी अनेकों घटनाओं को विस्तार से बताया साथ ही उनके व्यक्तिगत जीवन चरित्र पर भी रोचक तथ्य प्रस्तुत किए ।

प्रस्तुत है इस वार्ता के कुछ प्रमुख अंशः

मृणाल जी : हम अपनी माँ को माँ नहीं बल्कि दिद्दी कह कर पुकारते थे। यह क्रम मेरी बड़ी बहन द्वारा शुरू हुआ, हालांकि मुझे ज्ञात नहीं कि उन्होने किस वजह से माँ को दिद्दी कहना शुरू किया पर उनके बाद हम सभी नें उन्हे दिद्दी के नाम से ही पुकारा और आगे चल के वे जगत दिद्दी ही हो गईं यानि हमारे आस पास के हमे जानने वाले सभी लोग उन्हें दिद्दी के नाम से ही पुकारते और जानते थे और उनका व्यवहार भी हमारे साथ दिद्दी वाला ज्यादा और माँ जैसा कम ही था। वे हमे फटकार भी ऐसे लगाती थीं जैसे एक बड़ी बहन डांटती हो और फिर हम सब के साथ उसी तरह घुल–मिल जातीं जैसे बच्चों की ही टोली हो।

हम अपनी बड़ी मौसी यानि (पुष्पेश जी की माँ) के साथ बहुत अदब से पेश आते थे और हमेशा हम सब उनसे कुमाऊँनी में बात करते तथा उनसे कभी तू तड़ाक की भाषा का प्रयोग नहीं करते परंतु दिद्दी के साथ ऐसा नहीं था उनसे हम सभी बच्चे तू कर के बात करते और वे भी उसे उसी सहजता के साथ लेती।

हमारी मौसी बहुत ही विदुषी महिला थीं। जब बच्चों की निरंतर पढ़ाई का समय आया तो मौसी नें बच्चों को नैनीताल हमारे घर दिद्दी के पास भेज दिया। ये सभी भाई बहन बहुत जानकार और समझदार थे और उस दौर में हम लोग गर्मी की छुट्टियों में पहले इनके घर भेजे जाते थे ताकि हम कुछ गरिमामयी संस्कार सीख सकें और वहाँ हम बहुत धूम मचाते थे। हम एक आम जीवन में ही रहते थे और आम बालकों की तरह हम भी खाने की मेज पीटते थे अगर रोटी देरी से आई तो।

पुष्पेश जी : हम आज यहाँ उनका सम्बोधन शिवानी जी के रूप में कर रहे हैं परंतु अगर अपने बचपन की बात करें हम तो उनका सम्बोधन दिद्दी और उनकी बड़ी बहन यानी मेरी माँ जो बड़ी अम्मा कहलाती थी, हमारा सम्पूर्ण बचपन इन दो संबोधनों के बीच गुजरा है। वे दो माएं थी और छः अलग बच्चे थे। वैसे मृणाल के अनुसार जैसा उन्होने अभी–अभी कहा हमारा घर जो मुक्तेश्वर में था, ज्यादा अनुशासन प्रिय था। पर मुझे ऐसा नहीं लगता है। मैं तो शायद इतना पढ़ लिख ही नहीं पाता अगर मैं नैनीताल दिद्दी के पास पढ़ने नहीं जाता, दिद्दी सौम्यशक्ति का साक्षात अवतार थीं जिन्होने उस शक्ति को छोड़ा नहीं था। उन्होने मेरे आरंभिक दौर में मुझसे एक बात कही थी कि पुष्पेश तुम मुक्तेश्वर में बहुत अनुशासन हीन हो गए हो और तुम्हें थोड़ा विधिवत पढ़ना लिखना शुरू करना चाहिए। ये शांतिनिकेतन जहां वे खुद पढ़ी थीं, उनका मानना था कि उस शैली में पढ़ना शायद आगे भविष्य में हम सबके काम में आने वाला नहीं था।

मेरे विचार से केवल लेखिका के तौर पर ही शिवानी जी की बात नहीं होनी चाहिए क्योंकि उनकी प्रतिभा का जो पुंज था वह केवल बहुभाषाविद का ही नहीं था। भोजन पकाने में जो उनके हाथ में रस था, वो किसी से कम नहीं था। इसके अलावा उन्होने संगीत की साधना की थी, संगीत की वह पारखी थीं।

एक वाक्या स्मरण आता है मुझे, एक उर्मिला स्मारक वाद–विवाद प्रतियोगिता हो रही थी उसका विषय था कि 'क्या फिल्मी संस्कृति हमारे युवा वर्ग के लिए अभिशाप है'! उन्होने मेरे साथ दो दिन मेहनत की, इस दौरान मुझे कुछ लिखाया नहीं कि मैं वो पर्ची लेकर वहाँ भाषण करने जाऊँ बल्कि मुझे समझाया कि "आज गावत मन मोरा बावरा" ध्रुपद में कौन सी बंदिश कब कहाँ गायी गई है, मुगले आजम में किस बड़े गायक नें गायी है, उसका लाभ मुझे हुआ कि उस प्रतियोगिता में मुझे प्रथम पुरस्कार मिला।

दिद्दी संगीत में भी उतना ही रूचि रखती थीं जितना भाषा और साहित्य में। दिद्दी की दी हुई परम्परा आज तक चली आ रही है। हमारे घर में जो पूजा पाठ होता है उसका अर्थ ये नहीं कि हम रूढ़िवादी विचारधारा पर चलें बल्कि उन्होने सिखाया कि परम्परा

के प्रति हमारा निष्ठावान होना अति आवश्यक है।

मृणाल जी : शिवानी जी का व्यक्तित्व निर्माण में हमारे नाना जी का पूर्ण मुखर होकर सोचना अधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि उस दौर में पहाड़ों से इतनी दूर अपनी बेटियों को शांतिनिकेतन भेज कर के पढ़ाना एक आसान काम नहीं था। हमारे नानाजी को रवींद्रनाथ ठाकुर जी पर अटूट विश्वास था।

मेरी माँ यानि शिवानी जी बहुत ही चंचल स्वभाव की थीं। बचपन में मौसी धीर गंभीर थीं परंतु मामा भी बड़े नटखट और चंचल स्वभाव के थे। ऐसे में बच्चों को एक अच्छी शिक्षा दिलवाना और उस दौर में घर से दूर भेज कर पढ़ाना किसी भी माता–पिता के लिए साहसिक कार्य होता था।

एक वाक्या सुनाती हूँ : मेरी माँ, मौसी और मामा जी के साथ घर के महाराज जी को भी कोलकाता भेजा गया था, ताकि बंगाल जा के बच्चों को घर का पौष्टिक आहार मिले और वे मांस मच्छी के चक्कर में न पड़ जाएँ। मेरी माँ और मामा जी मांस मच्छी के बहुत शौकीन थे। हालांकि मौसी अपने जीवन में बेहद ही सात्विक रहीं हैं जिसकी कल्पना आज के दौर में कर पाना मुश्किल है। तो जो महाराज जी इन सभी के साथ भेजे गए थे उनको माँ और मामा जी ने इतना सताया और तरह तरह से डराया कि बंगाली का जादू बहुत खतरनाक होता है वो तुझे भेड़ा बना देंगे, वे सीधे साधे पहाड़ी महाराज, जो एक वस्त्र में भोजन पकाते आए थे इतना डर गए कि उनकी रोते हुए एक चिट्ठी पहुंची नाना जी के पास कि मुझे आप वापस बुला लीजिये, मुझसे ये बच्चे नहीं संभलते हैं और ये मेरी बनाई रसोई नहीं छूते हैं, तो छः माह के अंदर ही नाना जी नें महाराज जी को वापस बुलवा लिया था।

मेरी माता जी नें जब अपनी पहली कहानी जो कि बांग्ला में थी, लिखी तो वे बड़ी उत्साहित होकर गुरुदेव रवीद्रनाथ टैगोर जी के पास गईं और गुरुदेव ने तब उनसे कहा कि ये बहुत अच्छी बात है कि तुमने कहानी लिखी और बांग्ला में लिखी परंतु अपनी मातृभाषा में लिखना ही श्रेष्ठकर होता है क्योंकि, उसमें सहजता और गहराई आती है। इसके बाद मेरी माता जी नें हिंदी में लिखना आरंभ किया, ये दिद्दी को पहला गुरु निर्देश मिला था।

परंतु आठ वर्ष की छोटी सी बच्ची ने इतनी अच्छी बांग्ला सीखी है, इस बात से प्रभावित होकर गुरुदेव ने एक बांग्ला कविगोष्ठी में दिद्दी को अपनी एक बांग्ला रचना पढ़ने को कहा और दिद्दी के उस कविता पाठ की बहुत सराहना हुई, उस उम्र में उनका बांग्ला उच्चारण इतना त्रुटि हीन था कि प्रतीत ही नहीं हुआ कि ये दिद्दी की मातृ भाषा नहीं थी, मेरी माँ ने उस सराहना को एक बहुत बड़े तमगे की तरह सहेज के रखा।

मेरी बड़ी मौसी से मेरी माँ बहुत डरती थी क्योंकि वे बहुत अनुशासन प्रिय थीं और वे हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की शिष्या थी तथा मध्यकालीन साहित्य पर उनका असाधारण अधिकार था। बड़ी मौसी और हजारी प्रसाद द्विवेदी जी माँ को हमेशा सीधा करने की चेष्टा करते थे क्योंकि वे बड़ी नटखट बच्ची थीं परंतु दिद्दी का अपनी बड़ी बहन से असामान्य लगाव था और वे दिद्दी को बहुत प्रेरणा देती थीं जैसे कि लेखन में किस तरह लिखना है कैसा लिखना है। मेरी माँ ने एक मार्मिक संस्मरण भी लिखा है 'नदी जो मरुभूमि में खो गई" उनको लगता था की मौसी में उनसे कहीं अधिक कवयित्री प्रतिभा थी, परंतु उन्होने नहीं लिखा और अपने को पूरी तरह अपने परिवार को समर्पित कर दिया। दोनों बहनों में एक बहुत ही गहरा और अंतरंग संबंध था। मौसी के अंतिम दिनों में जब माँ उनसे मिलने गईं तो दोनों बहनें बहुत देर तक हाथ पकड़ कर खामोश बैठी रहीं और इस घटना का उल्लेख उन्होने अपनी कविता 'नदी जो मरुभूमि में खो गई' में भी किया है। शिवानी जी की रचनाओं में जितना शब्द कहते हैं उतना ही शब्दों के पीछे की खामोशी कहती है और वो इसीलिए था क्योंकि उनकी पीढ़ी की महिलाओं को लिखना तो दूर की बात है बोलने का भी अधिकार नहीं होता था या बहुत कम होता था, शिवानी जी बहुत खुले विचारों की थीं। बचपन से ही वे मिश्रित शिक्षा प्रणाली में पढ़ीं और छात्रावास में रहीं जहां लड़के लड़कियां सभी रहते थे इसलिए उनके मन में कहीं भी कोई दुविधा नहीं थी, बहुत शीघ्र सबसे घुल मिल जाती थीं। उनको अपने विवाह के बाद पहली बार उन रूढ़ियों में पड़ना पड़ा जो कि पहाड़ी समाज का दौर था। वे बताती थी कि वे अंदर तक हिल गईं उस दौर में महिलाओं का वह रूप देख के, और सोचती थीं इतना भी कोई कैसे चुप रह सकता है और सहन कर सकता है। इसलिए उनकी कहानियों में उस दौर की महिलाओं की पीड़ाओं का अधिक उल्लेख मिलता है।

कैसे महिलाएं अनेक प्रकार के प्रसूति रोगों से पीड़ित थीं, या उनके पति का किसी दूसरी महिला से संबंध था इस तरह की घटनाओं को बाहर नहीं आने दिया जाता था और कभी–कभी कोई महिला विद्रोह करे तो उसे सामाजिक बहिष्कार झेलना पड़ता था। इन घटनाओं को उन्होने कहानी के रूप में अपने साहित्य के माध्यम से उजागर किया। मैं व्यक्तिगत रूप से कई बार सोचती हूँ कि माँ के लेखों में भिक्षुणी या वेश्याओं का उल्लेख अधिक क्यूँ है और मुझे तत्कालीन समाज की स्थिति के अनुसार ये लगता है कि ये दो तरह की महिलाएं शायद उस दौर में अधिक स्वतंत्र थीं अपेक्षाकृत सभ्य समाज कुल की बहुओं से, जो कि अनेकों पाबंदियों के साथ जीती थी। और मेरी माँ ने बड़ी सूक्ष्मता से इनका अध्ययन तथा चित्रण किया है।

पुष्पेश जीः मेरा मानना है कि हम विषय सीमित कर देंगे अगर हम यह कहते है कि इन दो तरह के पात्रों के इर्द गिर्द वे लिखती थी, उन्होने और भी अनेक प्रकार के विषयों को चित्रित किया है। मुझे याद है उनकी पहली रचना जो धर्मयुग में प्रकाशित हुई थी 'आमीन' उसकी कहानी एक कोढ़िखाना और एक ईसाई कब्रिस्तान के इर्द गिर्द घूमती है जिसमें धर्मपरिवर्तन और अनेक विषयों को लिया गया है और आमीन शब्द के साथ कहानी समाप्त होती है, तो उनकी कहानियों के कई पात्र ऐसे भी है जो परित्यागता, वेश्या, या रक्षिता नहीं हैं मगर वो आजादी की तलाश में तिरस्कृत होती है, तो कई पात्र हैं जो आपको सोचने पर मजबूर करते हैं कि उस स्थिति में आपने क्या किया होता, साथ की शब्दों का जो प्रयोग है उनकी कहानियों में, वो बहुत ही सुंदर है।

मृणाल जीः शिवानी जी हालांकि ताउम्र राजनीति से दूर रहीं और व्यक्तिगत तौर पर राजनेताओं के प्रति उनकी राय कोई बहुत अच्छी नहीं रही, उनका मानना था कि राजनीति के अनेक चेहरे होते हैं, तो उन्हे उस झमेले से दूर ही रहना पसंद था लेकिन उन्होने बड़ी सूक्ष्मता से यह भी देखा कि राजनीति में जो पैसा है उससे आकर्षित होकर किस प्रकार से लड़कियों का शोषण होता है, ये अधिकतर उनके उपन्यासों और कहानियों में उल्लेखित रहा है। उनके इसी मुखर लेखन की वजह से मेरी नानी बहुत ही चिंतित रहती थीं।

शिवानी जी बहुत ही सुंदर गाती भी थीं, बहुत ही सधा गला था उनका परंतु ये मेरे पिताजी को स्वीकार्य नहीं था कि वे मंच पर गाएं हालांकि उनके लेखन से कभी मेरे पिताजी को आपत्ति नहीं रही।

पुष्पेश जी : जैसा कि पहले बात आई कि दिद्दी लिखती रहीं और उनकी बड़ी बहन परिवार को समर्पित थी तो इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि दिद्दी परिवार को समर्पित नहीं थीं। हम बच्चों को पहले खिला पिला कर स्कूल भेजती थीं फिर मौसा जी को उनके दफ्तर जाने तक सहयोग करती थीं और फिर उसके बाद स्कूल से बच्चों के आने के बाद का उनका भोजन तैयार हो जाये इसका ख्याल रखती थीं, तो उनके लिखने का समय वो दो बार भोजन बनाने की प्रक्रिया के बीच का समय था और तब कम्प्यूटर नहीं था। वे एक बार में अपना पूरा लेखन किया करती थीं।

उन्होने उपन्यास, संस्मरण, निबंध, साहित्य आदि विधाओं में लेखन किया। यह प्रतिभा उनकी कमाल की थी। एक साथ पारंपरिक और आधुनिक होने का और एक साथ सामंती और क्रांतिकारी तेवर होने का एक जो लाभ होता है, वह उनके साथ था। बिना किसी विचारधारा के बोझ के आप परिवर्तन गामी हो, आप अपने लिखे का नफा नुकसान चुकाने को तैयार हो, ये उनके अंदर एक बड़ी चीज थी

मृणाल जी : शिवानी जी और महादेवी जी के बहुत अच्छे संबंध थे। अपने समकालीन लेखकों में एक अमृतलाल नागर जी, महादेवी जी, सुमित्रानंदन पंत जी, उनकी बहन शांता जी थी जिनसे माँ के बहुत अच्छे संबंध थे, साथ ही बेगम अख्तर और गिरिजा देवी के साथ भी बहुत ही मधुर संबंध थे मेरी माँ के साथ, रिश्तों की ऐसी बहुत सारी स्मृतियाँ है जो अब के दौर में किसी के बीच हो पाना संभव नहीं है शायद।

पुष्पेश जी : मुझे लगता है एक लेखक के इर्द गिर्द रहने वाले पाठकों का जो दायरा है, वो जस जस बढ़ता है उस परिवार से जुड़े हर एक सदस्य का उल्लेख किसी न किसी रूप में लेखक की रचनाओं में आता है और ऐसा ही दिद्दी के साथ भी था, उनका सामाजिक पाठक परिवार का दायरा समय के साथ बहुत विस्तृत हो चुका था।

इस वार्ता में सम्मिलित होने तथा शिवानी जी के व्यक्तिगत जीवन से हमें अवगत कराने के लिए अंतस परिवार मृणाल जी तथा पुष्पेश पंत जी का बहुत आभारी है।

गुरूदक्षिणा

पूर्व छात्रा सुश्री अंजलि जोशी

गुरु, गुरुकुल तथा शिष्य या छात्र, इनका पारस्परिक नाता न तो शब्दों में वर्णित किया जा सकता है और न ही पंक्तियों अथवा वचनों से। यह सर्वविदित तथ्य है कि शिष्य अपने प्रारंभिक काल में कच्ची मिट्टी के लोंदे के सदृश होता है जो गुरु रूपी कुम्हार के सानिध्य में ही क्रमशः आकार लेता है और शिक्षण–प्रशिक्षण के अग्नि की तपिश में कुन्दन बनकर निखरता, दमकता है। इसी भाँति जब वही छात्र प्रगति के शीर्ष पर पहुंचकर अपने कृतित्व की आभा बिखेरता है तो शिक्षक के लिये मानों यही उसकी गुरु दक्षिणा हो जाती है क्योंकि निरपेक्ष शिक्षक छात्र में सदैव अपनी प्रतिच्छाया देखता है। उसकी अपेक्षा होती है कि शिष्य उससे बीसियों कदम आगे जाये। यह जरूरी नहीं कि एक शिष्य अपने गुरु या गुरुकुल को भौतिक अनुदान के रूप में ही गुरुदक्षिणा अर्पित करे या उसके द्वारा अर्पित गुरुदक्षिणा या प्रतिदान को किसी भौतिक मूल्य के आधार पर ही आंका जाये बल्कि महत्वपूर्ण तो यह है कि किसी शिष्य या छात्र द्वारा अपने शिक्षक और शिक्षण संस्थान के प्रति अपनी कृतज्ञता किन मनोभावों के अधीन या किन प्रत्यक्ष या परोक्ष अर्थों में अभिव्यक्त और ज्ञापित की गयी है। इसकी वास्तविक सुन्दरता भी यही है। इन सबसे परे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि गुरु, गुरुकुल तथा शिष्य के संबंधों के बीच एक मूक मर्यादा है, मधुरता है जिससे यह संबंध सदा ओत–प्रोत रहता है, सच कहा जाए तो सदैव आलोकित और आह्लादित होता रहता है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि संस्थान एवं उसके पूर्व छात्रों के मध्य एक पारस्परिक, स्थायी एवं अव्यक्त अनुराग है। यहाँ के छात्रों ने सारी दुनिया में अपनी असीमित तकनीकी तथा बौद्धिक क्षमता के अनवरत कीर्तिमान स्थापित किये हैं और अपनी उपलब्धियों से देश–विदेश की मेधा को चमत्कृत करते हुए नित्यप्रति नये प्रतिमान गढ़े हैं। अतः संस्थान का अपने इन पूर्वछात्रों के प्रति गर्वित होना स्वाभाविक है क्योंकि इन्हीं छात्रों के माध्यम से विश्व के फलक पर संस्थान की शिक्षण–व्यवस्था तथा इसके संकायों की उच्चस्तरीय पहचान बनती है।

संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रकाशित छमाही साहित्यिक पत्रिका अंतस के स्थायी स्तंभ गुरुदक्षिणा के क्रम में इस अंक के तहत संस्थान की एक ऐसी ही होनहार पूर्व छात्रा सुश्री अंजलि जोशी की जीवनगाथा, उनकी उपलब्धियों तथा संस्थान के प्रति उनके अनुराग एवं योगदान आदि के बारे में पाठकों को परिचित कराने का प्रयास किया जा रहा है।

टीम अंतसः मैम अपने परिवार एवं प्रारंभिक जीवन के बारे में कुछ बताइए?

सुश्री जोशीः मैं एक मध्यवर्गीय भारतीय परिवार में जन्मी अपने माता पिता की दूसरी संतान हूँ। मेरे पिताजी ने ओएनजीसी में एक इंजीनियर के रूप में अपनी सेवाएं दीं तथा मेरी माताजी कॉलेज ग्रेजुएट होने के साथ गृहिणी रहीं। उस पीढ़ी के अधिकांश परिवारों की तरह ही मेरे परिवार में भी शिक्षा को बहुत अधिक महत्वपूर्ण माना जाता था। हालांकि उस युग के कई अन्य परिवारों से भिन्न मेरे परिवार में लड़के तथा लड़कियों में भेद नहीं किया तथा यह सुनिश्चित किया गया कि मेरे भाई एवं मुझको सर्वश्रेष्ठ शिक्षा एवं अवसर उपलब्ध कराए जाएं। चूँकि मैं अपने स्कूल की टॉपर छात्रा थी तथा विज्ञान एवं गणित के विषयों में अच्छी थी इसलिए मेरे माता–पिता ने मुझे जेईई की प्रवेश परीक्षा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जब मैंने जेईई की प्रवेश परीक्षा पास की तो मेरे माता–पिता ने आईआईटी कानपुर में मेरे प्रवेश लेने संबंधी निर्णय का समर्थन किया। चूंकि आईआईटी कानपुर देश का सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग कॉलेज माना जाता था।

टीम अंतसः एक छात्र के रूप में आईआईटी कानपुर में आपका अनुभव कैसा रहा? विद्यार्थी जीवन काल के दौरान संस्थान में आपने किन चुनौतियां का सामना किया?

सुश्री जोशीः जिस समय मैंने आईआईटी कानपुर में प्रवेश लिया उस समय यह संस्थान अपनी शिक्षण/प्रशिक्षण पद्धति के लिए अद्वितीय संस्थान के रूप में पहचाना जाता था जो निश्चित रूप से अभी भी कायम है। इस संस्थान को उन दिनों सभी पांचों भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में सर्वश्रेष्ठ संस्थान माना जाता था। इस संस्थान को अमेरिका के 9 विश्वविद्यालयों के सहयोग से स्थापित किया गया था जिसके फलस्वरूप इसे एक अलग संस्कृति एवं शिक्षण पद्धति के रूप में पहचान प्राप्त हुई। मैंने अपने बड़े भाई से आईआईटी कानपुर में जीवन से जुड़ी कई रोचक कहानियाँ सुनी थीं जिन्होंने इस संस्थान में तीन साल पहले प्रवेश लिया था। अपने भाई की बातों को सुनकर मुझे संस्थान इतना रोचक तथा रोमांचक लगा कि मैंने भी यहां पर दाखिला लेने का ठोस निर्णय लिया। हालांकि मैं आईआईटी बॉम्बे में दाखिला ले सकती थी जो मेरे घर के करीब भी था लेकिन मैंने आईआईटी कानपुर को चुना।

आईआईटी कानपुर से प्राप्त अनुभव मेरी जिंदगी में कई बदलाव लेकर आया। जैसे एक छोटे से गर्ल्स स्कूल से निकल कर एक ऐसे कॉलेज में पहुंचना जहाँ बहुत कम लड़कियाँ थीं, अपनी कक्षा में सर्वश्रेष्ठ होने से लेकर ऐसे विद्यार्थियों के साथ रहना जो सभी सर्वश्रेष्ठ हुआ करते थे, घर में रहने से लेकर

छात्रावास में रहने तक जहाँ पर रहकर मैं माता–पिता के साथ व्यवहारिक रूप से कोई संवाद स्थापित नहीं कर सकती थी। शुरू–शुरू में यह थोड़ा डरावना जरूर था लेकिन बाद में जैसे ही मैंने आईआईटी में अपने आपको ढाल लिया, वैसे ही मुझे संस्थान का परिवेश अत्यन्त सुखद लगने लगा, तत्पश्चात मैंने यहाँ के परिवेश का खूब लुत्फ उठाया। निश्चित रूप से आईआईटी कानपुर के परिवेश ने मुझे स्वतंत्र, साधन–संपन्न तथा आत्मनिर्भर बनाया एवं मुझे वह शिक्षा दी जो मेरी पूरी जिंदगी एवं कैरियर में काफी काम आयी।

आईआईटी कानपुर में इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम कठिन था, शिक्षण की गति तेज थी तथा रिलेटिव ग्रेडिंग सिस्टम काफी चुनौतीपूर्ण था। हालाँकि अभी तक मैं अपने जितने भी शिक्षकों से मिली हूं उन सबमें मुझे संस्थान के शिक्षक कहीं अधिक उत्साही, भावुक एवं प्रेरक नजर आये जिन्होंने हमें उच्च स्तरीय मानकों पर रखा तथा सबसे पहले सिद्धांत से सोचना सिखाया। मेरे समस्त सहपाठी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे जो रचनात्मकता एवं मंनोरंजन के प्रेमी थे। समस्त सहपाठी विविध पृष्ठभूमियों से आए थे जो कक्षा के बाहर खूब मौज–मस्ती किया करते थे।

आईआईटी कानपुर में मुझे कई पाठ्येतर गतिविधियों/खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं टेलीविजन केंद्र का हिस्सा रही जहां हमने कैंपसवासियों के लिए कार्यक्रम बनाए। मैंने कई नाटक प्रस्तुतियों में भाग लिया, बैडमिंटन खेला तथा फिल्म एवं संगीत जैसे क्लब का हिस्सा रही। उन दिनों सुप्रसिद्ध वक्ता एवं संगीतकार परिसर का दौरा करते थे तथा उनके साथ मेरा अग्रिम पंक्ति में रहना एक अविस्मरणीय अनुभव रहा।

जब मैंने कैंपस में प्रवेश लिया तो गर्ल्स हॉस्टल (जीएच) बिल्कुल नया–नया बना था क्योंकि उस दौरान छात्राओं की संख्या बहुत कम हुआ करती थी इसलिए छात्राएं एक दूसरे को अच्छी तरह से जानती/पहचानती थीं जिन्हें समाज एवं समुदाय की अच्छी समझ भी होती थी। आईआईटी कानपुर में प्रवेश लेने वाली लड़कियां थोड़ी अलग स्वभाव की थीं क्योंकि प्रत्येक लड़की ने परिवार की कई आपत्तियों को नजर अंदाज करते हुए आईआईटी कानपुर में अध्ययन करने का निर्णय लिया था। उल्लेखनीय है कि इनमें से कई छात्राएं प्रतिभाशाली, साहसी एवं महत्वाकांक्षी थी। इनमें से कई छात्राएं अभी भी हमारे संपर्क में हैं जो आज भी आईआईटी कानपुर में बिताए दिनों का बड़े ही शौक से स्मरण करती हैं।

निश्चित रूप से कैंपस में उन दिनों चुनौतियाँ हुआ करती थीं। हमारा छात्रावास शैक्षणिक क्षेत्र से सबसे दूर स्थित था इसलिए सभी छात्र/छात्राओं के लिए साइकिल रखना आवश्यक था क्योंकि हमें प्रतिदिन छात्रावासों से व्याख्यान और प्रयोगशालाओं में भाग लेने तथा पुस्तकालय जाने के लिए कई चक्कर लगाने पड़ते थे। हमारे

सहपाठी छात्र शुरू में हमारे साथ कार्य करने में थोड़े असहज महसूस कर रहे थे इसलिए प्रोजेक्ट तथा स्टडी पार्टनर ढूंढना मुश्किल था। हालाँकि जैसे–जैसे हम दोस्त बने तथा हमारे सहपाठी हमसे परिचित होते गए तो ये सभी चीजें बहुत आसान हो गई।

टीम अंतसः मास्टर डिग्री के बाद किस चीज ने आपको उद्योग में अपना करियर बनाने के लिए प्रेरित किया?

सुश्री जोशीः बहुत छोटी उम्र से मुझे हमेशा चीजों को बनाने में आनंद आता था। मेरे माता–पिता ने मुझे सिलाई–बुनाई से लेकर साधारण मरम्मत तक के कार्यों को करने में सक्षम बनाया था तथा बुनियादी कौशल सीखने के लिए प्रोत्साहित किया था। उन दिनों मैंने अपने स्वयं के कपड़े सिले, साथ ही साथ कई शिल्प परियोजनाएं बनाईं। उल्लेखनीय है कि सुश्री जोशी ने ऐसे कई उत्पाद बनाए जिनका लोग उपयोग कर सकें।

उन दिनों आईआईटी कानपुर द्वारा प्रदत्त शिक्षा की विशिष्ट विशेषताओं में से एक प्रायोगिक कार्यों को करने पर जोर देना था। अधिकांश कक्षाओं के लिए प्रयोगशाला संबंधी कार्य अनिवार्य हिस्सा थे । वास्तविक जीवन में कार्य कर रहे अभियांत्रिकी सिद्धांतों को देखना बहुत ही रोमांचक लगता था। भौतिकी तथा रसायन विज्ञान प्रयोगशालाओं के अलावा हम लोग अभियांत्रिकी विज्ञान संबंधी कक्षाओं में भी भाग लेते थे जहाँ हमें इंजीनियरिंग ड्राइंग से लेकर लेथ एवं मिलिंग मशीन पर कार्य करने तथा माइक्रोप्रोसेसर पर प्रोग्रामिंग करने जैसे कार्य सिखाये जाते थे।

डिग्री हासिल करने के बाद उद्योग से जुड़े क्षेत्र में जाना मेरे लिए एक स्वाभाविक कदम था क्योंकि इंजीनियरिंग संबंधी कार्यों में डिजाइनिंग शामिल थी जिनसे हम लोग उपयोगी चीजें बनाते थे। यह सब ऐसे क्रिया–कलाप थे जिनका मैंने खूब लुत्फ उठाया। सेमीकंडक्टर सोलर सेल पर कार्य करने के लिए मैंने SUNY विश्वविद्यालय में मास्टर्स प्रोग्राम ज्वाइन किया जिसका भारत में उन दिनों ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में सुनहरा भविष्य था। मैं अपनी सोच से थोड़ा आगे थी जिसके फलस्वरूप मुझे अपने कैरियर के शुरुआती वर्षों में सेमीकंडक्टर उद्योग के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा मिली।

जैसे–जैसे मेरा कैरियर आगे बढ़ा वैसे–वैसे मैं बड़ी परियोजनाओं पर

कार्य करना चाहती थी। मैंने टीम के साथ कार्य करने के महत्व को पहचाना जिसके फलस्वरूप मेरा कदम इंजीनियरिंग प्रबंधन तथा नेतृत्व की ओर अग्रसर हुआ।

मेरे कैरियर के दौरान प्रौद्योगिकी अविश्वसनीय गति से आगे बढ़ी है। जब मैंने स्नातक किया तो मैं उस काम की कल्पना भी नहीं कर सकता थी जो मैं आज कर रही हूं। आईआईटी कानपुर में अध्ययन के दौरान प्राप्त सबसे महत्वपूर्ण निपुणताओं/कौशलताओं में से एक ने मुझे लगातार नए कौशल तथा प्रौद्योगिकी को सीखने में रुचि तथा क्षमता प्रदान की। इसने मुझे सेमीकंडक्टर्स से लेकर उपभोक्ता इंटरनेट सेवाओं एवं इंजीनियरिंग से लेकर उत्पाद प्रबंधन तथा व्यवसाय तक विभिन्न कार्यात्मक तथा कई तकनीकी क्षेत्रों में काम करने के लिए सक्षम बनाया।

टीम अंतसः आपने आईआईटी कानपुर में वीमेन इन साइंस एंड इंजीनियरिंग (WISE) फैलोशिप की स्थापना की है। आपको क्या लगता है कि यह फैलोशिप संस्थान में महिला संकाय संदस्यों को अनुसंधान कार्यों को निष्पादित करने के लिए प्रोत्साहित करेगी?

सुश्री जोशीः महिलाओं के लिए प्रौद्योगिकी एवं अकादमिक कैरियर में उनकी भागीदारी तथा संबंधित क्षेत्रों में अवसरों की संख्या पिछले कई दशकों से काफी बढ़ी है, लेकिन यह संख्या अभी भी उस स्तर पर नहीं पहुंची जहाँ पर इसको पहुंचना चाहिए था। संस्थानों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अतिरिक्त प्रोत्साहन सृजित करें, अनुकूल वातावरण का निर्माण करें, साथ ही साथ महिलाओं को उनकी रुचि के अनुसंधान क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के अवसर प्रदान करें।

मुझे उम्मीद है कि वीमेन इन साइंस एंड इंजीनियरिंग फैलोशिप अधिक से अधिक महिलाओं को आईआईटी कानपुर में अनुसंधान कार्यों से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगी। उल्लेखित अर्ली कैरियर फेलोशिप उन्हें विज्ञान से संबंधित अनुसंधान कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाएगी जिससे उन्हें अपने कैरियर को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। अधिकांश महिला संकाय सदस्य शैक्षणिक समुदाय के लिए विविध दृष्टिकोण उपलब्ध कराएगी तथा वे उन महिला छात्रों के लिए रोल मॉडल के रूप में कार्य करेंगी जो शैक्षणिक क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहती हैं।

टीम अंतसः अपने मातृ संस्थान के प्रति योगदान के पीछे क्या प्रेरणा रही?

सुश्री जोशीः आईआईटी कानपुर से प्राप्त शिक्षा ने मुझे प्रौद्योगिकी में अपना कैरियर बनाने के लिए सक्षम बनाया। मैंने आईआईटी कानपुर में जो पांच साल बिताए उन्होंने न केवल मुझे एक अच्छा इंजीनियर बनना सिखाया बल्कि मुझमें जिज्ञासा की भावना, नए–नए क्षेत्रों में सीखने की रुचि तथा नई चुनौतियों एवं अवसरों के लिए खुला रहना भी सिखाया है। संस्थान के शिक्षकों ने हमें महत्वाकांक्षी बनने, अनवरतता बनाए रखने, चुनौतीपूर्ण समस्याओं का समाधान उपलब्ध कराने के साथ साथ निष्पादित कार्यों में उत्कृष्टता हासिल करने की आकांक्षा रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

निश्चित रूप से आईआईटी कानपुर से प्राप्त शिक्षा के बगैर मैं अपने कैरियर संबंधी लक्ष्यों को हासिल नहीं कर पाती। मुझे संस्थान से जो कुछ भी हासिल हुआ है मैं उसके बदले संस्थान की आभारी हूँ और मुझे लगता है कि अब संस्थान को वापस देने की बारी हमारी है।

टीम अंतसः आईआईटी कानपुर की ब्राण्ड छवि को आकार देने में पूर्व छात्रों की क्या भूमिका रही है?

सुश्री जोशीः आईआईटी कानपुर के पास बहुत से उच्च सुसंस्कृत तथा लब्धप्रतिष्ठित पूर्व छात्र हैं जिन्होंने उद्योग तथा शिक्षा जगत के अन्दर कई पदों पर नेतृत्व करने का कार्य किया है। ये सभी पूर्वछात्र आईआईटी कानपुर से प्राप्त उत्कृष्ट शिक्षा तथा प्रशिक्षण के प्रतिमान सदृश्य हैं। इनमें से प्रत्येक पूर्व छात्र ने अपने–अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता के मानकों को गढ़ते हुए अपनी टीम एवं छात्रों को विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आगे बढ़ने तथा समाज के लिए योगदान देने हेतु प्रोत्साहित किया है, जिसके फलस्वरूप आज यह पूर्व छात्र आईआईटी कानपुर के लिए ब्राण्ड एंबेसडर के रूप में पहचाने जाते हैं।

सुश्री जोशी एक अत्यन्त कुशल प्रौद्योगिकी प्रशासक हैं जिन्होंने कई हाई–प्रोफाइल कंपनियों में नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाई हैं। आपने कई प्रभावशाली प्रौद्योगिकी उत्पादों पर कार्य किया है जिसमें गुगल पर खोज एवं मानचित्र, बेल लैब्स में हाई स्पीड डेटा संचार नेटवर्क तथा कोवाड कम्युनिकेशसन में ब्रॉडबैंड एक्सेस शामिल हैं।

2019 तक सुश्री जोशी गूगल में उत्पाद प्रबंधन की उपाध्यक्ष रहीं जहां उन्होंने खोज, मानचित्र, अनुवाद, समाचार, वित्त तथा वैश्विक बुनियादी ढांचे के लिए उत्पाद दलों का नेतृत्व किया। गूगल से पहले सुश्री जोशी ने उपभोक्ताओं तथा व्यवसायों को वॉइस तथा डेटा संचार उत्पाद एवं सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनी कोवाड कम्यूनिकेशन इनकारपोरेशन के लिए इंजीनियरिंग विंग में कार्यकारी उपाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं उपलब्ध कराई तथा इससे भी पहले इन्होंने एटी एंड टी बेल लैब्स में कई पदों पर अपनी सेवाएं दीं जहां पर संचार तथा हाई–स्पीड डेटा जैसी कई परियोजनाओं पर सफलतापूर्वक कार्य किया है।

वर्तमान में सुश्री जोशी लैटिस सेमीकंडक्टर के लिए गठित समिति में अपनी सेवाएं दे रही हैं जो लो पावर प्रोग्रामेबल गेट एरे प्रोडक्ट्स की प्रदाता, एलर्टिक्स कंपनी जो ऑटोमेटेड एनालिटिक्स सॉल्यूशंस की प्रदाता तथा लोकोनव नामक एक भारतीय कंपनी जो फ्लीट मैनेजमेंट स्पेस के क्षेत्र में अपनी सेवाएं उपलब्ध करा रही है के साथ जुड़ी हुई

हैं। इससे पूर्व सुश्री जोशी मैक्लाची इनकारपोरेशन, मोबाइल आयरन एवं इटेरिस के संचालक मण्डल को भी अपनी सेवाएं उपलब्ध करा चुकी हैं। सुश्री जोशी फ्रांस स्थित इनसीड (INSEAD) जो एक बहु–परिसर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार स्कूल एवं अनुसंधान संस्थान है, में एग्जीक्यूटिव इन रेजीडेंस के रूप में भी अपनी सेवाएं दे चुकी हैं जहां पर आपने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में एमएस एण्ड ई विभाग के छात्रों तथा शिक्षकों के साथ मिलकर कई अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य किया है। उल्लेखनीय है कि आपने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के अन्दर एमएस एण्ड ई विभाग का विस्तार प्रबंधन विज्ञान एवं अभियांत्रिकी तक किया।

आपने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से प्रबंधन विज्ञान एवं अभियांत्रिकी में मास्टर उपाधि के साथ साथ स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क से संगणक अभियांत्रिकी में भी मास्टर उपाधि प्राप्त की है। उल्लेखनीय है कि सुश्री जोशी ने आईआईटी कानपुर से विद्युत अभियांत्रिकी में अपनी स्नातक की उपाधि ग्रहण की है। आपने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से मेडिसिन में एक्जिक्यूटिव एजुकेशन प्रोग्राम भी पूरा किया।

वर्ष 2010 में सुश्री जोशी को ऐसे 50 शीर्ष पूर्व छात्रों में चुना गया जिन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से स्नातक किया है। जून 2013 में 'द इकोनॉमिक टाइम्स' द्वारा उनका चयन संयुक्त राज्य अमेरिका की सात सबसे प्रमुख भारतीय मूल की आईटी उद्योग महिलाओं में से एक के रूप में हुआ। 2017 में उन्हें 'बिजनेस इनसाइडर' द्वारा सबसे शक्तिशाली महिला अभियंताओं में से एक के रूप में नामित किया गया तथा आईआईटी कानपुर के प्रतिष्ठित पूर्व छात्र पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया ।

सुश्री जोशी ने कई स्टार्ट–अप्स के लिए सलाहकार की भूमिकाओं का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। आपने सार्वजनिक स्वास्थ्य पर यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस के लिए गठित समिति को अपना बहुमूल्य योगदान उपलब्ध कराया साथ ही साथ स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्रबंधन विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के लिए विजिटिंग कमेटी को भी अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। सुश्री जोशी ने एफसीसी नेटवर्क रिलायबिलिटी एण्ड इंटरऑपरेबिलिटी काउंसिल को एक आमंत्रित सदस्य के रूप में अपना मार्गदर्शन उपलब्ध कराया । इसके अतिरिक्त आपने यूनाइटेड स्टेट्स फेडरल कम्युनिकेशंस कमीशन में तकनीकी स्टाफ के लिए सलाहकार के रूप में भी कार्य किया है।

साहित्य यात्रा

''अम्मा''

कहते हैं –''जब जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ जाता है तो ख्वाहिशों को मारना पड़ता है।'' आज जब सारे काम निपटाकर विश्राम करने की सोची, सहसा स्मृतियों की टोकरी पर दृष्टि पड़ गई। सोचा, चलो आज इसमें पड़े बेतरतीब सामानों को ठीक कर लेती हूं। टोकरी धैर्य, संयम, संतोष, परिश्रम, साहस, परोपकार, व्रत और नियम के मजबूत धागे से बुनी थी। मुझे लगा अब यह बेजान कमजोर हो गई होगी, इसे फिर से नया बना देते हैं, लेकिन स्पर्श करते ही वह अपने पुराने दिनों की तरह मूर्तिमान हो उठी। मेरी यादों का सिलसिला उसी टोकरी से शुरू होता है। अति भीतावस्था में वह मुझे अपने अंतर में छुपा लेती थी। अति छोटी दिखने वाली उस टोकरी में सभी के लिए बराबर की जगह हुआ करती थी। कभी कभी गांव से या अन्य कहीं से कुछ मुरझाए फूल और कांटे (अनावश्यक लोग) यह सोचकर आते कि शायद ही कोई स्थान दे, पर वह डलिया बाहें पसार स्वीकार कर लेती। उनकी देखभाल में कभी कभी अपने ताजे फल फूल मुरझा जाते, पर अतिथि देवो भवः के मूलमंत्र का जीवन भर पालन करती रही। अपने साथ रहने वाले फल फूलों की उसे चिंता होती थी किन्तु नैतिक मूल्यों की उपासक वह टोकरी यह कहकर समझा देती कि धैर्य का फल मीठा होता है। सबकी ज्यादतियों को वह अपना प्राप्य समझती थी। उस डलिया के चार शाश्वत फूल थे जिनकी रक्षा वह प्राण देकर करना जानती थी। सबसे बड़े पुष्प से कहती – बहुत तेज और कोमलता है इसमें। उत्तम वैद्य का गुण है, पर दुःख हरता बनेगी। दूसरे पुष्प का आकार प्रकार थोड़ा बड़ा था, कहती ये तो इस टोकरी की शान है। तीसरा फूल बड़ा कोमल था, उसकी त्रुटियां भी उन्हें भली लगती थीं, उसे डाक्टर बनाना चाहती थीं वह। चौथा पुष्प अपने रूप, रंग, गुण सौंदर्य से परिपूर्ण बड़ा ही छविमान लगता था। उस टोकरी में फूल तो बहुत थे पर इन चारों की वो किसी से तुलना नहीं करना चाहती थीं।

मैंने बहुत पहले ही कहा था कि जब जिम्मेदारियों का बोझ ज्यादा होता है तो ख्वाहिशों को मारना पड़ता है। यही उस डलिया ने जीवन पर्यन्त किया। वो टोकरी आज हमारे पास नहीं है लेकिन उसके अहसास हमेशा प्रतिध्वनित होते रहते हैं। हृदय में प्रतिस्थापित उस टोकरी को शत शत नमन !

–अमिता राय
प्र० स्नातक शिक्षक (हिंदी),
के वि आईआईटी कानपुर

''मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं''

मुझे घर के कामों में फंसाकर घरों में कैद मत करो,
मैं भी अपने मन की करना चाहती हूं,
क्या हुआ, क्या हुआ जो मैं लड़की हूं,
मैं भी सपनो के पंख लगा ऊंची उड़ान उड़ना चाहती हूं,
मत रोको मुझे कोई कि मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं

मत बांधो मुझे कच्ची उमर में शादी के बंधन से,
मैं भी अपने भविष्य को संवारना चाहती हूं,
क्या हुआ, क्या हुआ जो मैं लड़की हूं,
मैं भी परिवार का नाम रोशन करना चाहती हूं,
मत रोको मुझे कोई कि मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं

अनपढ़ रह कर अपनी जिंदगी में,
बच्चों के लिए शर्मिंदगी का कारण नहीं बनना चाहती हूं,
क्या हुआ, क्या हुआ जो मैं लड़की हूं,
मैं खुद ही अपनी जिंदगी की लड़ाई लड़ना चाहती हूं,
मत रोको मुझे कोई कि मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं

तुम लड़का नहीं जो सब कुछ कर सकती हो,
ये सोच पूरे समाज की बदलना चाहती हूं,
क्या हुआ, क्या हुआ जो मैं लड़की हूं,
मेरे साथ होने वाले सभी भेदभाव को खत्म करना चाहती हूं,
मत रोको मुझे कोई कि मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं

बरसों से चली आ रही दकियानुसी,
मर्यादा की दहलीज को रोड़ा बना कर मत रोको मुझे,
मैं खुद अपनी मर्यादा को गढ़ना चाहती हूं,
क्या हुआ, क्या हुआ जो मैं लड़की हूं,
मैं भी नजरे उठा कर, अपने नजरिए से दुनिया को देखना चाहती हूं,
मत रोको मुझे कोई कि मैं अभी और पढ़ना चाहती हूं

भरत सोमैया
संगणक केंद्र

आज की नारी

पर्दे में नहीं पर्दे पर हूँ
विख्यात चर्चित सर्वविदित हूँ
अग्र सरत हूँ सदैव
हर क्षेत्र में विजित हूँ
पूर्ण योग्य हूँ सशक्त हूँ
आज की नारी हूँ
हाँ मैं आज की नारी हूँ
मैं सरल भी हूँ कठोर भी हूँ
मैं प्रेम रूप अनेक हूँ
आज की नारी हूँ
हाँ मैं आज की नारी हूँ

शाहाना
पी के केलकर लाइब्रेरी

अभिलाषा

जीवन पथ की पगडंडी पर राही बन मैं घूम रहा हूँ।
लक्ष्य निरंतर आत्मसात कर अभिलाषी बन झूम रहा हूँ।।
कभी व्यथित मन कभी प्रफुल्लित मन मंदिर में डोल रहा हूँ।
पथ के कंटक और सुमनों को एक रूप में टोल रहा हूँ।।
यात्री मन की अभिलाषा है तिल तिल जीवन दान करूँ।
बनू अकिंचन दीप शक्ति का संकल्पों में प्राण भरू।।
परमारथ का वैरागी बन सुख दुख नौका पार करूँ।
सेवा रूपी कर्मयज्ञ में समिधा बनकर स्वयं जलूँ।।
बाधाओं के अँधियारे में उजियारे को खोज रहा हूँ।
राष्ट्रदेव की उपासना में निज जीवन को सौंप रहा हूँ..
अभिलाषी बन झूम रहा हूँ.....

अश्विनी कुमार
पीएचडी
पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

एनएफटी पुस्तकें पढ़ने का क्रिप्टोभविष्य

हम तेजी से डिस्ट्रीब्यूटेड कंप्यूटिंग (Distributed Computing) के युग में प्रवेश कर रहे हैं, जहां हर उद्योग में ब्लॉकचेन (Blockchain) और क्रिप्टोकरेंसी (Cryptocurrency) का नाम लिया जा रहा है। ब्लॉकचेन तकनीक आधारित एनएफटी (NFT) इस दौर में काफी प्रचलन में है और इसकी लोकप्रियता पिछले एक साल में और भी बढ़ी है। विभिन्न रचनात्मक उद्योग एनएफटी का प्रयोग करने के लिए अग्रसर हैं। इसी श्रंखला में कई बड़े प्रकाशक भी अब ब्लॉकचेन तकनीक का लाभ उठाकर एनएफटी बुक्स के रूप में ई–बुक्स के क्रय विक्रय के लिए तैयार हैं। पियरसन (Pearson) जैसे बड़े पुस्तक प्रकाशक अपनी पाठ्यपुस्तकों (textbook) के पुनर्विक्रय से लाभ अर्जित करने के लिए डिजिटल पुस्तकों को एनएफटी के रूप में बेचने की योजना बना रहे हैं।

एनएफटी (NFT) यानि नॉन फंजिबल टोकन क्या है?

एनएफटी एक यूनिक टोकन है जो ब्लॉकचेन पर मौजूद है और इसमें अमूल्य जानकारी है। अधिकांश एनएफटी इथीरियम ब्लॉकचेन (Ethereum Blockchain) के साथ एकीकृत हैं। इन टोकन को किसी मध्यस्थ की भागीदारी की आवश्यकता के बिना सीधे मालिक और खरीदार के बीच खरीदा और बेचा जा सकता है। एनएफटी में "नॉन फंजिबल" का अर्थ है कि एक ऐसी यूनिक चीज जिसे किसी अन्य चीज से प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है। ये उसी प्रकार की प्रोग्रामिंग का उपयोग करके बनाई गई डिजिटल संपत्ति है जैसे कि क्रिप्टोकरेंसी। ब्लॉकचेन पर एनएफटी के रूप में डिजिटल फाइलों को जोड़ने का कार्य मिंटिंग (Minting) के रूप में जाना जाता है। इस तरह एनएफटी डिजिटल डेटा के किसी भी अनूठे टुकड़े के स्वामित्व को सौंपने या दावा करने की क्षमता देता है, जिसे इथीरियम ब्लॉकचेन की सहायता से ट्रैक किया जा सकता है। इथीरियम ब्लॉकचेन एक सार्वजनिक बहीखाता (Public Ledger) की तरह है। एनएफटी कई प्रकार के यूनिक डिजिटल असेट्स के लिए जैसे कि जीआईएफ (GIFs), वीडियो, कानूनी दस्तावेज, हस्ताक्षर, पुस्तकें आदि के लिए बनाई जाती हैं।

एनएफटी पुस्तक क्या है?

एक एनएफटी पुस्तक को एक डिजिटल संपत्ति माना जा सकता है जो एक गैर बदले जाने योग्य टोकन के रूप में एक ब्लॉकचेन से जुड़ा हुआ है और इसे सीधे लेखक और पाठक के बीच बेचा और खरीदा जा सकता है। एनएफटी पुस्तकें लेखकों को तुरंत अपनी पुस्तक प्रकाशित करने और पैसा कमाने की अनुमति देती हैं, जिसमें प्रकाशकों की आवश्यकता नहीं होती। एक लेखक किसी पुस्तक के कवर का एनएफटी बना सकता है और फिर उसे बेच सकता है, और पुस्तक के कंटेंट वाली फाइल को एनएफटी की खरीद पर, पढ़ने के लिए अनलॉक किया जा सकता है। ओपन सी (Open Sea) दुनिया का पहला और सबसे बड़ा एनएफटी और क्रिप्टो कलेक्टिबल्स (Crypto collectibles) का मार्केटप्लेस है। पब्लिका (Publica), एनएफटीबुक्स (NFTBooks), क्रिएटोकिया (Creatokia) और बुकवोल्ट्स (BookVolts) एनएफटी पुस्तकें बनाने, प्रकाशित करने और बेचने के लिए प्लेटफॉर्म हैं। पाठक स्मार्ट उपकरणों का उपयोग करके एनएफटी पुस्तकों को कहीं भी, कभी भी आसानी से खोज और खरीद सकते हैं। लेखकों को सीधे भुगतान करके पाठक सीधे लेखकों से जुड़ जाते हैं । एनएफटी पुस्तकें डिजिटल संपत्ति की तरह हैं, इसलिए जब उनका मूल्य बढ़ता है तो एनएफटी धारक लाभ के लिए उन्हें फिर से बेच सकते हैं। यह लेखक, पाठक और निवेशक तीनों के लिए मुनाफेवाली है। जब तक लोग किताब पढ़ रहे हैं, लेखक पैसे कमा रहे हैं। लेखक को अपनी पुस्तक के लिए रॉयल्टी प्राप्त करने के लिए हफ्तों या महीनों तक इंतजार नहीं करना पड़ता है। बुक (Renters) और लेसर्स (Lessors) भी इन पुस्तकों को पाठकों को किराए पर देकर एनएफटी पुस्तकों से लाभ कमा सकते हैं। एनएफटी पुस्तकें विशिष्ट पहचान के साथ सीमित संख्या में जारी की जाती हैं इसलिए गुणवत्ता और कॉपीराइट के संबंध में 100% गारंटीड ई–बुक्स की तुलना में एनएफटी पुस्तक को पाइरेट करना बहुत कठिन है। समर्थकों के अनुसार एनएफटी पुस्तकों की लागत कम होती है क्योंकि पाठक सीधे किसी मध्य निकाय की भागीदारी के बिना लेखक से पुस्तकें खरीदते हैं जो कि ब्लॉकचेन वादों पर वितरित बहीखाता है। एनएफटी हमें सेकंड हैंड बुक मार्केट का मुद्रीकरण करने की अनुमति देता है। अभी, पारंपरिक ई–पुस्तक या प्रिंट पुस्तक बेचने वाला एक लेखक या प्रकाशक शुरुआती बिक्री के माध्यम से कमाता है, लेकिन उसके बाद सेकंड हैंड पुस्तक का कोई भविष्य नहीं होता है। पियर्सन जैसे प्रकाशक भी एनएफटी पुस्तकों के रूप में गुणवत्ता वाली पुस्तकों को प्रिंट की तुलना में अधिक किफायती और अधिक सुलभ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। साथ ही सेकंड हैंड पुस्तकों की बिक्री को ट्रैक करने और उनसे मुनाफा कमाने की ओर अग्रसर हैं।

एनएफटी के कई फायदों के बावजूद भी एनएफटी पुस्तकों को लेकर कई संदेह हैं जिनसे इंकार भी नहीं किया जा सकता। पहला इसकी प्रिंट या सामान्य ई–पुस्तक की तुलना में इसकी ज्यादा कीमत को लेकर है। हालांकि NFTBOOKS जैसी कंपनियां दावा करती हैं कि वे एनएफटी रीडिंग को अधिक सुलभ और सस्ता बना रही हैं। दूसरा इसका पर्यावरणीय कारण है। यह देखा गया है कि एक एनएफटी बनाने की पूरी प्रक्रिया, जो इसे बेहद सुरक्षित बनाती है, इसकी जटिलता के कारण जबरदस्त मात्रा में कम्प्यूटेशनल शक्ति की आवश्यकता होती है। इससे एनएफटी ई पुस्तक बनाने का खर्च भी बढ़ जाता है। तीसरा कारण पाठकों के रुझान से संबंधित है। ज्यादातर पाठक जो अभी भी प्रिंट पुस्तकों और ई–बुक्स को ही पढ़ना पसंद करते हैं। एनएफटी पुस्तकों का उद्योग अभी अपने प्रारंभिक चरण में है और इसके व्यवहार्य उपयोगिता के बारे में कुछ भी कहना अभी जल्दबाजी होगी। देश में एनएफटी को नियंत्रित करने के लिए सरकार के साथ साथ अन्य नियामक प्राधिकरणों के मार्गदर्शन में क्रिप्टोकरेंसी और डिजिटल संपत्तियों के लेन देन को लेकर नियम और कानून बनाने की जरूरत है।

अधिक जानकरी के लिए:

- Pearson plans to sell its textbooks as NFTs | Publishing | The Guardian
- https://publica.com/
- https://www.nftbooks.info/
- https://www.creatokia.com/en/s/what-is-creatokia
- https://bookvolts.com/

रंगोली अवस्थी
पी के केलकर लाइब्रेरी

हमेशा देर कर देता हूँ मैं

मेरी खिड़की पर एक गिल्लू रहती है। वही, महादेवी वर्मा वाली, जो उनके पैरों से चढ़ते हुए कंधो पर जाकर विराजमान होती थी, उनके हाथों से ही काजू का भोग ग्रहण करती थी, उनकी खिड़की पर झूलेदार घर में आराम फरमाती थी, और सर्दियों में हीटर के पास अपने पैरों की सिंकाई करवाती थी। पर जरा गौर फरमाइएगा, ये सब वो गिल्लू, महादेवी जी से करवाती थी, और वो बड़े चाव से करती भी थीं। पर मैं ठहरी एक नंबर की आलसी, खुद के लिए ये सब कर लूं वही बहुत है। अतः मेरी इस गिल्लू की महादेवी जी के गिल्लू से किसी भी प्रकार की तुलना का प्रश्न ही नहीं है। मेरी यह गिल्लू पूरी तरह से हाई–टेक, पूरी मॉडर्न और दिमाग–वाली भी है। हो भी क्यूं ना, ये आईआईटीयन खिड़की पर जो है।

हाँ तो मैं बता रही थी कि हमारा एक अनकहा नियम है जो हम दोनों ने बहुत पहले मान लिया था कि फॉलो करेंगे। ना मैं उसकी टेरिटरी में ना वो मेरी, लक्ष्मण रेखा है खिड़की । तो हुआ यूं कि गिल्लू एक दिन घूमते–घामते मेरी खिड़की से टकराई, और उसकी बराबर शिनाख्त की। ठोक बजा कर देखने के बाद देवी जी ने सोचा कि यहीं ठिकाना बनाया जाए। बस प्लॉट तो देख ही लिया था, अपने संगी साथियो में घूम–घूम कर प्रचार करने और उनसे मंजूरी लेने के बाद देवी जी ने जमीन की रजिस्ट्री कर डाली (जिसका किराया मैं भरती हूं हर सेमेस्टर)।

यथावत भूमि–पूजन के पश्चात घास–फूस–झाड़ जोड़ कर गिल्लू रानी ने अपना आशियाना बनाया। कहीं की मिट्टी कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा..! आशियाना बना तो कॉकटेल पार्टी दी गिल्लू ने, जिसमें मेरे ख्याल से पूरी आईआईटी की गिलहरियाँ आईं। थोड़ी बड़ाई–बुराई करने के बाद घर को भी मंजूरी मिल गयी जीडीए वालों से, क्योंकि गिल्लू को डर था की अवैध निर्माण बोल के नोएडा के ट्विन टावर्स की तरह उसका विला भी ना गिरा दिया जाए। मेरी जमीन पे उसने घर बनाया जरूर था, पर उसे मुझ पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं था। यूं ही अपने बालों की धारियां सफेद नहीं की थी उसने, एकता कपूर के सीरियल से सब सीखा था और उसके अनुसार वो पार्वती थी और मैं कोमोलिका की चाची।

खैर समय बीतता गया, दिन हफ्तों में बदले और हफ्ते महीनो में। ये घर गिल्लू की जान थी, ज्येष्ठ की धूप में वो पूरा दिन चारा–पानी का जुगाड़ करती, कभी–कभी मैं दोपहर में लंच के बाद आकर देखती तो वो खिड़की की आड़ में अपने घास के गद्दे पे सुस्ता रही होती। मेरे आने का पता उसे चल जाता था क्योंकि मैं आते ही खिड़की से पर्दा हटा देती थी – पर्दा हटा, गिल्लू भागी ..! इसी भाग–दौड़ में बरसात का भी मौसम आया, पहली–पहली फुहारें तो गिल्लू को अच्छी लगीं, पर फिर बारिश तेज होती गई और दिन भर गिल्लू का ठिकाना ये घर ही रहने लगा। बारिश की किच–पिच से तंग आकर एक रविवार मैंने सफाई के चक्कर में कामवाली से कह कर खिड़की साफ करवाई और परिणामवश उसका घर गिरा दिया। ऐसा करके न जाने क्यों मुझे खिड़की बड़ी साफ–सुथरी और चमकदार लग रही थी। गिल्लू बिल्कुल सही थी, मैं कोमोलिका नहीं डायन निकली। उसका शक सही था ।

सफाई के बाद मैं आराम से अपनी स्टडी टेबल पर काम करने लगी, वो टेबल जो खिड़की से बिलकुल सटी हुई थी। शाम के कुछ चार बजे के करीब गिल्लू आई और उसे आघात सा लगा। मुझे लगा अब चली जाएगी, इनके तो बहुत ठिकाने होते हैं, पर मैं गलत थी। वो छोटा सा मुंह लिए इधर–उधर, ऊपर–नीचे हर–तरफ अपना घर खोजने लगी, कि कहीं मैं गलत खिड़की पे तो नहीं आ गई, रास्ता तो नहीं भूल गई, सुबह तो सब ठीक था, अभी तो यही से गयी हूँ, क्या तेज हवा से कहीं नीचे गिर गया..? जैसे कई सवाल उसके चेहरे पर मायूसी के साथ साफ दिख रहे थे। मुझे भी ईश्वर ने मेरे किए की अच्छी सजा दी थी क्योंकि मैं गिल्लू से सिर्फ एक हाथ की दूरी पर थी और उसके चेहरे के ये सारे भाव मुझे बहुत करीब से दिखाई दे रहे थे। उसका रुआंसा चेहरा मुझे अंदर तक तोड़ गया, एक पल में ही मुझे अपने जीवन के सारे अच्छे काम इस एक धृष्टता के आगे स्वाहा होते दिख रहे थे। वो बार–बार मासूम आंखों से मेरी तरफ देखती मानो पूछ रही हो कि क्या तुम्हारी खिड़की की सफाई मेरे सर की छत और सर्दियों की जमा पूंजी से ज्यादा जरूरी थी। उसने सर्दियों के लिए धीरे–धीरे थोड़ा–थोड़ा करके खाना जमा किया था धूप और बारिश में भाग–भाग कर। ओह ! ये मैंने क्या किया।

पश्चाताप की आग में जलती हुई मैं इधर–उधर चहल–कदमी कर रही थी और सोच रही थी कि क्या करूँ, कैसे माफी मांगू कि वो वापस आ जाए। हां! गिल्लू मुझे छोडकर जा चुकी थी। करियर और सफलता की दौड़ में मैंने पाया तो अब तक कुछ नहीं, उल्टा अपनी नैतिकता और खो दी। इसी बीच घरवालों का फोन आया, पहले मां से बताया, तो हर भारतीय मां की तरह उन्हें अपने बच्चे की कोई गलती दिखाई नहीं दी, बोलीं बिल्कुल सही किया, थोड़ी सफाई भी जरूरी थी। भारतीय माएं भले ही बचपन में आपको बाथरूम में दौड़ा–दौड़ा के पीटें, पर बाहर झगड़ा अगर दो बच्चों का हो तो साइड अपनी रचना की ही लेती हैं, क्योंकि मां तो मां होती है। पर ऐसी गलतफहमी पिताजी के मामले में हम भारतीय बच्चे नहीं पालते। उनकी सख्त ठुकाई के बिना आईआईटी पहुंचना असंभव था। देश की सबसे सस्ती आईआईटी क्रैक करने वाली कोचिंग सुपर 30 नहीं, बल्कि पिताजी का डंडा होता है। 90 के दशक में तारे जमीं पर रिलीज नहीं हुई होती, तो हम कुटे बिना पढ़ते नहीं और कुटाई के बाद डिप्रेशन में जाने का समय नहीं होता था। हां, तो पिताजी ने गिलहरी की साइड ली – एक और भारतीय परिवार का नियम – कि झगड़ा चाहे कंगारू के बच्चे से हो, पिताजी अपने वाले का पक्ष बिल्कुल नहीं लेंगे। उन्होंने कड़क कर पूछा कि आखिर क्या जरुरत थी, तुम्हें उसका घर गिराने की ? इतनी सफाई–दार तो नहीं रही हो अभी तक के इतिहास में..! मैं क्या बोलती? मेरे पास शब्द नहीं थे । फोन रखने के बाद मैंने आखिरकार अपने माता पिता की दूसरी रचना को फोन मिलाया जिसे उन्होंने विरासत में मुझसे बेहतर जीन दिए थे । मेरी हर समस्या में मेरे स्पीड डायल पे वो तबसे है जबसे उसने दसवीं और बारहवीं दोनों में जिला टॉप किया था । हमारे इस

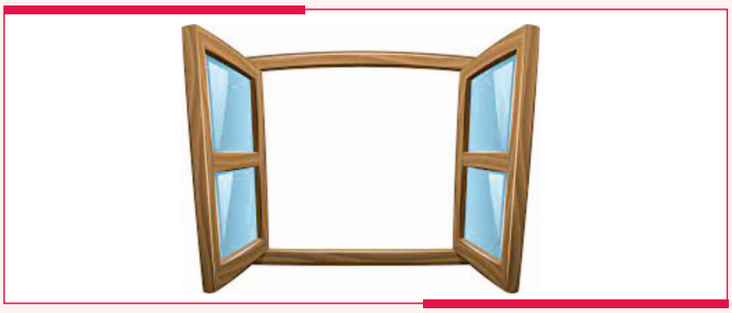

एनआईटीयन बंदर ने मुझे सलाह दी कि थोड़ा गूगल बाबा का प्रयोग करिए और ढूंढिए कि गिलहरी घर किससे बनाती है, उसका घर वापस बना दो, शायद वापस आ जाए, क्योंकि शब्दों से ज्यादा हमारा काम बोलता है ! बात दिल को छू गई। ये सारी अक्ल माता पिता हमेशा दूसरी रचना को ही क्यों देते हैं?

समस्या अभी हल नहीं हुई थी, माना कि मुझे पश्चाताप हो रहा था पर थी तो मैं अभी भी निरीह आलसी, फितरत थोड़ी बदलती भाई इंसान की। मैंने ज्यादा आसान रास्ता निकाला, एक साफ कपड़े की तिलांजलि देते हुए उसे खिड़की पे गद्दे–नुमा आकार में रख दिया। थोड़ी और समझदारी दिखाते हुए कुछ मूंगफलियां उसपे बिखरा दी और इंतजार करने लगी उस मासूम से चेहरे के वापस खिल जाने का। घड़ी की सूइयां आगे बढ़ रही थीं पर मेरे लिए जैसे वक्त थमा हुआ था, न पढ़ पा रही थी न प्रयोग सफल होता दिख रहा था। सावन को इंतजार का मौसम कहते हैं, फिर वो किसी का भी हो। इधर घड़ी ने शाम के 6:30 बजाये और उधर खिड़की पर आहट हुई। झाँक कर देखा तो गिल्लू मैडम एसीपी प्रद्युम्न की मुद्रा में गद्दे और खाने का मुआयना कर रही थीं, साथ में एक और गिलहरी– इंस्पेक्टर दया को भी लाई थीं, कि पता लगाओ आखिरकार माजरा क्या है? दया ने अपना पूरा शक्ति प्रदर्शन किया गिल्लू को इम्प्रेस करने को, पर मेरी खिड़की तो क्या ही तोड़ पाते । खैर थोड़ी बहुत उछल–कूद कर के चला गया मेरी खिड़की से, या गिल्लू ने समझा बुझा कर भेज दिया कि मूंगफली की दावत तो अकेले ही उड़ायी जाएगी। यारी–दोस्ती अपनी जगह खाना–पीना अपनी जगह ! आई टोटली एग्री !

गिल्लू ने बैठ कर, लेट कर, अच्छे से गद्दे की मजबूती को परखा, बिस्तर को थोड़ा अपने अनुसार ठीक किया। इंटीरियर बाद में सही करेगी ऐसा सोच कर पेट–पूजा आरंभ की, ठीक मेरे सामने आकर कट–कट कर मूंगफली खाने लगी। मन को जैसे एक अलग सुकून मिला ये नजारा देख कर, जैसे मीलों चलने के बाद कावड़ियों को भोले बाबा पर जल चढ़ाकर असीम शांति मिली है, या पूरे जीवन पैसे जोड़ने के बाद कोई बुजुर्ग हज यात्रा पूरा कर के लौटा है। वो मूंगफली खा रही थी पूरी तन्मयता से पर एक बार भी मेरी तरफ न देखा उसने, ना ही मेरे आने से भागी, जैसा मुझसे नाराज हो और हमारा लुका–छिपी का खेल उसके लिए बेमानी हो गया हो। जैसे कह रही हो, बहुत वक्त लगेगा शायद पहले जैसा होने में, या शायद न भी हों। वो अचल अनवरत मूंगफली खा रही थी और मेरी आँखों से मोती झर रहे थे.. एक–एक मोती मानो कह रहा हो ..

हमेशा देर कर देता हूँ मैं हर काम करने में
जरूरी बात कहनी हो, कोई वादा निभाना हो
उसे आवाज देनी हो उसे वापस बुलाना हो
हमेशा देर कर देता हूँ मैं..

ज्योति मिश्रा
पी एच डी छात्रा

घुसपैठी तेंदुआ

अमावस की रात को, भटक कर वो रास्ता,
ना जाने कहाँ से, घुसपैठ कर गया एक तेंदुआ,
इधर से उधर तक, कर रहे सब एक ही दुआ,
वापस कब जाएगा भैया, घर अपने ये तेंदुआ।
चितकबरा सयाना बड़ा, आँख मिचौली खेल रहा,
बकरा बांधा, ड्रोन उड़ाया, फिर भी चकमा दे रहा।
कभी यहाँ, कभी वहाँ, दहशत वो फैला रहा,
सुरक्षा, वन विभाग को चने वो चबवा रहा।
तस्वीरों, वीडियो अफवाहों का दौर चल रहा,
कोई कहे इधर, कोई कहे उधर वो दिख रहा।
जिंदगी पे हक मेरा भी और उसका भी समीरा,
सवाल यह है कि, कौन किसके घर घुसपैठिया।

प्रोफेसर समीर खांडेकर
आई आई टी कानपुर
परिसर में तेंदुए के आगमन पर विशेष

1922 का जबलपुर का 'झंडा सत्याग्रह' देश का पहला सत्याग्रह था और सुभद्रा जी पहली महिला सत्याग्रही थीं। रोज–रोज सभाएँ होती थीं जिनमें सुभद्रा भी बोलती थीं। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के संवाददाता ने अपनी एक रिपोर्ट में उनका उल्लेख लोकल सरोजिनी कहकर किया था।

बदलाव

देखा है मैने यहां सब कुछ बदलते देखा है
पत्तों को शाखों से झड़ते देखा है
बच्चो को मां से बिछड़ते देखा है
देखा है मैने यहां सब कुछ बदलते देखा है....

हर चेहरे का रंग बदलते देखा है
हर किसी का ढंग बदलते देखा है
देखा है मैने यहां सब कुछ बदलते देखा है

अपनो को पराया, परायो को अपना होते देखा है
हर बात बदलते देखा है, जज़्बात बदलते देखा है
देखा है मैने यहां सब कुछ बदलते देखा है....

झूठी मुस्कान में हर दर्द छिपाते देखा है
आंसुओं को भी झूठे ही बहते देखा है
देखा है मैने यहां सब कुछ बदलते देखा है...

आस टूटते देखा है, विश्वास टूटते देखा है
हर खास को छूटते देखा है, हर प्यास छूटते देखा है
देखा है मैने यहां सब कुछ बदलते देखा है...

यार बदलते देखा है, प्यार बदलते देखा है
घर बार बदलते देखा, दुनिया का व्यवहार बदलते देखा है,
देखा है मैने यहां सब कुछ बदलते देखा है...

डॉ असित बाजपेयी
सीनियर प्रोजेक्ट ऑफिसर
नेशनल सेंटर फॉर फ्लेक्सिबल इलेक्ट्रॉनिक्स

आई आई टी

आई आई टी प्यारा,
संस्थान है हमारा।
छात्र यहाँ के न्यारे
सारे जहां के प्यारे
आसमां की गोद में
छिटके हुए सितारे।

आई आई टी प्यारा,
संस्थान है हमारा।
छात्र यहाँ के आज
कल का भविष्य होंगे।
शिक्षकों की सीख का
अच्छा परिणाम देंगे।

आई आई टी प्यारा,
संस्थान है हमारा।
कोई बनेगा शासक
तो कोई वैज्ञानिक
कोई बनेगा शिक्षक
तो कोई देश का रक्षक।

आई आई टी प्यारा,
संस्थान है हमारा।
हम सब की मेहनत से
संस्थान का नाम होगा
सबका भविष्य सँवरेगा
दुनिया में नाम होगा।

आई आई टी प्यारा,
संस्थान है हमारा।

छवि श्रीवास्तव
कनिष्ठ सहायक
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

जीवन–संघर्ष

जननी का आँचल छोड़
मृदुल से डगमग पग धरूँ
पितृ छांव में रहकर भी
क्यों न मैं संघर्ष करूँ।

वसुधा में बिखरे शूल अनंत
धावक बन मैराथन दौड़ूँ
तोड़ वेदना की जंजीरें
क्यों न कोई इतिहास रचूं,

तपते रेतीले जगत में
कोई नयी सी डगर चुनूं
भगिनी भ्राता सखा संग
क्यों न मैं संघर्ष करूँ।

भंवर कामना से उठकर
नया कोई सृजन करूँ
प्रेयसी चिन्तन त्यागकर
वेद गीता सा ज्ञान रचूं ,

चढ़ जाऊं बलिवेदी पर
राष्ट्र की खातिर जंग लड़ूँ
शत्रु संग दो–दो हाथ नापने
क्यों न मैं संघर्ष करूँ।

बिखर जाऊं चाहे सँवर जाऊँ
प्रचंड प्रलय सा बन जाऊं
यौवन साहस निष्ठा से
दूजों की क्यों न राह रंगू,

लहरों के थपेड़े झेलकर
विषम जलधि को पार करूँ
है अपनी लघु तरनी तो क्या
क्यों न मैं संघर्ष करूँ।

कलुषित मन के भ्रम त्यागकर
अंतर्मन में अनल भरूँ
है जहाँ में कितना अँधियारा
क्यों न बनके मैं दीप जलूं,

चाहे छूने को सागरमाथा
नित नया अभियान धरूँ
विचलित मन के तोड़के बंधन
क्यों न मैं संघर्ष करूँ।

देवेन्द्र नारायण राजपूत
परियोजना तकनीशियन, संगणक केन्द्र

वो नारी है–नर लिखती है

वो नारी है–नर लिखती है।
वो कागज ले–ना–ले, वो लिखती है,
वो लेखनी ले–ना–ले, वो लिखती है,
उसने बहुतों को बिना पढ़े ही छोड़ दिया,
कुछ नें उसे समझने की कोशिश भी न की,
लेकिन मन ही मन वो लिखती है।

जब नन्ही थी बस उपजी थी,
ना कोई बातें करती थी,
वो लिखती थी, बस आखों से,
फुदक फुदक कर चलती थी,
कि पहुंचे ऊर्ध्व झरोखों तक
पलकों में खुलती फाकों से,
वो लिखती थी बस आँखों से।

बोलो थोडे कुछ शब्द नये
अम्मा बाबा से परे गये।
कुछ आ, और कुछ चले गये
कुछ घिस करके, कुछ नये गये
वो सब कुछ सोचा करती थी,
वो अपनी सोचों में लिखती थी।

वो कुछ कुछ खोजा करती थी
वो कुछ साझा करती थी
वो झपटी जब प्रस्फुटन हुआ
बिखरी बिखरी सी बिफरी थी
वो लिखती थी।

उसने खुद को आता देखा,
उसने उसको जाता देखा,
किस–किस नें कुछ कुछ क्या देखा
वो गुठली थी वो मिसरी थी
वो लिखती थी।

चढ़ता सूरज, ढलती शामें,
बिछड़े उंगली, बंधती बाहें,
तनती भौहें, बुझती राहें,
भरते दम–खम में सिहरी थी
वो लिखती थी।

उसने भरती आखें देखी,
उसने जलती आखें देखी
उसने छिछली आखें देखी
और आखें जो सब छलती थी
वो लिखती थी।

हैं साल बहुत से बीत गये
पतझड़ बसंत और शीत गये
जायद, खरीफ और रबी फसल
के सारे मौके बीत गये
तो क्या उसने लिखना छोड़ा,
तो क्या उसने दिखना छोड़ा,
है ऐसा न संकेत कोई
अब भी रेखायें भाल–प्रबल
और भृकुटी के पट खिचतीं है
वो लिखती है।

वो सब कुछ ही लिख जाएगी,
वो खुद तुम तक पहुंचाएगी
वो शब्द–अर्थ न उलझेगी,
वो सब ही कुछ सुलझाएगी
वो दूर तलक ले जायेगी
फिर भी करीब पहुंचाएगी
"वो नारी है वो लिखती है
वो सबका सब लिख जायेगी"

क्या पन्ने वो पढ़ पाओगे
क्या शब्द नये गढ़ पाओगे
जो कुछ सांकेतिक लिखा गया
क्या प्रचलित कर बतलाओगे
ये जिम्मेदारी तुम पर है
ये पहरेदारी तुम पर है,
कि कह दो सारे खतरों से
इस समाज के कतरों से कि
अब न कहीं छिप पाओगे
जल्द ही तुम पछताओगे

ना सुधारे जो, अनमने रहे
और सदा आज से बने रहे,
तो "हास" पात्र बन जाओगे
और भाव–शून्य कहलाओगे
क्योंकि वो उड़ती तितली है
अपने रंगों से लिखती है।

वो लिखती थी, वो लिखती है,
वो नारी है, "नर" लिखती है।

संतोष कुमार मिश्र
"केशवेन्दु"
बी एस. बी ई

श्रृंगार प्रेम

ये तेरी रेशमी जुल्फें और होठों की लाली आज
तुझपे कुछ ज्यादा ही जच रही है...
मानो जैसे सारे जमाने की नजरे आज तुझपे ही
अटक रही है..
मेरी आंखे तो जैसे झपकना भूल गई हो..
और तेरी आंखें जैसे कुछ बयां कर रही हो..
ये काजल ये बिंदिया ये गले का हार...
ये कंगन ये पायल ये सोलह श्रृंगार...
कर रही इबादत मुझसे...
कि वो मुझे रिझाने को आज इतनी संवर कर
आई है...
कि वो मुझे मनाने को आज इतनी बन ठन कर
आई है...
पहुंची जब आकांक्षा मन की...
मैंने निःसंकोच इशारा कुछ यूं किया...
पलके झुका तबस्सुम से उनके श्रृंगार का ऐतबार
किया...
उनके अद्भुत आचरण को नतमस्तक हो सम्मान
किया...
और फिर उनके उत्तर मे, सजदा कर हथेली
उनके नाम किया...
अप्रतीम अनुभव हुआ जब उसने...
थामा हाथों को लगाया होठों से...
फिर किया इबादत नम आंखों से...
सांसे हुई स्थिर, नियंत्रित हुआ दिल...
खिल सा गया चेहरा उनका, आ गई एक प्यारी
मुस्कान...
जैसे कह रही हो हक से, बढ़ा दी आपने सत
श्रृंगार की शान...
आज रखली आपने सत श्रृंगार की मान...

सही कहा है किसी ने, ये श्रृंगार सब कुछ बदल
सकती है...
जीवन की तस्वीर भी और मानव की तकदीर भी..

.

राहुल प्रकाश सिंह
छात्र

लूडो

''जिन्दगी एक सफर है सुहाना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना..... हाँ !''
कुछ दिन पहले चलते–चलते किसी को किशोर कुमार जी का यह लोकप्रिय गीत गाते सुना था। तब तो कानों ने इनको सुना, परंतु मस्तिष्क ने इन्हें अनसुना कर दिया, परंतु आज शाम परिवार के साथ जब लूडो खेलने बैठा तो कहीं न कहीं यह बोल मुझे उन गोटियों से गूँजते हुए सुनाई दी। ऐसा लगा कि मानो वो गोटियां मुझसे चिल्ला–चिल्ला कर कुछ कहना चाह रहीं हों, मुझे कुछ समझाना चाह रहीं हो। खैर, आदतानुसार मैं इन संदेश वाहकों को भी नजर अंदाज करता रहा और खेल में पूरी तरह मशगूल अपने पासे इस गलत फहमी में फेंकता रहा जैसे उन गोटियों की तकदीर मेरे हाथों द्वारा लिखी जा रही हो। 6 आने पर बड़ा खुश, और 1 आने पर थोड़े असंतोष के भाव से मैं आगे बढ़ता रहा। रास्ते में कभी–कभी कुछ गोटियां आ रहीं थीं, उन्हें काटता हुआ मैं आगे बढ़ता रहा। देखते ही देखते मेरी तीन गोटियां जीवन के उस चक्र को पार कर गयीं। थोड़ी बहुत नजर इधर–उधर दौड़ाई तो देखा कि बाकी सबकी तो अभी एक ही गोटी ऐसा कर पाई है। मेरी तीनों वीर गोटियां अपनी–अपनी कब्रों में पड़ीं उन हारती हुई गोटियों पर हंस रहीं थीं, उन्हें उलहाने दे रहीं थीं, और अपने चौथे साथी का मनोबल बढ़ाने में लगीं हुईं थीं, कि बस वो आए और चारों मिलकर अब चैन की नींद सो जाएँ। मैं भी अपने अहंकार में मदहोश पूरे जोश और विश्वास के साथ पासा फेंकने लगा, ऐसा मान लिया कि अब तो जीत मेरी ही है।

इतने में लूडो के उस बोर्ड ने गाना गाया, ''जिन्दगी एक सफर है सुहाना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना.....हाँ!'' मैंने सोचा यह तो मूर्ख है, इसको जीवन के बारे में क्या पता, यह मेरे कौशल से अवगत नहीं शायद इसको दिख नहीं रहा कि मैं अंक पहले बोल रहा हूँ और पासा बाद में फेंक रहा हूँ। मेरी यह बात शायद उस पासे और उन तमाम जूझती हुईं गोटियों ने सुन ली, और उनको यह बात नागवार गुजरी। अगले आधे घंटे में हुआ कुछ यूँ कि मेरी वो एक गोटी उन सभी प्रतिद्वंदियों से अकेली जूझती रही।

मैदान कुछ ऐसा सज गया था कि वह तीनों वीरांगनाएं भी अपनी–अपनी कब्रों से निकल कर, एकटक उस संघर्ष को देख रहीं थीं। ऐसा लग रहा था कि मानो कुरुक्षेत्र का मैदान एक और युद्ध के लिए सज गया हो, और अभिमन्यु के लिए चक्रव्यूह एक बार फिर तैयार कर लिया गया हो। जैसे ही वह जूझता अभिमन्यु उठता कोई न कोई कौरव आकर उसको वापिस गिरा देता। चक्रव्यूह के बाहर खड़े पांडव लाचार थे और अपने आप को कुछ समय पहले कृष्ण समझता मैं, अब बस बेबसी से उस पासे, उस गोटी, उस खेल को देख रहा था। कौरव जीतते जा रहे थे और अभिमन्यु एक बार फिर

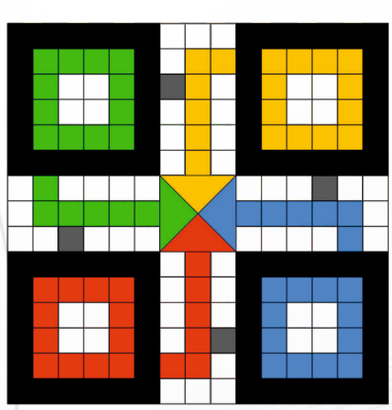

दम तोड़ता दिखाई दे रहा था। इतने में उस गोटी से गूंजती हुई आवाज आयी, – ''नन्हीं सी चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है.....आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।''

यह कहते ही अभिमन्यु एक बार फिर अपनी तलवार लेकर उठा, और ऐसा दहाड़ा कि कौरव सकते में आ गए। लड़ते–लड़ते इस बार वो कौरवों को मात देते हुए, लड़ाई के अंतिम मार्ग पर पहुंचा, ऐसा लगा कि मानो चक्रव्यूह अब भेद दिया जाएगा, परन्तु उस अंतिम पड़ाव पर भी उसके धैर्य की परीक्षा ली गई। उस पड़ाव पर उसे कोई मार तो नहीं सकता था परन्तु ऐसा लगा कि मानो यक्ष एक बार फिर अपने प्रश्न लेकर एक और पुरु वंशज के सामने खड़े हो गए हों। यहां मेरे पासे पर 1 नहीं आ रहा था और दूसरी तरफ ऐसा लग रहा था कि मानो सारी गोटियां अपनी–अपनी मंजिलों तक पहुंच जाएंगी, और एक बार फिर अभिमन्यु पहले छल से तो इस बार किस्मत से हार जाएगा, परन्तु शायद वक्त भी ठहरा हुआ यह महाभारत देख रहा था और इस बार वो उस जूझते हुए योद्धा के पक्ष में ही रहना चाहता था।

मैंने पासा एक बार और फेंका, वह थोड़ा लुढ़का, मानो मुझे सबक सिखा रहा हो परंतु अंत में उसने मुझे 1 अंक दे ही दिया। यक्ष के सवाल खत्म हुए, और अभिमन्यु भी अपनी मंजिल को पा गया। बाहर से देखने पर यह महाभारत बहुत नाटकीय एवं निर्जीव भले ही दिखाई दे, परन्तु उन गोटियों को यदि जीवंत करके देखूं तो उनके लिए यह उससे कम भी नहीं था अंतर बस यही था कि इस बार अभिमन्यु को चक्रव्यूह से बाहर निकलना भले ही नहीं आता था परन्तु इस बार वो ऐसा कर पाया, और फिर जीवन क्या है? महाभारत का वो चक्रव्यूह ही तो है, जिसमें हम सब अभिमन्यु हैं और हमारे अंदर की वो तमाम बुराइयां, वो तमाम नकारात्मकताएँ कौरव हैं, जो लगातार हमें हराने के प्रयास में रहतीं हैं।

फैसला हम पर है कि कौन सा गीत गुनगुनाना है।
''हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन...
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन।"

सानिध्य अग्रवाल
छात्र

सुभद्राकुमारी चौहान नारी के रूप में ही रहकर साधारण नारियों की आकांक्षाओं और भावों को व्यक्त किया हैं। बहन, माता, पत्नी के साथ–साथ एक सच्ची देश सेविका के भाव उन्होंने व्यक्त किए हैं। उनकी शैली में वही सरलता है, वही अकृत्रिमता और स्पष्टता है जो उनके जीवन में है।

सुभद्राकुमारी चौहान की मृत्यु पर माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा कि सुभद्रा जी का आज चल बसना प्रकृति के पृष्ठ पर ऐसा लगता है मानो नर्मदा की धारा के बिना तट के पुण्य तीर्थों के सारे घाट अपना अर्थ और उपयोग खो बैठे हों।

एक नई पहल (सप्तरंग)

कैंपस स्कूल के इतिहास में पहली बार दो दिवसीय रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसका नाम था (सप्तरंग)। जिसमें कक्षा के०जी० से लेकर कक्षा पाँच तक के सभी बच्चों नें भाग लिया।

प्रथम दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि आई. आई. टी कानपुर के निदेशक महोदय माननीय प्रो. अभय करंदीकर सह–पत्नी श्रीमती अरुणा करंदीकर तथा विद्यालय के पी.आई. महोदय माननीय प्रो. नीरज सिन्हा द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। इस दिन विद्यालय प्रांगण में खेल–कूद दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें सभी बच्चों नें बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। साथ ही साथ अभिभावकों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के आरंभ में कक्षा पाँच के विद्यार्थियों द्वारा गणेश वंदना की प्रस्तुति दी गई जिसमे बच्चों द्वारा लेजियम का प्रयोग किया गया। इसी प्रकार प्रत्येक कक्षा के द्वारा अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जैसे– 'चक दे इंडिया', 'योग– आरोग्य', 'याचना नहीं अब रण होगा' आदि। बच्चों के लिए दौड़– प्रतियोगता का आयोजन किया गया जिसकी प्रेरणास्रोत थी हमारी भारतीय एथलीट 'हिमादास' उनके सम्मान में सभी दौड़ के नाम के साथ (ढींग–रेस) शब्द को जोड़ा गया।

विद्यालय परिसर में आए सभी गणमान्य लोगों नें बच्चों का खूब उत्साहवर्धन किया तथा बच्चों नें भी अपनी शत प्रतिशत सहभागिता दर्ज करायी।

द्वितीय दिवस के कार्यक्रम का शुभारम्भ आई आई टी कानपुर के उपनिदेशक माननीय प्रो. एस. गणेश, प्रो. नीरज सिन्हा सह पत्नी श्रीमती नेहा सिन्हा विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती अचला जोसन द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। इस दिन बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की रंगारंग प्रस्तुति दी गई। जिसके माध्यम से प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों नें कुछ न कुछ बताने का प्रयास किया। जैसे– कक्षा प्रेप के बच्चों द्वारा "पक्षी है बड़े अनमोल, पर्यावरण में इनका बड़ा मोल" नृत्य से जीवन में पशु–पक्षियों के महत्व के बारे में बताया, अर्थात ये पशु पक्षी प्राकृतिक, संतुलन बनाए रखने में अपना असाधारण योग देते हैं।

कक्षा एक के विद्यार्थियों द्वारा "जल है तो कल है" नृत्य के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया कि मानव जीवन के लिए जल कितना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। साथ ही साथ "मोबाइल से मैदान की ओर" के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया कि अगर मोबाइल हमारे लिए वरदान है तो कहीं न कहीं वह हमारे जीवन के लिए अभिशाप भी है। इसकी बढ़ती उपयोगिता बच्चों को पंगु बना रही है। बच्चों ने इस प्रस्तुति के माध्यम से यह बताना चाहा कि जीवन में हर चीज का संतुलित होना अति आवश्यक है। कक्षा तीन के विद्यार्थी ने भारतीय लोकनृत्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति को दर्शाया। "गुनगुनाइए– मुस्कुराइये" के द्वारा संगीतमयी दुनिया का भ्रमण किया गया। कार्यक्रम के अंत में बच्चों द्वारा "कोरोना त्रासदी" का मंचन किया गया। जिसमें यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि हम भारतीय कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना एकजुट हो कर सकते हैं चाहे जैसी भी परिस्थिति हो, दृढ़ इच्छा शक्ति, आपको सफलता अवश्य दिलायेगी।

कार्यक्रम के बीच में बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। हमारे विद्यालय की यह परंपरा रही है कि शत–प्रतिशत सहभागिता हो। यह परंपरा आज से नहीं अपितु 14 जुलाई 1964 से हुई जब कैम्पस स्कूल की स्थापना हुई। विद्यालय के संस्थापक थे माननीय श्री पी के केलकर और इस विद्यालय कि प्रथम प्रधानाचार्या थी श्रीमती परासनेस जी। आप के द्वारा विज्ञान विषय से संबंधित अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। इनके द्वारा कैम्पस स्कूल की शिक्षा प्रणाली में अत्यंत सरल और प्रयोगात्मक क्रियाओं का समावेश किया गया और तब से लेकर आज तक इस प्रणाली का निर्वाह होता आ रहा है। वर्तमान समय में भी इस परंपरा का निर्वहन विद्यालय की वर्तमान प्रधानाचार्या श्रीमती अचला जोसन तथा कैम्पस स्कूल परिवार पूर्ण निष्ठा से कर रहा है और आगे भी इसी प्रकार करता रहेगा।

वर्ष 2022–23 के दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन मुख्य अतिथि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के निदेशक माननीय प्रो. अभय करंदीकर, श्रीमती अरुणा करंदीकर, उपनिदेशक प्रो. एस. गणेश, वर्तमान पी.आई. प्रो. नीरज सिन्हा, श्रीमती नेहा सिन्हा, विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अचला जोसन तथा अभिभावकगण के संरक्षण में हुआ। सभी नें अपने आशीर्वचन देकर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का समापन हमारे विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अचला जोसन के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

विद्यालय परिवार आप सभी के इस सहयोग का सदा आभारी रहेगा तथा आगे भी आप से इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा रखता है।

अभिलाषा विश्वकर्मा
(अध्यापिका) कैम्पस स्कूल

जो अप्राप्त है, उसे पा लेना कठिन नहीं है।
परंतु जो प्राप्त था, उसे खोकर फिर पाना
अत्यंत कठिन है।

अपनी शक्ति में विश्वास न करने वाला
व्यक्ति अपनी दुर्बलता में विश्वास करता है।

–महादेवी वर्मा

शिवानी की बातें

वैसे तो मैं लिखती नहीं हूं लेकिन आज लिखने की बहुत इच्छा है, क्योंकि जिसके बारे में मैं लिखने जा रही हूं वह साहित्य जगत की एक महान विभूति हैं– गौरा पन्त उर्फ शिवानी जी। शिवानी जी के बारे में बचपन से बहुत सुना था, क्योंकि उनकी तरह ही मेरा भी नैनीताल से, पहाड़ से गहरा संबंध है। साहित्य के प्रति रूचि रखने वाले हमारे घर में, हम बचपन से ही शिवानी जी की बातें सुना करते थे। उनकी कहानियां, उनके उपन्यास और उनके पात्रों के बारे में रह रहकर परिवार में बातें हुआ करती थीं। अपने अनेक पात्रों को पहाड़ की कठिन लेकिन खुशहाल जिंदगी से उठाकर उन्होंने अपनी पहाड़ की कहानियों में रचाया–बसाया था, अतः पहाड़ में रहने वाले शिवानी से, उनके साहित्य से और उनके पात्रों से स्वयं को जुड़ा अनुभव करते हैं। शिवानी जी से यह जुड़ाव मुझे बरबस अपने संस्थान में हाल ही में संपन्न एक कार्यक्रम में खींच लाया। शिवानी जी के बारे में जानकर या सुनकर, मेरे मानस पटल पर उनका जो चित्र अंकित था, इस कार्यक्रम ने उस पर सतरंगी रंग भर दिए। इन्हीं कुछ रंगों को मैं इस लेख के द्वारा आप तक पहुचाने का एक छोटा सा प्रयत्न कर रही हूँ।

यह कार्यक्रम भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में भारतीय भाषाओं के संवर्धन के लिए स्थापित शिवानी केंद्र की ओर से आयोजित किया गया था। यहाँ यह बताते चलें कि इस केंद्र की स्थापना शिवानी जी के सुपुत्र श्री मुक्तेश पन्त, जो कि अमेरिका में कार्यरत हैं और संस्थान के पूर्व छात्र हैं, के अनुदान से हुई है। कार्यक्रम का मुख्य आयोजन शिवानी जी की सुपुत्री श्रीमती मृणाल पांडे और उनके भतीजे श्री पुष्पेश पन्त का शिवानी जी पर चर्चा का था। सचमुच यह एक ऐसा अवसर था जहाँ आप अपने पसंदीदा लेखक के बारे में वो बाते भी जान सकते थे, जो कि आम जन को पता नहीं होती। शिवानी जी का जो एक स्मृति चित्र मेरे मन–मस्तिष्क में हमेशा बनता आया है, उनके परिवार जनों की बातें सुनकर वह और भी स्पष्ट हो गया।

शिवानी जी पर सरस्वती का आशीर्वाद बाल्यावस्था से ही था। बचपन में ही शिवानी जी को गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के सानिध्य का अवसर मिला, जब उनके पिता जी ने बारह वर्ष की उम्र में उन्हें पढने के लिए शांतिनिकेतन भेजा था। प्रतिभा की धनी शिवानी जी का भाषाओं पर सहज अधिकार हो जाता था। शांतिनिकेतन में प्रवास के कुछ ही समय पश्चात शिवानी जी ने बांग्ला भाषा में महारत हासिल कर ली थी, इससे प्रभावित होकर गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार अपनी कविता का शिवानी से वाचन करवाया। बांग्ला में उनका कविता पाठ बहुत ही उत्कृष्ट था और समारोह में उपस्थित सभी भद्रजनों ने उनकी सराहना की थी। एक और रोचक बात पता चली कि शिवानी जी ने अपनी पहली कहानी बांग्ला भाषा में ही लिखी थी। लोग जो उन्हें उनके हिंदी साहित्य की वजह से जानते हैं शायद उन्हें यह बात पता ना हो। अपनी इस पहली कहानी को लेकर जब

शिवानी जी गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के पास पहुंचीं, तो उन्होंने कहानी को बहुत सराहा और एक बड़ा गुरुमंत्र भी दिया–ऐसा मंत्र जिसने आगे चलकर एक अल्हड़ बालिका गौरा पन्त को हिंदी जगत का एक उच्च साहित्यकार 'शिवानी' बना दिया। गुरूजी का मंत्र था कि जिस भाषा में तुम सहज हो, जो तुम्हारी मातृभाषा है, उसमें लिखना शुरू करो। शायद यही कारण रहा हो कि शिवानी के हिंदी लेखन में उनकी मुंहबोली कुमाउँनी भाषा की भी स्पष्ट छाप दिखती है।

शिवानी जी के व्यक्तिव का एक और अत्यंत रोचक पहलू मृणाल जी ने बताया जो उनके शांतिनिकेतन प्रवास के दौरान का है। शिवानी जी के पिताजी को चिंता थी कि कहीं बंगाल में जाकर शिवानी जी मछली–मांस का सेवन न शुरू कर दे, अतः उनके सात्विक खाने की व्यवस्था करने के लिए एक महाराज जी को भी साथ भेज दिया। लेकिन अल्हड़, स्वछन्द प्रवृति और स्वन्त्र विचारों की बालिका शिवानी जी को कैसे यह बंदिश रोक सकती थी। वह मित्र बनाने में, बातचीत करने में माहिर थी और सबसे तुरंत घुलमिल जाती थी। कुछ ही अन्तराल के पश्चात शिवानी जी शांतिनिकेतन के लोगों के साथ, नए–नए मित्रों के साथ इतनी हिल–मिल गयीं कि महाराज को खाना बनाने का मौका ही न मिले। शिवानी जी मित्रों के साथ, कैंटीन में व हर जगह, हर तरह के व्यंजनों का लुत्फ उठाने लगी। अंततः छः महीने बाद ही महाराज जी को उल्टे पाँव अपने घर लौटना पड़ा।

शिवानी जी पहाड़ के उस पारंपरिक परिवेश में पली–बढ़ी थी जहां कई तरह की रूढ़िवादी बातें प्रचलन में थीं। उस रूढ़िवादी समाज में रहकर भी स्वतंत्र विचारों की बात करने का साहस शिवानी जी ही कर सकती थी। शिवानी जी ने स्वच्छंद विचारों का प्रतिपादन तो किया ही साथ ही साथ परंपराओं के सम्मान की बात भी कही– वह परंपराएं जो एक पारिवारिक जीवन को सशक्त करती हैं, परिवार को एक सूत्र में बाँध कर रखती हैं, और जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान के आदान–प्रदान का माध्यम बनतीं हैं। शिवानी जी अपने लेखन और अपने परिवार के बीच एक बहुत ही अच्छा सामंजस्य स्थापित करके चलती थी. उनके ऊपर परिवार की तमाम जिम्मेदारियां थी, जैसे अपने पति को ऑफिस के लिए तैयार करना, अपने बच्चों को स्कूल भेजना और घर की तमाम वो जिम्मेदारियां जो एक स्त्री के पैदा होने के बाद ही उसके नाम लिख दी जातीं हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इन ढेरों जिम्मेदारियों के बाद जो भी समय मिलता उस अल्पावधि में ही शिवानी जी अपनी साहित्य साधना भी कर लेती थीं।

समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति शिवानी जी के मन में हमेशा से ही द्वंद रहा, यह द्वंद उनके पात्रों के जीवन में भी भली–भांति देखा जा सकता है। शिवानी जी की कहानियों में बहुतायत से भिक्षुणी और वेश्या पात्रों का होना और उनकी स्वछन्द जीवन प्रवृत्ति, शायद समाज के प्रति उनके विद्रोह का ही एक नमूना था। पुष्पेश पंत जी ने बताया की भिक्षुणी या वेश्या पात्रों के अलावा भी कई अन्य महिला पात्र, जो शिवानी जी की कहानियों में चित्रित होते हैं, वह उन महिलाओं के स्वतंत्र विचारों के होने की और प्रचलित रूढ़ियों को तोड़ने की ही कहानी कहते हैं।

जहाँ एक तरफ शिवानी जी समाज की स्वस्थ परम्पराओं का अनुसरण करतीं, वहीं दूसरी तरफ समाज की कुरीतियों पर प्रहार करने का साहस भी करतीं। उनके साहस का एक सुन्दर उदाहरण मृणाल जी ने बताया कि कैसे शिवानी जी ने अपने समय के राजनीतिज्ञ, जो सामाजिक रूप से कमजोर महिलाओं का शोषण करते थे, के बारे में लेख लिखे। उनके लेख इतने स्पष्ट और तीखे थे कि शिवानी जी की मां को उन्हें हिदायत देनी पड़ी कि वह इन शक्तिशाली राजनीतिज्ञों से न उलझे. लेकिन शिवानी जी का साहस था कि वो बिना डरे अपनी कलम की धार और उसके वार को तेज करती रहीं।

जिस तरह महान गणितज्ञ रामानुजन के बारे में कहा जाता है कि उनकी गणित की साधना उनकी आराध्या नामागिरी थायर देवी की साधना के समतुल्य थी, देवी की भी उन पर कृपा थी कि वह अनंत को देख पाने वाले अकेले गणितज्ञ बन गए, उसी तरह शिवानी जी के ऊपर भी सरस्वती माँ की महान कृपा थी। पुष्पेश पंत जी ने बताया कि शिवानी जी जब लिखती थीं तो अनवरत लिखती चली जाती थी। यह उनकी पांडुलिपियों में, जो कि मृणाल पांडे जी के पास सुरक्षित हैं और आने वाले समय में शिवानी केंद्र में लायी जा सकती हैं, में स्वतः ही देखा जा सकता है। विचारों का प्रवाह और शब्दों को कागज पर उतारने की उनकी प्रतिभा असाधारण थी। सचमुच यह सरस्वती देवी का शिवानी जी पर असीम कृपा का ही परिणाम था। अपने संस्थान में शिवानी केंद्र का स्थापित होना एक असाधारण घटना है और हम सब लोगों के लिए एक सुन्दर मौका भी कि हम शिवानी जी के बारे में, उनके द्वारा रचित साहित्य के बारे में और भी जान सकते हैं।

मेरा आलेख मृणाल पांडे जी और पुष्पेश पन्त जी की चर्चा पर आधारित है, जिस चर्चा में मैं स्वयं उपस्थित थी।

–बबिता लोहनी
कार्यालय प्रमुख, पूर्व छात्र संगठन कार्यालय,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

निसर्ग कन्याः बहिणाबाई चौधरी

'अरे संसार संसार,
जसा तवा चुल्ह्यावर,
आधी हाताला चटके,
तेव्हा मिळते भाकर ।

अर्थात संसार एक चूल्हे पर रखा तवा है। रोटी सेंकते सेंकते हाथ जलते हैं उसी के उपरांत स्वाद नसीब होता है। जीवन की सच्चाई अपने खानदेशी भाषा (मराठी अहिराणी बोली भाषा में) सरलता एवं सहजता से बताने वाली यह माता बहिणाबाई चौधरी कभी स्कूल नहीं गईं परंतु उनके द्वारा बोली गई अनेकानेक कविताएं महाराष्ट्र में विविध विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं।

उनकी सारी रचनाएं (700 से ऊपर लिखित और बहुत सी अलिखित) दैनिक जीवन में निसर्ग से तादात्म्य रखने वाली है। हमें इन अष्टाक्षरी (हर एक लाइन में 8 अक्षरों का समूह) कविताओं में जीवन के अनेक पाठ मिलते हैं। खेती व्यवसाय से जुड़ी यह साधारण सी गृहिणी सृष्टि के बहुत निकट थीं। सृष्टि का यह जुड़ाव इनकी हर रचना में उजागर होता है। इन्हें मरणोपरांत ही क्यों ना हो, निसर्ग कन्याध्कृषि कन्या कवयित्री का खिताब मिला। सन 1880 में नागपंचमी के दिन बहिणाबाई चौधरी का जन्म महाराष्ट्र के जलगांव जिले में आसौदा देहात में हुआ। बाल काल में विवाह हुआ। तीन बच्चों की मां को 30 साल की आयु में ही वैधव्य का सामना करना पड़ा। युवावस्था के इस संकट में भी उनके मुंह से कविता फूट पड़ी जो विदीर्णता से उनकी मनःस्थिति बयान करती है।

लपे करमाची रेखा
माझ्या कुंकवाच्या खाली
पुशिसनी गेल कुंकू
रेखा उघडी पडली

पति के होते हुए माथे की बिंदिया कर्मरेखा को सुरक्षित रखती है, परंतु पति के मरणोपरांत वह रेखा बिंदी के अभाव में असुरक्षित हो जाती है।

अरे नशीब नशीब
लागे चक्कर पायाले
नशीबाचे नऊ गिर्हे
ते बी फिरत राह्यले

राहो दोन लाल सुखी
हेच देवाले मांगन
त्यात आले रे नशीब
काय सान्गे पंचागन

नको नको रे ज्योतिषा
नको माझा हात पाहू
माझ दैव माले कये
माझ्या दारी नको येऊ

आगे वह कहती है जब नवग्रह को भी घूमना पड़ रहा है तब मेरे लिए नसीब के फेरे में यह चलना कोई बड़ी बात नहीं, बस मेरी यही प्रार्थना है कि मेरे बच्चे सुखी रहे और वह ज्योतिष देखने वाले को डटकर कहती है कि तुम मेरा हाथ कदापि ना देखो, मुझे मेरा भाग्य पता है, तुम मेरे द्वार पर मत आना।

खेती व घर के काम करते–करते उन्होंने सक्षमता से अपने तीनों बच्चों का पालन पोषण किया। जीवन के विकट काल में भी उनका कविमन जीने की प्रेरणा देता रहा। छोटी–छोटी दैनिक क्रियाकलापों से, घटनाओं से, निसर्ग से (पशु, पक्षी, पेड़, नदी, इत्यादि) उन्हें प्रेम और आनंद का साक्षात्कार होता रहा। उन्हें जीवन जीने की कला, अवगत हो गई। मझला बेटा आज सोपानदेव चौधरी नाम से महाराष्ट्र में प्रख्यात साहित्यकार है। सोपान जी अपनी मां के बारे में कहते हैं – मेरी मां एक सर्व साधारण घरेलू स्त्री, सांवली, कृषकाठी के साथ साधारण नयननक्श वाली परंतु असाधारण साहित्यिक महिला थी जिन्हें पढ़ना लिखना नहीं आता था। उनकी आवाज में एक खास मिठास थी। हर रोज सुबह चक्की पर अनाज पीसते पीसते चक्की की घर–घर आवाज के साथ उनके गले से निकले सुर मिलते थे, मानो आटे के साथ कविताएं झरती थी जो प्रभात समय को नादमय बना देती थीं।

अरे! घरोटा घरोटा,
तुझ्यातून पडे पिठी
तसं तसं माझं गानं,
पोटातून येतं व्होटी...

वह चक्की को कहतीं कि तुम्हारे घर–घर के साथ अनायास ही मेरे सुर मिल जाते हैं, तुमसे आटा झरता है और मुझसे कविताओं के सुर....

बहिणाबाई की इन कविताओं का मराठी साहित्य में एक विशेष स्थान है जिसे ''जात्यावरच्या ओव्या'' के नाम से जाना जाता है।

उगवले नारायण,
उगवले गगनांत
प्रभा सोनीयाची फांके
उन्हे आली अंगणात

जब भगवान सूर्यनारायण गगन में उदित हो जाते हैं तब सोने की प्रभा जैसे आंगन में बिछ जाती है, और धूप खिलती है। आगे विस्तार से वह पृथ्वी के नैसर्गिक स्रोत के बारे में वर्णन करती है।

मोती–पोवळ्याच्या राशी,
वैभवाला नाही अंत
सुख वेचितें संसारी,
माउली मी भाग्यवंत

कविता के अंत में वह कहती है कि पंचमहाभूत के रूप में मेरे पास मूल्यवान रत्न है, मैं बहुत समृद्ध हूं और मैं भाग्यवंत हूं, भगवान मुझे ऐसे ही रखें।

कितनी सहजता से, बरबस उनके मुंह से, कविता बहती रहती है, चाहे वह घर का, खेत में बोने का, तृण निकालने का काम कर रही हों, या खाना पका रही हो। राह चलते पेड़ों को, पक्षियों को, नदी को या फिर लोगों को ही देखकर त्वरित उस प्रसंगानुसार उनके मन में कविता जन्म लेती। मायका, ससुराल, कृषि साधन, कृषि काम से जुड़े क्रिया–कलाप, कृषि–जीवन के विविध प्रसंग, तीज त्योहार, निसर्गचक्र, ऋतुचक्र, आस–पास की सृष्टि, नदी, परिचित व्यक्ति, इत्यादि उनकी कविता के विषय रहे। उन सब के प्रति इनके मन में विलक्षण आत्मीयता थी, जो कि इनकी हर कविता से प्रतीत होता है।

'असा राजा शेतकरी,
चालला रे आलवानी
देखा त्याच्या पायाखाले,
काटे गेले वाकीसनी

किसान के मन की पीड़ा, कष्ट, जिससे वह स्वयं भी जूझती थीं, उनकी बहुत सी कविताओं में झलकता है।

घर के बगीचे के फल, फूल, पेड़ों को वह नाम से पुकारती, उनसे बातें करती। गुलमोहर के फूलों से लदे पेड़ को वह फुलाजी महाराज कहतीं, आषाढ़ श्रावण के मौसम के बाद बढ़े हुए पेड़ों से कहती – ''तुम कितने बड़े हो गए हो ऐसे ही बढ़ते रहो, खुश रहो"

मानवीय जीवन के प्रति उनकी दृष्टि स्पष्ट और प्रभावी तत्वज्ञान से पूर्ण थी। जहां एक तरफ उनकी कविताओं में आशावाद और तरलता झलकती है वहीं दूसरी ओर जीवन की सच्चाई के साथ–साथ अपार कष्ट और अवहेलना की वजह से उनके काव्य में कटुता झलकती है। जीवन के प्रति हर हाल में काव्यात्मक दृष्टिकोण उनके लिए और सभी के लिए प्रेरणादाई रहा है और रहेगा।

मां की ममता का बखान यह विषय नया नहीं है। आज भी हर एक विवाहित स्त्री के मन में अपने मायके के प्रति और विशेषतः अपनी मां के प्रति एक नरम कोना रहता है। अपने एक संवाद रूपी कविता में बहिणाबाई ने बड़ी ही सशक्तता से स्त्री के मन में बसे मां के प्रति अटल भूमिका समझाई है। यह संवाद एक योगी और ससुराल में रहने वाली स्त्री के बीच में है जिसे हर पल, हर काम में अपने मायके की याद आती रहती है। एक पेड़ के नीचे योगी ध्यान में बैठे हैं और वहीं बगल में खेत में एक स्त्री काम कर रही है जो काम करते–करते गुनगुना रही है और उस गाने में वह अपने मायके का बखान कर रही है। तब योगी उससे कहते हैं कि मायके का इतना गुणगान करती रहती हो तो फिर ससुराल क्यों आई हो? उस प्रश्न पर वह स्त्री सुंदर उत्तर देती है – अरे, मैं मां बनने वाली हूं और मेरे गर्भ के सारे लक्षण ऐसे लग रहे हैं कि मेरे पेट से कन्या का जन्म होगा, मैं जो कह रही हूं वह तुम ध्यान से सुनो – मेरी बेटी को मायके का सुख मिले इसलिए यह मां ससुराल में खुशी–खुशी रहती है (माय सासरी नांदते)। यह कविता उस परिस्थिति और काल का वर्णन करने वाली है जब बचपन में ही बेटियों की शादी होती थी और उनको ससुराल में कठिन समय बिताना पड़ता था। इस कविता के अंतिम पंक्ति बहुत ही सुंदर है जो आज भी मां की भूमिका को सशक्तता से उजागर करती हैं। संवाद रूपी इस कविता का सौंदर्य प्रकार बहुत निराला व मनोरम है।

मन के बारे में उनका चिंतन बहुत ही उत्कृष्ट कोटि का है, एक अलग ही स्तर पर वह मन की गति नीति और रीति को समझती हैं, जो उनके निम्नलिखित कविता में उजागर है–

मन वढाय वढाय,
उभ्या पीकातलं ढोर ।
किती हाकला हाकला,
फिरी येतं पिकांवर ।।

मन मोकाट मोकाट,
त्याले ठायी ठायी वाटा ।
जशा वार्यालनं चालल्या,
पानावर्हल्यारे लाटा ।।

मन लहरी लहरी,
त्याले हाती धरे कोन? ।
उंडारलं उंडारलं
जसं वारा वाहादन ।।

मन जह्यरी जह्यरी,
याचं न्यारं रे तंतर
आरे इचू साप बरा,
त्याले उतारे मंतर ।।

मन पाखरू पाखरू,
त्याची काय सांगू मात?।
आता व्हतं भुईवर,
गेलं गेलं आभायात ।।

मन कितना हटी है, उसको बार–बार मना करने पर भी वह फिर से वहीं पहुंचता है जहां से उसे भगा दिया जाता है। यही मन बहुत जहरीला भी है उसका तंत्र समझ में नहीं आता, वह इतना जहरीला है कि उसके आगे बिच्छू सांप इनका जहर (जो मंत्र से उतर भी सकता है) कमतर है। उसी में आगे चलकर वह तरल हो कह उठती है – कभी–कभी यही मन सुंदर पखेरू बन के क्षणभर में गगन में ऊंचाई पर जाता है।

ऊन वाऱ्याशी खेयता,
एका एका कोंबातून
पर्गटले दोन पान
जस हात जोडिसन

इनका अध्यात्मिक मन, कोंपले जमीन से निकल आते देख कह उठता–हवा प्रकाश के साथ–साथ खेलते खेलते एक–एक कोंपले से दो–दो पत्तियां जमीन से ऐसे बाहर आती हैं जैसे वह हाथ जोड़कर परमात्मा का नमन कर रही हैं।

जब उनसे कोई पूछता कि आप इतना कष्ट करते हुए, इतनी सरलता से सतत अपने होठों पर मुस्कान रखते हुए सुंदर कविताएं कैसे कर लेती है, तो वह कहती–मेरी मां सरस्वती जी मेरे गले में बैठ मुझे बहुत सुंदर बातें सिखाती है और जीवन के बहुत सारे रहस्य मेरे साथ साझा करती है।

"माझी माय सरसोती
माले शिकवते बोली
लेक बहिनाच्या, मनी
किती गुपीतं पेरली."

जब इनकी आंखें खराब हुईं, मोतियाबिंद का ऑपरेशन हुआ तब डॉक्टर ने सफल ऑपरेशन के बाद आंखें खोलने को जब बोला तो फिर से दुनिया को देखने के बाद उनके मन से निकला कि डॉक्टर, आपने तो कमाल ही कर दिया, मेरी आंखों से तो आपने गुलबकावली के फूल खिला दिए।

उनके गाते समय किसी ने अगर उनकी कविता सुनी, याद रख कर उसको लिखी, तभी उस कविता का जतन होता, नहीं तो काल के प्रभाव में वह बिना संग्रह के बह जाती। कई बार तो बिना किसी के सुने उनकी कविताएं ऐसे ही लुप्त हो गई ।

अंत में, जीवन की गहराइयों को जानने वाली यह कवयित्री कितनी सरलता से जीवन मंत्र बताती है – जीवन केवल एक सास का अंतर ही तो है!

आला सास गेला सास
जीवा तुझं रे तंतर
अरे जगनं–मरनं
एका सासाच अंतर.....

अपनी पूरी जिंदगी कविताओं के साथ जीते जीते 1951 में नागपंचमी के दिन इनका देहांत हुआ।

आचार्य प्रह्लाद केशव अत्रे के साथ जब सोपान जी ने माताजी की कविताओं का (उनके और उनके मौसेरे भाई द्वारा लिखा हुआ) हस्तलिखित साझा किया तब वह कविताएं पढ़कर आचार्य अत्रे दिङ्मूढ हो गए और बोले यह तो असली सोना है। भूतकाल में चमक उठा और आगे भी झलकता रहेगा, इसको दुनिया के सामने

लाना ही होगा अन्यथा यह छिपा रहा तो साहित्यिक अपराध होगा। आचार्य अत्रे के प्रयास से बहिणाबाई की कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ। आचार्य अत्रे की विस्तृत प्रस्तावना के साथ यह कविता संग्रह अत्यंत प्रसिद्ध हुआ। इसके उपरांत प्रख्यात गायिका श्रीमती उत्तरा केलकर जी ने अपनी सुरीली आवाज में चुनी हुई कविताओं को गाया, कैसेट्स निर्माण हुए और थोड़ी ही काल में लोकप्रिय हो गई। इसके उपरांत अनेकानेक प्रयोगों के माध्यम से यह चिर तरुण रचनाएं लोगों तक पहुंची, पाठ्यक्रमों में उनकी सुध ली गई और देखते ही देखते वह जनमानस के मन पर छा गई। उनकी काव्य रचनाओं पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम होने लगे। मरणोपरांत उनके नाम से जलगांव में "कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय" की स्थापना की गई। दूरदर्शन पर उनके नाम से लघुपट भी चित्रित हुए। उनकी कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद "Fragrance of the Earth" कविता संग्रह के रूप में बहुआयामी लेखिका श्रीमती माधुरी शानबाग जी ने प्रकाशित किया। इसके पूर्व में प्राध्यापक पुरोहित जी ने कुछ गिने–चुने कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद किया था।

उनके नाम से एक app भी चलता है। उनके सम्मान में "बहिणाबाई चौधरी प्राणी संग्रहालय" नाम से प्राणी संग्रहालय पुणे में स्थापित है। मरणोपरांत उन्हें कई सम्मान मिले, उनका घर संग्रहालय के रूप में सामाजिक धरोहर बन गया है। बहिणाबाई की कविताओं पर अनेक लेखकों, संपादकों तथा प्रकाशकों द्वारा अनेक रचनाएं उपलब्ध है। अगर प्रत्येक कविता का गहन विश्लेषण किया जाए तो हर एक कविता पर एक लघु शोध प्रबंध लिखा जा सकता है। कुछ कविताएं मैंने बचपन में अपने सिलेबस में पढ़ी हुई है, जो मेरे मस्तिष्क में अभी भी तरोताजा है और जीवन पथ में अनेकों बार उन कविताओं के अंश का स्मरण हुआ है, संदर्भ आया है।

आशा करती हूं कि बहिणाबाई की इस साहित्य प्रवास से हम सभी प्रेरणा ले। समय–समय पर बहिणाबाई की कविताओं में हम झांकते रहे और अपने मन को सिंचते रहें।

–अंजलि कुलकर्णी।

प्रेम

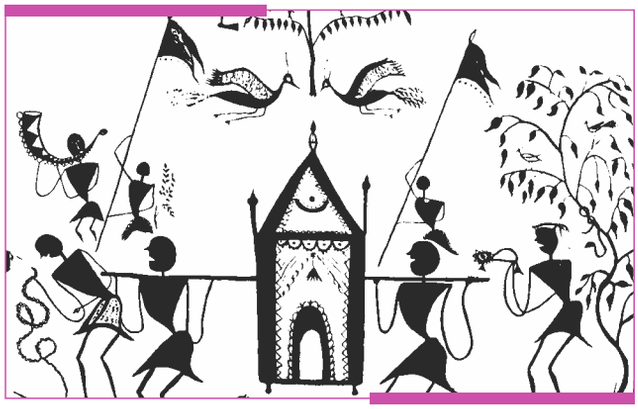

वो दोनों बहुत अर्से से एक दूसरे के साथ थे
ये तो नहीं जानता कब से
मैंने एक दिन घबरा के धीरे से पूछा था उससे
''याद नहीं'' उसने कहा था

अक्सर आँखों की कनखियों से लोग उन्हे देखा करते थे
कुछ लोग मुस्कुरा कर दूसरी ओर चेहरा घुमा लेते थे
कुछ एक दूसरे के हाथ को धीरे से दबाते थे इन्हे देखकर
और कुछ उन्हे देखकर मुँह बिचकाते थे सामने से,
और घर जाकर दोबारा मुँह बिचकाते थे

अभी परसों ही उनकी लाशें मिली थी एक घर में
हाँ
सही सुना आपने
लाशें

एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे दोनों
चहरे पर बड़ी ही मीठी सी मुस्कान थी
संतोष सा था
जाड़े की किसी रात में जैसे
बस एक दूसरे में सिमट गए जान पड़ते थे

दोनों के एक एक हाथ में एक एक खंजर था
और दूसरे हाथ में गुलाब का फूल

पसीना आँसू और रक्त

इन की एक एक धारा
आपस में मिल रही थी

मैंने बस उस त्रिवेणी में

अपनी उँगली डूबा ली
और लौट आया

जाने क्या हुआ होगा?

अजनबी

वे बहुत देर से एक दूसरे को देख रहे थे
कनखियों से किसी को एक बार में पहचानना

कितना मुश्किल होता है
इस बात पर शायद अब दोनों ही राज़ी होंगे

ख़ैर

एक दूसरे से नज़र बचा भी रहे थे
और एक दूसरे को देखने की हसरत भी थी

काफ़ी अरसा हुआ
मन में ये सोच रहे होंगे
एक ज़माने में गहरा राब्ता था इनके बीच

फ़िर जाने क्यों
एक मोड़ पर
दोनों नें अपनी अपनी राह ले ली
एक अदद अलविदा भी नहीं हुआ

आज के जैसे ही उस दिन भी नज़र बचा कर
नज़रों से ओझल हो गए थे
उस दिन भी मन में आज ही की तरह एक चोर था

यक़ीनन,
आज यहाँ मुलाक़ात होगी
ये पता होता तो,
शायद आज भी टाल जाते

तभी अचनाक
बेख़याली में
आँखों की झड़प हो ही गयी

कतराते हुए एक दूसरे की तरह बढ़े
बड़े ही पेशोपेश में दुआ सलाम हुयी

हाथ मिलाये गए
हाथों के खुरदरेपन ने
ज़रूर गुज़रे हुए लम्हों का हिसाब पेश किया होगा
तभी हाथ खींच लिए गए

उन लम्हो ही खिसियाहट
खुद से थी ये सामने वाले से
ठीक ठीक कहा नहीं जा सकता

पर एक फ्लैशबैक सा चल रहा था
कहीं ज़हन में ढेरों हिसाब– किताब
धड़ाधड़ हो रहे थे

''आप कैसे हैं?''
जितना खोखला सवाल शायद
इससे पहले नहीं पूछा गया किसी से

कितने ही शिकवे – शिकायतें
चाय की चुस्कियों में लबों तक आ आकार लौटते रहे

वो बर्फ़ जो गुज़रे दिनों जमती रही थी
इतनी आसानी से कहाँ पिघलने वाली थी

चलिए फिर मिलेंगे
झेंपते हुए कहा
और उल्टे पैर
लौट चले

कितना आसान है न?
गहरे से गहरे रिश्तों का, यूं ही अजनबी हो जाना?

डॉ अर्क वर्मा, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ, आई आई टी कानपुर

तकनीकी लेख

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का हमारे समाज पर प्रभाव

तकनीकी के विकास का हमेशा हमारे समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। सभ्यता के उद्भव के साथ ही समाज पर तकनीकी के बदलावों का प्रभाव दिखाई देता रहा है, हर नए अविष्कार का लोगों की जीवन शैली पर दृष्टिगत प्रभाव पड़ा है। तकनीकी के बदलने से लोगों के रहन–सहन, व्यवहार, गाँव, शहर और उनकी संस्कृति में बदलाव हुए हैं। तकनीकी विकास के साथ कई तरह की सभ्यताओं का उदय और पतन भी हुआ है, विशेषरूप से सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने लोगों को पहले से अधिक जागरूक बनाया है और उनके जीवन स्तर में अकल्पनीय बदलाव किया है। यह सूचना प्रौद्योगिकी ही है, जिसने एक नए संपन्न वर्ग को जन्म दिया है जो आज एक बहुत बड़ी आबादी को रोजगार दे रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ हमारे पढ़ने, लिखने और सीखने के तरीके ही बदल गए हैं। इंटरनेट के अविष्कार और विकास ने आज सब कुछ ही ऑनलाइन कर दिया है। अगर हम पिछले कुछ दशकों को देखें तो पाएंगे कि इंटरनेट ने हमारे जीवन और समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं।

जब से मानव इस धरती पर आया है तभी से उसने एक दूसरे को सूचना आदान प्रदान करने के लिये अनेकों तरीके अविष्कार किये हैं जैसे– पहले धुएं से, फिर पक्षिओं और जानवरों द्वारा, उसके बाद डाक, टेलीफोन/मोबाइल, ई–मेल, व्हाट्सअप, मैसेंजर, वीडियो कालिंग, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इत्यादि।

सूचना प्रौद्योगिकी में क्रान्तिकारी बदलाव शुरू हुआ, 1931 ई. में विद्युत टेलीग्राफ के अविष्कार के साथ, 1876 ई. में महान वैज्ञानिक ग्राहम बेल द्वारा टेलीफोन का पेटेंट कराया गया और इससे पहला संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा गया। इस घटना के 30–40 साल के भीतर ही टेलीफोन हमारे घर और कार्यालयों के लिए एक अति महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य यन्त्र बन गया, लेकिन एक स्थान पर स्थिर होने के कारण, इससे निजता की सुरक्षा और सुविधानुकूल उपयोग मुश्किल हो रहा था। इसके बाद 1973 ई. में मोटोरोला कंपनी ने मोबाइल फोन का निर्माण किया, जिसने सूचना प्रौद्योगिकी को हमेशा के लिए बदल के रख दिया और उसके निरंतर विकास के द्वार खोल दिए। इसी समयावधि में अमेरिका में एक और क्रांतिकारी अविष्कार हो रहा था जिसे हम "इंटरनेट" कहते हैं, इंटरनेट के विकास का श्रेय वैसे तो बहुत से साइंटिस्ट और इंजिनियर्स (अभियंताओं) को जाता है जिनके सतत प्रयास से 1969 ई. से 1983 ई. के बीच इसका उत्तरोत्तर विकास हुआ, परन्तु प्रमुख रूप से इसके जनक के रूप में हम अमेरिकी वैज्ञानिक "लियोनार्ड क्लेनरॉक, बॉब कान और विन्ट सेर्फ" को याद करते हैं, उन्होंने एक ऐसे नेटवर्क के ऊपर काम किया जो आगे चलकर इंटरनेट के रूप में जाना गया।

हमको अब यह यह जानना जरूरी है कि आखिर ये इंटरनेट है क्या? दरअसल इंटरनेट एक प्रकार से आपस में जुड़े हुए कंप्यूटर/मोबाइल की वैश्विक संरचना या जाल है, या इंटरनेट को नेटवर्क्स का एक नेटवर्क कहा जा सकता हैं, जिससे पब्लिक, प्राइवेट, बिजनेस, एकेडमिक और सरकारी नेटवर्क्स लोकल से ग्लोबल स्तर तक इलेक्ट्रॉनिक, वायरलेस या फिर ऑप्टिकल नेटवर्किंग टेक्नोलॉजी के द्वारा जुड़े होते हैं। इंटरनेट में दो या दो से अधिक कंप्यूटर को जोड़ने के लिए इंटरनेट प्रोटोकॉल (IP) एवं सूचना आदान प्रदान के लिए ट्रांसमिशन कन्ट्रोल प्रोटोकॉल (TCP) का प्रयोग किया जाता है। TCP डाटा को भेजने से पहले पैकेट्स में डिवाइड करता है और रिसीव करने से पहले असेम्ब्ल करता है। दूसरी तरफ IP एक यात्रा संयोजक की तरह इन्फॉर्मेशन या फिर कहा जाये तो डाटा के मूवमेंट को स्टार्ट पॉइंट से लेकर एन्ड पॉइंट तक पहुँचाने का काम करता है। वैसे तो TCP/IP, के भी पहले फाइल ट्रान्सफर प्रोटोकॉल (FTP) और नेटवर्क कन्ट्रोल प्रोटोकॉल (NCP) जैसे कुछ प्रोटोकॉल्स का विकास हुआ परन्तु इनमे से कोई भी उतना सक्षम नहीं था जितना कि TCP/IP इसीलिए इनका तेजी से विस्तार हुआ। साल 1978 में एक भारतीय मूल के अमेरिकन वी ए शिवा अय्यदुरई ने एक कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार किया जिसे 'ईमेल' कहा गया इसमें इनबॉक्स, आउटबॉक्स, फोल्डर्स, मेमो, अटैचमेंट्स आदि सभी सुविधा होने के कारण ये तेजी से सन्देश पहुँचाने के लिए एक सुगम माध्यम बन गया। आज ये फीचर हर ई–मेल सिस्टम के हिस्से हैं। भारत में आम जन मानस के लिए इंटरनेट की शुरुआत 15 अगस्त 1995 को हुई । देश में इस सुविधा को विदेश संचार निगम लिमिटेड (VSNL) ने कोलकाता में शुरू किया था ।

अब हम संपर्क/वार्तालाप के विभिन्न माध्यमों को समझने की कोशिश करेंगे। समय के साथ सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा बहुत से यन्त्र और तंत्र विकसित हुए जिनका जिक्र हमने संक्षिप्त रूप मे ऊपर करने की कोशिश की है परन्तु अब हम विशेष रूप से उन्ही माध्यमों की चर्चा करेंगे जो आजकल मुख्यतः उपयोग में लाये जाते हैं–

मोबाइल फोन/स्मार्टफोन

यह एक ऐसा यन्त्र है जिसके माध्यम से आज हम दुनिया में कहीं भी एक जगह से दूसरी जगह न केवल बातचीत और लिखित संदेश भेज सकते हैं बल्कि आज इंटरनेट की मदद से कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स के द्वारा एक त्वरित सन्देश भी एकल और सामूहिक रूप से भेज सकते हैं। वीड़ियो कालिंग के विकास के साथ तो हम एक स्थान पर बैठ कर कही भी किसी से लाइव बातचीत कर सकते हैं। संक्षेप में कहें तो मोबाइल फोन/स्मार्टफोन आज जनसामान्य की एक भौतिक

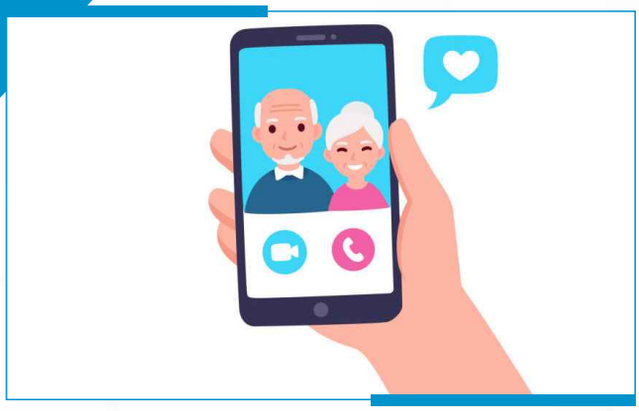

जरूरत बन गया है, उसके बिना रहना आज अकल्पनीय सा लगता है। दुनिया के लगभग प्रत्येक व्यक्ति तक किसी न किसी रूप में अब इस यन्त्र की पहुँच हो चुकी है।

ई–मेल

आज हस्तलिखित पत्राचार का चलन बहुत कम हो गया है और उसकी जगह ई–मेल ने ले ली है क्योंकि यह एक त्वरित सेवा है। आप कुछ ही सेकंड में कोई भी सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचा सकते हैं। अगर हम व्यवसायिक प्रतिष्ठानों की बात करें तो आज वहां अपने कार्मिकों और ग्राहकों से संवाद करने या उनको सूचना देने के लिए ई–मेल का ही उपयोग होता है। सभी शैक्षिक संस्थान भी आजकल अपने विद्यार्थियों के अभिभावकों से संपर्क करने के लिए या विद्यार्थियों को सूचना/सन्देश देने के लिए भी ई–मेल का प्रयोग करते हैं। ई–मेल से सूचना के आदान प्रदान में समय, धन और पेपर की बचत होने के कारण, यह आजकल लगभग सभी प्रकार के संस्थानों/प्रतिष्ठानों या संस्थाओं द्वारा संपर्क करने/सूचना भेजने का एक प्रमुख विकल्प बन गया है।

ऑनलाइन बातचीत

सभी ई–मेल सुविधा देने वाली कंपनियाँ ऑनलाइन चैट की सुविधा भी प्रदान करती हैं। यह अपने विचारों, सूचनाओं, भावनाओं को एक दूसरे के साथ विमर्श करने का एक बहुत आसान, सुगम्य और सरल तरीका है। इस सुविधा के द्वारा हम बिना किसी मोबाइल के भी कम्प्यूटर/लैपटॉप की मदद से वर्तमान समय में ही दूसरों से बातचीत/विमर्श कर सकते हैं। इसके साथ ही अपनी व्यक्तिगत सूचनाओं को भी एक दूसरे से साझा करने का भी यह एक सरल तरीका है।

दृश्य–श्राव्य (वीडियो) कालिंग (बातचीत)–

वीडियो कालिंग सुविधा के प्रादुर्भाव के बाद, आज हम सभी को दुनिया में बैठे किसी व्यक्ति/व्यक्तियों से किसी भी समय अपनी सुविधानुसार बिल्कुल वैसे ही बातचीत/विमर्श कर सकते हैं जैसे कि हम आमने–सामने बैठकर करते है। सूचना प्रौद्योगिकी की यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। इस सुविधा के जन्म के साथ ही हमारे सीखने, पढ़ने, काम करने के तरीके पूर्णरूप से परिवर्तित हो गए हैं। सोचिये कि अगर उपरोक्त प्रौद्योगिकी का विकास न हुआ होता तो COVID–19 (एक ऐसी महामारी जिसने लगभग पूरी दुनिया को एक लम्बे समय के लिए घरों में कैद कर दिया था) के समय हमारे बच्चे कैसे अपनी शिक्षा जारी रख पाते और कैसे हम अपने कामकाज को ही कर पाते। उपरोक्त तकनीकों के माध्यमों से भी हम सभी एक दूसरे से जुड़े थे और इतने कठिन समय को भी हँसी खुशी निकाल पाए, नहीं तो बहुत मुश्किल हो जाता ।

ब्लॉग्स

यह एक ऐसा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जहाँ हम अपने विचारों, भावनाओं, ज्ञान या किसी विषय के बारे अपनी जानकारी को सामूहिक रूप से साझा करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी की यह विधा बहुत ही प्रचलन में आई है और खूब चर्चित भी रही है। कई प्रकार की औद्योगिक इकाइयों ने, सूचना प्रौद्योगिकी की इस विधा को अपने प्रचार–प्रसार और सूचना देने का एक प्रमुख हथियार बना लिया है। आज कोई भी सामान्य या विशिष्ट व्यक्ति इस विधा को अपनी जानकारी, विचार या शिकायत प्रगट करने के लिए उपयोग कर रहा है। इस विधा में किसी भी लिखित या चित्रात्मक सूचना को एक चित्र के रूप में ऑनलाइन प्रदर्शित किया जाता है।

सोशल नेटवर्किंग (सामाजिक जन–संपर्क/सूचना)–

पिछले दो दशकों में इंटरनेट आधारित बहुत से सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उद्भव हुआ है । ये सोशल नेटवर्किंग साइट्स, एक ऐसा प्लेटफार्म हैं, जो हमको सामूहिक रूप से जुड़ने, विचार/जानकारी साझा करने और समान रुचि रखने वाले लोगों को आपस में बातचीत करने और फोटो, वीडियो, फाइल आदि शेयर करने की अनुमति देते हैं, आज हम कई एप/वेबसाइट्स जैसे– फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लिंक्डइन या अन्य ज्ञानवर्धक वेबसाइट का इस्तेमाल करते हैं। ये ऐसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म हो गए है, जिनका उपयोग लोग विचारों और व्यक्तिगत रुचि, पृष्ठभूमि, त्वरित जुड़ने या व्यवसायिक गतिविधियों के बारे में जानकारी देने या उनको विकसित करने के लिए करते हैं। त्वरित संदेश भेजने, सामूहिक रूप से अपने विचार प्रकट करने या अपना कोई भी छायाचित्र या चलचित्र एक या बहुत से लोगों तक पहुँचाने के लिए कई सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट मौजूद है। व्यक्तिगत स्तर पर विचार साझा करने के लिए दुनिया भर में खरबों लोग सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से जुड़े है, लेकिन अधिकांश लोग ज्ञान प्राप्त करने या मनोरंजन के उद्देश्य से और अपने फैमिली, फ्रेंड्स के साथ कम्युनिकेशन करने के लिए "सोशल नेटवर्किंग" का उपयोग करते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी में तकनीकी विकास का हमारे जीवन पर प्रभाव

मानव सभ्यता के विकास के साथ साथ हमारे जन संपर्क/सूचना आदान–प्रदान के तरीके भी निरंतर विकसित हुए हैं। सबसे पहले नुकीले पत्थर और बाद में नुकीली धातु से पत्थरों पर ही चित्रों या शिलालेखों द्वारा सूचनाओं या संदेशों का प्रचार प्रसार किया जाता

था, फिर नुकीली लकड़ी या पक्षी के पंखों से कपड़े पर लिखकर, फिर पेपर–पेन, प्रिंटिंग प्रेस, टाइप राईटर, टेलीग्राफ, कंप्यूटर, पेजर, मोबाइल, लैपटॉप, टेबलेट से स्मार्ट फोन तक हमारे सूचना प्रौद्योगिकी में लगातार विकास होता रहा है, जो आज भी जारी है। इंटरनेट के आविष्कार के बाद ई–मेल और संदेश भेजने के त्वरित तरीके ने शायद सूचना प्रौद्योगिकी में बदलाव को सर्वाधिक प्रभावित किया। प्रिंटिंग प्रेस, कंप्यूटर के आने से पहले किसी प्रलेख/दस्तावेज की प्रतिलिपि बनाने के लिए हमको उसको फिर से लिखना या टाइप करना पड़ता था जो कि एक बहुत मुश्किल और खर्चीला कार्य था इसी प्रकार कहीं भी किसी को सन्देश भेजने के लिए हमको उसको डाक द्वारा भेजना पड़ता था, जिसको पहुंचने में बहुत अधिक समय और पैसा खर्च करना पड़ता था। टेलीग्राम आने के बाद भी हमको शब्द सीमा में बंध कर ही अपना संदेश भेजना होता था। आज देखें तो ये सब अप्रासंगिक सा लगता है, आज कंप्यूटर और इंटरनेट ने सभी प्रकार के लेखन, चित्रकारी, त्रुटि सुधार प्रक्रिया या लेखाचित्र बनाने की प्रक्रिया को अत्यधिक सरल और कम खर्चीला बना दिया है। इंटरनेट के द्वारा आज संदेश/सूचना भेजने और प्राप्त करने के लिए दूरी कोई बाधा नहीं है। कोई भी संदेश या लिखित सामग्री दुनिया के किसी कोने में तुरंत भेजी जा सकती हैं। संक्षेप में कहें तो तकनीकी विकास ने आज हमारे समय और पैसे की बचत का एक सरल रास्ता खोल दिया है।

आज के समय में तकनीकी विकास की पहुँच बड़े शहरों से लेकर छोटे से छोटे गाँव तक है, जिससे आज हमको दूर–दराज के क्षेत्रों में भी बहुत सी सुविधाएं पहुचाने में मदद मिल रही है। लोग गूगल, यूट्यूब और अन्य एप्स/वेब साइट्स की मदद से नयी–नयी विधाएं सीख रहे हैं और अपने हुनर को जन–जन तक पहुंचा भी रहे हैं, जिससे कि रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं। इंटरनेट के रूप में आज सामान्य आदमी के पास विश्व के हर कोने तक पहुँच बनाने का एक विकल्प मौजूद है, जिसकी मदद से बहुत सी प्रतिभाओं को वैश्विक मंच मिल जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने जन–जन के जीवन को न केवल छुआ है बल्कि एक चमत्कारिक रूप से बदल कर रख दिया है। आज न केवल हर व्यक्ति ,संस्था या व्यवसायिक गतिविधि सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से प्रभावित है, बल्कि हमारे जनप्रतिनिधि चुनने के तौर तरीके भी बदल गए हैं। आज संपर्क के लिए आपको घर–घर पर दस्तक देकर अपने कार्य और योजनाओं को बताने की आवश्यकता नहीं है बल्कि आप अपने ऑफिस/घर में बैठकर भी जन–जन तक पहुँच सकते हैं और उनको अपने कार्य और योजनाओं की जानकारी दे सकते हैं। यही कारण है कि आज पूरे विश्व में लगभग हर राजनैतिक पार्टी न केवल सोशल मीडिया/इंटरनेट की ताकत को समझ रही है बल्कि जन–मानस को प्रभावित करने के लिए उसका भरपूर प्रयोग भी कर रही है।

जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही तकनीकी अविष्कार के भी सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हमारे समाज और जीवन पर पड़ते हैं। अब हम सूचना प्रौद्योगिकी में पिछले दशकों में हुए विकास के दोनों पहलुओं को समझते हैं–

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के सकारात्मक प्रभाव –
तकनीकी के विकास को हमें हर उस सीमा तक प्रोत्साहित करना चाहिए जहाँ तक हमें उसके सकारात्मक प्रभाव दिखें। तकनीकी विकास ने वैसे तो जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव प्रदर्शित किये हैं जैसे –समय की बचत, त्वरित सामूहिक संदेश भेजना, दूर दराज के क्षेत्रों तक पहुँच बनाना, हर क्षेत्र/व्यक्ति/कला को वैश्विक पहचान बनाने में मदद, शिक्षा, शैक्षिक सामग्री और शिक्षण के तौर तरीकों को सरल/सुगम्य बनाने में, अपने नए/पुराने मित्रों, संबंधियों और परिवारिकजनों से दूरी की बाधा को मिटाकर उनसे संपर्क को उत्तम और सरल बनाने में, दुनिया की किसी सामग्री, वस्तु, कला, इतिहास, संस्कृति, भौगोलिक, राजनैतिक या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी को हर किसी की पहुँच में लाने में इत्यादि, इत्यादि। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के हमारे जीवन पर सकात्मक प्रभाव अनगिनत हैं, जिनसे आज हमारा जीवन पूर्णतः बदल गया है। आज हम जो जीवन जी रहे हैं ऐसा पिछले 50 साल पहले कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था और शायद आने वाले 50 साल बाद सूचना प्रोद्योगिकी में बदलाव, हमारे जीवन को किस तरह प्रभावित करेंगे उसकी कल्पना हम आज नहीं कर सकते हैं। सूचना प्रोद्योगिकी के विकास ने आज हमारे खरीददारी (शॉपिंग) के तरीके भी बदल दिए हैं। आज हम छोटे से छोटे घरेलू सामान से लेकर बड़ी से बड़ी वस्तु/मशीन घर बैठकर ऑनलाइन शॉपिंग के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

एक अतिमहत्वपूर्ण बदलाव हमारे स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण देखने को मिलता है। आज हमको टेलीमेडिसिन के उपयोग द्वारा दूर–दराज और दुर्गम क्षेत्रों तक स्वास्थ्य/चिकित्सा सुविधाओं को पहुँचाना संभव हुआ है। कोरोना काल की अति–विपरीत परिस्थिति में भी लोगों को हम स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने में समर्थ हो पाए इसका बहुत बड़ा श्रेय सूचना प्रौद्योगिकी में हुए तकनीकी विकास को जाता है। स्वास्थ्य/चिकित्सा के क्षेत्र में सीमित साधनों द्वारा हम

टेलीमेडिसिन की मदद से ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। आज के समय बहुत से वर्चुअल लैब/हॉस्पिटल (चिकित्सालय) और हेल्थ एटीएम भी अस्तित्व में आ चुके हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में हुए तकनीकी विकास ने हमारे जीवन में ऊपर वर्णित प्रभावों के भी अलावा अन्य अनगिनत और अकल्पनीय सकारात्मक प्रभाव डाले हैं, जो समय–समय पर हमको लाभान्वित करते रहतें हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के नकारात्मक प्रभाव–

सूचना प्रौद्योगिकी ने जहाँ बहुत से नए रोजगारों को जन्म दिया है, वही बहुत से रोजगारों पर संकट भी खड़ा कर दिया है। वर्तमान युग में किसी भी कार्यालय संस्था तथा उपक्रम में अधिकांश कार्य कंप्यूटर और टेक्नोलॉजी के द्वारा ही किए जाने लगे हैं। जिस कार्य को पहले कई व्यक्ति मिलकर करते थे, आज उस कार्य को केवल एक व्यक्ति कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर की मदद से कर देता है, जिसके कारण बेरोजगारी में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। कंप्यूटर या ऑनलाइन प्लेटफोर्म पर हम जो भी कार्य करते हैं, या किसी भी प्रकार के फॉर्म इत्यादि भरते हैं, तो वह सभी डाटा और सूचनाएं किसी न किसी अवस्था में स्टोर हो जाती हैं, जिससे हमारी निजी जानकारियां व बैंक से संबंधित जानकारियां गोपनीय रखना एक चुनौती बन गयी है। सूचना प्रौद्योगिकी ने जहाँ सभी कुछ सरल बनाया है, वहीं इसके साथ बहुत से घोखा–धड़ी के नए तरीकों का भी उद्भव हुआ है और इससे आज बहुत से लोग प्रभावित हो रहे हैं। इस प्रकार आज रिकॉर्ड कागजों में ना रखकर मैग्नेटिक माध्यम से कंप्यूटर में रखा जाता है। यदि कंप्यूटर सिस्टम में वायरस आ जाए या अन्य खराबी आ जाये तो पूरा का पूरा डेटाबेस कुछ ही सेकंड में नष्ट किया जा सकता है। यदि डेटाबेस का बैकअप नहीं रखा गया हो तो पूरे के पूरे रिकार्ड्स नष्ट हो जाते हैं।

उपरोक्त खतरों के साथ वर्तमान में अधिकांश व्यक्ति कंप्यूटर एवं स्मार्ट फोन के आदी हो चुके हैं और ये उपकरण उनकी दिनचर्या के अभिन्न अंग बन चुके हैं। हर व्यक्ति दिमागी कार्यों के लिए कंप्यूटर या स्मार्टफोन का उपयोग करता है। जिस कारण गणितीय क्रियाओं को बिना टेक्नोलॉजी के करना मुश्किल होता जा रहा है। इसी के साथ कागजी किताबों को पढ़नें का चलन भी कम होता जा रहा है, जो दिमागी कार्य क्षमता को प्रभावित कर रहा है। टेक्नोलॉजी की बढ़ती आदत का सबसे बड़ा प्रभाव हमारे दिमाग, स्वास्थ्य और सामाजिक ताने–बाने पर पड़ रहा है। आज लोग एक घर या ऑफिस में रहते हुए भी साथ में नहीं होते हैं। सभी अपने–अपने मोबाइल/लैपटॉप/कंप्यूटर या टैबलेट पर व्यस्त रहते हैं, लगातार स्क्रीन देखने के कारण बच्चे या बड़े सभी चिड़चिड़े होते जा रहे हैं। जिससे परिवारों और कार्यालयों का माहौल ही बदल रहा है। लोग मानसिक तनाव और विभिन्न शारीरिक समस्याओं के शिकार हो रहे हैं। परिवारों के बिखरने का भी एक कारण इंटरनेट आधारित वेबसाइट और एप्स बन रहे है। इंटरनेट एडिक्शन (इंटरनेट की लत) किसी नशे की लत की तरह हीं है। जैसे किसी नशे की लत लगने से इंसान अपना दिमागी संतुलन खो बैठता है, ठीक वैसे ही

इंटरनेट के अत्यधिक इस्तेमाल से इंसान अपनी ही दुनिया में व्यस्त रहता है और आस पास क्या हो रहा है, उसे उससे कोई मतलब नहीं रहता है। जिसका सीधा प्रभाव उसकी मानसिक स्थिति और उसके निजी जीवन के रिश्तों पर पड़ता है।

आजकल हम बच्चों को घंटों फोन में ऑखें गड़ाए गेम्स खेलते/सोशल वेबसाइट्स का इस्तेमाल करते देखते हैं। अगर ऐसे बच्चों (जिनको कि इनकी लत लग चुकी है) को हम रोकते हैं तो वे अत्यधिक गुस्सैल और चिड़चिड़े हो जाते है। शोध से पता चला है कि इंटरनेट के अत्यधिक इस्तेमाल से व्यक्ति के डिप्रेशन (अवसाद) के शिकार होने का खतरा भी बढ़ जाता है। विशेषरूप से विद्यार्थियों और किशोरों में यह स्थिति बहुत खतरनाक है। ज्यादा समय ऑनलाइन बिताने का सीधा असर विद्यार्थियों की पढ़ाई पर दिखाई देता है। जहाँ इंटरनेट का असली मकसद विद्यार्थियों/लोगों को उचित व बेहतर सामग्री उपलब्ध करवाना था वहीं इसके दुरुपयोग के कारण यह कई नयी बीमारियों और अवसाद का कारण बन रहा है।

अतः हमको तकनीकी के सदुपयोग और दुरूपयोग में अंतर समझना होगा क्योंकि आज के युग में इंटरनेट/मोबाइल के बिना जीवन की कल्पना भी शायद मुश्किल दिखाई देती है। दुनिया के साथ कदम से कदम मिलकर चलने के लिए हमको सूचना प्रौद्योगिकी के इन नवाचारों को आत्मसात करना जरूरी है। नहीं तो भौतिक/आर्थिक उन्नति की इस दौड़ में हम बहुत पीछे रह सकते हैं । इसीलिए आज ये बहुत जरूरी हो गया है कि हम ये समझें और अपने बच्चों और विद्यार्थियों को भी समझाएं कि कब और कैसे हमको अपने आर्थिक और सामाजिक स्तर को उच्चतम बनाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के इन नवाचारों को उपयोग करना चाहिए और कब नहीं, और एक समय पर कितनी देर के लिए अधिकतम हमको स्क्रीन साझा करना चाहिए। नौनिहाल/छोटे बच्चों को जितना हो सके स्क्रीन से दूर रखना होगा, जिससे उनमें बचपन से ही इनकी लत न लगे। जब सभी लोग तकनीकी के अच्छे–बुरे दोनों पहलुओं को भली–भांति समझेंगे, तो उसका सदुपयोग भी उचित तरीके से कर पाएंगे और तभी ही टेक्नोलॉजिकल नवाचारों से अपने आने वाले भविष्य को उज्जवलतम बना पाएंगे।

उपेन्द्र कुमार पराशर
तकनीकी अधीक्षक
भौतिकी विभाग

विरासत

भारत की प्रमुख महिला साहित्यकार
महादेवी वर्मा

'आधुनिक मीरा' के नाम से प्रसिद्ध महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, सन् 1907 ई० को होली के दिन फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द सहाय इन्दौर के एक कॉलेज में अध्यापक थे तथा माता सरल हृदया, धर्म–परायणा महिला थीं। महादेवी बड़ी कुशाग्रबुद्धि बालिका थीं और बचपन से ही माँ से रामायण–महाभारत की कथाएँ सुनते रहने के कारण इनके मन में साहित्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो गया था। फलतः मौलिक काव्य–रचना इन्होंने बहुत छोटी आयु से आरम्भ कर दी थीं। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह रूपनारायण वर्मा के साथ हो गया था, किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। इनके पति डॉक्टर थे, परन्तु दाम्पत्य जीवन में इनकी रुचि नहीं थी। इनके जीवन पर महात्मा गांधी का और कला–साहित्य साधना पर कवीन्द्र रवीन्द्र का प्रभाव पड़ा। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० किया। इन्होंने नारी स्वातन्त्र्य के लिए संघर्ष किया और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए नारियों का शिक्षित होना आवश्यक बताया। कुछ वर्षों तक महादेवी जी उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की मनोनीत सदस्या रहीं। दर्शन, संगीत तथा चित्रकला में इनकी विशेष अभिरूचि थी। इनकी काव्यात्मक प्रतिभा के लिए इन्हें 'सेकसरिया' एवं 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सन् 1983 ई. में महादेवी जी को इनके काव्य ग्रंथ 'यामा' पर 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ और इसी वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने इनको 'भारत भारती' पुरस्कार देकर इनकी साहित्यिक सेवाओं का सम्मान किया। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की उपकुलपति पद पर भी आसीन रहीं। इनका देहावसान 11 सितम्बर, 1987 ई. को हुआ।

महादेवी जी आधुनिक हिंदी साहित्य के निर्माताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी हैं। प्रसाद, पन्त, निराला तथा महादेवी वर्मा– छायावाद युग के इन चार महान कवियों को बृहत् चतुष्टयी के नाम से जाना जाता है। करुणा एवं भावुकता इनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। जहाँ एक ओर इनके काव्य में इन भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई, वहीं दूसरी ओर इनकी ये भावनाएँ सम्पर्क में आनेवाली पीड़ित एवं दुःखी व्यक्तियों को भी प्रेम एवं सहानुभूति से प्रभावित करती रहीं। इनके द्वारा रचित काव्य में रहस्यवाद, वेदना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कोमल तथा मर्मस्पर्शी भाव मुखरित हुए हैं।

कृतियां–

निबन्ध संग्रह – क्षणदा, श्रृंखला की कड़ियाँ, अबला और सबला, साहित्यकार की आस्था, संकल्पिता आदि। रेखाचित्र – अतीत के चलचित्र एवं स्मृति की रेखाएँ । संस्मरण– पथ के साथी, मेरा परिवार, स्मृति चित्र एवं संस्मरण । भाषण संग्रह – 'संभाषण'। सम्पादन– 'चाँद' पत्रिका और 'आधुनिक कवि' का विद्वत्ता के साथ सम्पादन कार्य किया। आलोचना– 'हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य' तथा 'यामा' और 'दीपशिखा' की भूमिकाएं । काव्य रचनाएँ – नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, यामा, प्रथम आयाम एवं अग्निरेखा आदि ।

साहित्य को इनकी देन मुख्यतया एक कवि के रूप में है, किन्तु इन्होंने प्रौढ़ गद्य लेखन द्वारा हिंदी भाषा को सजाने–संवारने तथा अर्थ–गाम्भीर्य प्रदान करने में योगदान दिया है । खड़ीबोली की कर्कशता को, छायावादी कवियों के कुसुम कोमल, भावुक और कल्पनाशील व्यक्तित्व ने समाप्त कर उसे ब्रजभाषा जैसे माधुर्य से संपन्न किया था। कवयित्री ने अपने व्यक्तित्व की सहज करुणा, संवेदनशीलता और संगीतबोध के द्वारा उसमें अभूतपूर्व माधुर्य तथा मानव और प्रकृति जगत के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्पन्दनों को अभिव्यक्त करने की क्षमता भर दी। तत्सम शब्दावली गीतों को एक गरिमा से अभिभूत कर देती है। कलापूर्ण चित्रात्मकता इनके गीत शिल्प का एक प्रमुख अंग है। अलंकार और लक्षणा तथा व्यंजना का चमत्कार इनके काव्य में प्राप्त होता है। हिंदी गीतों की मधुरतम कवयित्री के रूप में महादेवी वर्मा अद्वितीय गौरव से मण्डित हैं।

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होइ।।

व्याख्याः सारे संसारिक लोग पुस्तक पढ़ते–पढ़ते मर गए कोई भी पंडित (वास्तविक ज्ञान रखने वाला) नहीं हो सका। परंतु जो ढाई अक्षर के प्रेम शब्द को पढ़ लिया अर्थात जिसने प्रभु से, जीवमात्र से प्रेम कर लिया, उसने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया। वास्तव में वही पंडित है।

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, सन् 1904 को इलाहाबाद जिले में स्थित निहालपुर मोहल्ले के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता रामनाथ सिंह सुशिक्षित और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। बहुत छोटी अवस्था से ही इन्हें हिंदी काव्य से विशेष प्रेम था जो बाद में जाकर पल्लवित हुआ। 1913 ई. में मात्र नौ वर्ष की आयु में सुभद्रा जी की पहली कविता प्रयाग से निकलने वाली पत्रिका 'मर्यादा' में प्रकाशित हुई थी। यह कविता 'सुभद्राकुँवरि' के नाम से छपी एवं यह कविता 'नीम' के पेड़ पर लिखी गई थी। सुभद्रा बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थी। ये अत्यंत शीघ्र कविता लिख डालती थी, मानो उनको कोई प्रयास ही न करना पड़ता हो। स्कूल के काम की कविताएँ तो वह साधारणतया घर से आते–जाते तांगे में लिख लेती थी।

इनका विवाह खण्डवा (मध्य प्रदेश) निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के साथ ही सुभद्राजी के जीवन में एक नया मोड़ आया । राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आन्दोलन का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उससे प्रेरित होकर ये राष्ट्र प्रेम पर कविताएं लिखने लगी। इनके पिता ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेते रहे। सुभद्राजी ने असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण अपना अध्ययन छोड़ दिया था । लक्ष्मणसिंह चौहान जैसे जीवनसाथी और माखनलाल चतुर्वेदी जैसा पथ–प्रदर्शक पाकर वह स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर सक्रिय भाग लेती रहीं, जिसके परिणामस्वरूप ये कई बार जेल भी गयीं। ये मध्य प्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रहीं। इन्हें 'मुकुल' तथा 'बिखरे मोती' पर अलग–अलग 'सेकसरिया' पुरस्कार मिले। 15 फरवरी सन् 1948 ई. को एक मोटर दुर्घटना में सिवनी में इनकी असामयिक मृत्यु हो गयी।

सुभद्राजी की काव्य साधना के पीछे असीम देश–प्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। इनकी कविता में सच्ची वीरांगना के ओज और शौर्य प्रकट हुए। हिन्दी काव्य जगत में ये अकेली ऐसी कवयित्री थीं जिन्होंने अपने कण्ठ की पुकार से, लाखों भारतीय युवक–युवतियों को युग–युग की अकर्मण्य उदासी को त्याग, स्वतन्त्रता संग्राम में अपने को झोंक देने के लिए प्रेरित किया। वर्षो तक सुभद्रा जी की 'झाँसी वाली रानी थी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविताएँ लाखों तरुण–तरुणियों के हृदय में क्रान्ति की ज्वाला फूंकती रहीं।

'मुकुल' और त्रिधारा' इनके प्रसिद्ध काव्य–संग्रह है, 'सीधे–सादे चित्र', 'बिखरे मोती' और 'उन्मादिनी' इनकी कहानियों के संकलन है सुभद्राजी की भाषा सीधी, सरल तथा स्पष्ट एवं आडम्बरहीन खड़ीबोली है। मुख्यतः दो रस इन्होंने चित्रित किये हैं– वीर तथा वात्सल्य। अपने काव्य में पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र भी इन्होंने अंकित किये हैं जिनमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। इनके काव्य में एक ओर नारी सुलभ ममता तथा सुकुमारता है तथा दूसरी ओर पद्मिनी के जौहर की भीषण ज्वाला। नारी हृदय की कोमलता और उसके मार्मिक भाव पक्षों को नितान्त स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना इनकी शैली का मुख्य आधार है ।

देशप्रेम

वीरों का कैसा हो वसंत, स्वदेश के प्रति, विजयादशमी, विदाई, सेनानी का स्वागत, झाँसी की रानी की समाधि पर, जलियाँ वाले बाग में वसंत आदि श्रेष्ठ कवित्व से भरी उनकी देश प्रेम से ओत–प्रोत सशक्त कविताएँ हैं।

बचपन से प्रेम

अपनी संतति में मनुष्य किस प्रकार 'मेरा नया बचपन' कविता में मार्मिक अभिव्यक्ति पाता है–

''मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी
नंदन वन सी फूल उठी
यह छोटी–सी कुटिया मेरी।।''

शैशव सम्बन्धी इन कविताओं की एक और बहुत बड़ी विशेषता है कि ये 'बिटिया प्रधान' कविताएँ हैं – कन्या भ्रूण–हत्या की बात तो हम आज जोर–शोर से कर रहे हैं, किन्तु बहुत ही चुपचाप, बिना मुखरता के, सुभद्रा जी इस विचार को सहजता से व्यक्त करती थीं। यहाँ 'अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो' का भाव नहीं, अपितु संसार का समस्त सुख बेटी में देखा गया है।

दाम्पत्य प्रेम –

दाम्पत्य की रूठने और मनुहार करती 'प्रियतम से' कविता का यह अंश देखिए–

''जरा–जरा सी बातों पर
मत रूठो मेरे अभिमानी
लो प्रसन्न हो जाओ
गलती मैंने अपनी सब मानी
मैं भूलों की भरी पिटारी
और दया के तुम आगार
सदा दिखाई दो तुम हँसते
चाहे मुझसे करो न प्यार।''

दाम्पत्य की विषम और गोपन स्थितियों की जिस अकुंठ भाव से अभिव्यक्ति सुभद्रा कुमारी चौहान ने की है, वह बड़ी मार्मिक बन पड़ी है–

''यह मर्म–कथा अपनी ही है
औरों की नहीं सुनाऊँगी
तुम रूठो सौ–सौ बार तुम्हें
पैरों पड़ सदा मनाऊँगी
बस, बहुत हो चुका, क्षमा करो
अवसाद हटा दो अब मेरा
खो दिया जिसे मद में मैंने
लाओ, दे दो वह सब मेरा।''

प्रकृति प्रेम

प्रकृति से भी सुभद्रा कुमारी चौहान के कवि का गहन अनुराग रहा है– 'नीम', 'फूल के प्रति', 'मुरझाया फूल' आदि में उन्होंने प्रकृति का चित्रण बड़े सहज भाव से किया है। इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता का फलक अत्यन्त व्यापक है, फिर भी 'खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी', कविता जन–जन का हृदयहार बनी ही रहेगी।

मैं अछूत हूँ, मंदिर में आने का मुझको अधिकार नहीं है।
किंतु देवता यह न समझना, तुम पर मेरा प्यार नहीं है।
प्यार असीम, अमिट है, फिर भी पास तुम्हारे आ न सकूँगी।
यह अपनी छोटी सी पूजा, चरणों तक पहुँचा न सकूँगी।

इसीलिए इस अंधकार में, मैं छिपती–छिपती आई हूँ।
तेरे चरणों में खो जाऊँ, इतना व्याकुल मन लाई हूँ।
तुम देखो पहिचान सको तो तुम मेरे मन को पहिचानो।
जग न भले ही समझे, मेरे प्रभु! मेरे मन की जानो।

क्रोध अत्यंत कठोर होता है वह देखना चाहता है कि मेरा एक एक शब्द निशाने पर बैठा है या नहीं। वह मौन को सहन नहीं कर सकता, ऐसा कोई घातक शस्त्र नहीं जो उसकी शस्त्र शाला में न हो, पर मौन वह मंत्र है जिसके आगे उसकी सारी शक्ति विफल हो जाती है।

–मुंशी प्रेमचंद

कबीर माया पापणीं, हरि सूँ करे हराम।
मुखि कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम।।

व्याख्याः यह माया बड़ी पापिन है। यह प्राणियों को परमात्मा से विमुख कर देती है तथा उनके मुख पर दुर्बुद्धि की कुंडी लगा देती है और राम–नाम का जप नहीं करने देती।

ममता कालिया

ममता कालिया समकालीन हिंदी लेखन जगत की अग्रणी साहित्यकार हैं। अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. ममता कालिया का जन्म 1940 में भगवान श्रीकृष्ण की नगरी मथुरा में हुआ था। ममता कालिया ने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, संस्मरण और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम का जादू बिखेरा। इन्होंने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा। अपनी रचनाओं में ये न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती हैं, बल्कि इन्होंने उनके उत्तर देने की भी कोशिश की है।

इनकी शिक्षा दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर और इन्दौर जैसे शहरों में हुई। उनके पिता स्व. विद्याभूषण अग्रवाल पहले अध्यापन में और बाद में आकाशवाणी में कार्यरत रहे। वे हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के विद्वान् थे और अपनी बेबाक बयानी के लिए जाने जाते थे। ममता पर पिता के व्यक्तिव की छाप साफ दिखाई देती है। 'प्यार शब्द घिसते घिसते चपटा हो गया है अब हमारी समझ में सहवास आता है' जैसी साहसी कविताओं से लेखन आरंभ कर ममता ने अपनी सामर्थ्य और मौलिकता का परिचय दिया और जल्द ही कथा–साहित्य की ओर मुड़ गईं। जीवन की जटिलताओं के बीच जी रहे इनके पात्र एक निर्भय और श्रेष्ठतर सुलूक की माँग करते हैं जहाँ आक्रोश और भावुकता की जगह सत्य और संतुलन का आग्रह है। ममता कालिया ने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा। अपनी रचनाओं में ये न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती हैं, बल्कि इन्होंने उनके उत्तर देने की भी कोशिश की है।

प्रमुख कृतियाँ –

कहानी संग्रह– छुटकारा, एक अदद औरत, सीट नं. छः, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, प्रतिदिन, मुखौटा, निर्मोही, थिएटर रोड के कौए, पच्चीस साल की लड़की, ममता कालिया की कहानियाँ (दो खंडों में अब तक की संपूर्ण कहानियाँ) ।

उपन्यास– बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, एक पत्नी के नोट्स, दौड़, अँधेरे का ताला और दुक्खम्–सुक्खम ।
कविता संग्रह – खाँटी घरेलू औरत, कितने प्रश्न करूँ, नरक दर नरक और प्रेम कहानी ।
नाटक संग्रह– 'यहाँ रहना मना है' एवं 'आप न बदलेंगे' ।
संस्मरण– कितने शहरों में कितनी बार ।
अनुवाद– मानवता के बंधन (उपन्यास – सॉमरसेटमॉम)।
संपादन– हिंदी (महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक अंग्रेजी पत्रिका)
सम्मान और पुरस्कार – व्यास सम्मान, अभिनव भारती सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, यशपाल स्मृति सम्मान, महादेवी स्मृति पुरस्कार, कमलेश्वर स्मृति सम्मान, सावित्री बाई फुले स्मृति सम्मान एवं अमृत सम्मान।

मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को भानपुरा, मध्य प्रदेश में हुआ था। परंतु, वे राजस्थान के अजमेर शहर में पली–बढ़ी। मन्नू के पिता का नाम सुखसंपत राय भंडारी था जो कि स्वयं एक प्रतिष्ठित विद्वान एवं स्वतंत्रता सेनानी थे। इनके पिता की पांच संताने थी जिनमें से मन्नू सबसे छोटी थी। इनके दो बड़े भाई व दो बड़ी बहनें थीं। मन्नू के बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था, परंतु लेखन के लिए उन्होंने 'मन्नू' नाम का चुनाव किया। मन्नू ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर (राजस्थान) से की और उसके बाद इन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इन्होंने हिंदी साहित्य में परास्नातक की डिग्री प्राप्त की। मन्नू का विवाह राजेंद्र यादव के साथ हुआ था जो कि हिंदी लेखक तथा संपादक थे। मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व निर्माण में उनके माता–पिता और उनके भाई–बहन का विशेष योगदान था । माँ के स्नेह, पिता के मार्गदर्शन और शिक्षा–दीक्षा आदि की स्वतंत्रता के अतिरिक्त उन्हें अपने बड़े भाई–बहनों से भी भरपूर लाड़ मिला, उनका यह स्नेह जीवन पर्यंत बना रहा जहाँ वे एक दूसरे के दुःख और खुशियों को अपना समझते और बांटते रहे । इन्होंने अपनी सृजन प्रतिभा के बूते आधुनिक हिंदी कथाकारों के मध्य एक विशिष्ट पहचान बनायी है । इनकी रचनाओं में नारियां अपने–अपने तरीके से संघर्ष करती दिखाई पड़ती हैं । इनकी रचनाओं का अन्य भाषाओं जैसे गुजराती, पंजाबी, मराठी, बांग्ला, कन्नड़, मलयालम और सिंधी में भी अनुवाद हुआ है ।

शिक्षा और व्यवसाय

मन्नू भंडारी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर के 'सावित्री गर्ल्स हाईस्कूल' में हुई थी, इन्टरमीडिएट तक शिक्षा इन्होंने यहीं हासिल की । बार–बार पिता का तबादला होने के कारण इनकी शिक्षा अलग–अलग स्थानों से पूर्ण हुई । अजमेर के कॉलेज में बी.ए. में प्रवेश न दिए जाने पर इन्होंने कॉलेज के खिलाफ आन्दोलन किया तथा आजादी के उपरांत इन्हें उसी कॉलेज में दाखिला तो मिला परन्तु वहां पर पढ़ाई बीच में ही छोड़कर कलकत्ता अपनी बड़ी बहन सुशीला के पास चली गयीं । वर्ष 1949 में इन्होंने कलकत्ता से ही बी.ए. की डिग्री हासिल की । यहाँ बी.ए. में उनका विषय हिंदी नहीं था, कलकत्ता में एक वर्ष अध्यापन का कार्य करने के बाद इन्होंने बनारस विश्वविद्यालय से हिंदी विषय से एम.ए. की डिग्री हासिल की ।

मन्नू भंडारी ने 1952 से लेकर 1961 तक कलकत्ता के 'बालीगंज शिक्षा सदन' में एक अध्यापिका के रूप में कार्य किया । उसके उपरांत कलकत्ता के ही 'रानी बिडला कॉलेज' में वर्ष 1964 तक शिक्षण के कार्य से जुड़ी रहीं तथा बाद में ये कलकत्ता से दिल्ली चली आयीं, जहाँ ये अपने सेवानिवृत्ति तक दिल्ली के सुप्रसिद्ध 'मिरांडा कॉलेज' में बतौर प्राध्यापिका कार्यरत रहीं। सप्ताह में एक बार ये दिल्ली विश्वविद्यालय में एम.ए. की कक्षा में भी पढ़ाने जाया करतीं थीं ।

कृतियाँ

कहानी–संग्रह :– एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, श्रेष्ठ कहानियाँ, आँखों देखा झूठ और नायक खलनायक विदूषक।

उपन्यास :– आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान और कलवा, एक कहानी यह भी।

पटकथाएँ :– रजनी, निर्मला, स्वामी, दर्पण।

नाटक :– बिना दीवारों का घर।

प्रमुख पुरस्कार–

हिंदी अकादमी दिल्ली शलाका सम्मान (2006–2007)। मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन भवभूति अलंकरण (2006–2007)। वर्ष 1976 में आपातकाल के दौरान मन्नू भंडारी ने 'पद्म श्री' तथा साहित्य कला परिषद् द्वारा प्रस्तावित पुरस्कार को न लेकर अपना विरोध दर्ज करवाया था ।

तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई।
छाड़ि दई कुलकि कानि कहा करिहै कोई।।

व्याख्याः महान कवियित्री और संत मीराबाई जी कहती हैं कि मेरे इस दुनिया में ना तो पिता हैं, ना ही माता हैं और ना ही कोई भाई हैं लेकिन मेरे गिरधर गोपाल हैं अर्थात मीराबाई ने श्री कृष्ण को ही अपना सर्वस्व माना है।

शिवानी

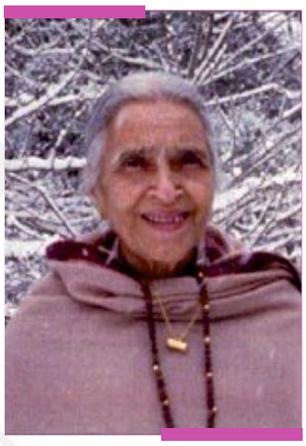

हिंदी की जानी–मानी साहित्यकार एवं उपन्यासकार शिवानी जी का जन्म 17 अक्टूबर 1923 को विजयदशमी के दिन राजकोट, गुजरात में हुआ था। इनका वास्तविक नाम गौरा पंत था एवं इनके पिता का नाम अश्वनी कुमार पाण्डेय था । इनकी माता गुजरात की विदुषी और पिता अंग्रेजी के लेखक थे । इनकी शिक्षा पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन में हुई। साठ और सत्तर के दशक में, इनकी लिखी कहानियां और उपन्यास हिंदी पाठकों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुए और आज भी लोग उन्हें बहुत रुचि से पढ़ते हैं। हिंदी की सुप्रसिद्ध उपन्यासकार रहीं गौरा पंत जी 'शिवानी' के नाम से लेखन करती थीं। वे हिंदी साहित्य जगत में एक ऐसी शख्सियत रहीं, जिनकी हिंदी, संस्कृत, गुजराती, बंगाली, उर्दू तथा अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ थी और जो अपनी कृतियों में उत्तर भारत के कुमायूँ क्षेत्र के आस–पास की लोक संस्कृति की झलक दिखलाने और किरदारों के बेमिसाल चरित्र चित्रण करने के लिए जानी जाती रहीं । महज 12 वर्ष की उम्र में पहली कहानी प्रकाशित होने से लेकर इनके निधन तक इनका लेखन निरंतर जारी रहा। इनकी अधिकतर कहानियां और उपन्यास नारी प्रधान रहे। इसमें इन्होंने नायिका के सौंदर्य और उसके चरित्र का वर्णन बड़े दिलचस्प अंदाज में किया।

शिवानी जी के लेखन तथा व्यक्तित्व में उदारवादिता और परम्परा निष्ठता का जो अद्भुत मेल था वह अद्वितीय था । शिवानी जी की पहली रचना अल्मोड़ा से निकलने वाली 'नटखट' नामक एक बाल पत्रिका में छपी थी। तब ये मात्र बारह वर्ष की थीं। इसके बाद ये श्री मदन मोहन मालवीय जी की सलाह पर पढ़ने के लिए अपनी बड़ी बहन जयंती तथा भाई त्रिभुवन के साथ शांतिनिकेतन गईं, जहाँ स्कूल तथा कॉलेज की पत्रिकाओं में बांग्ला में इनकी रचनाएँ नियमित रूप से छपती रहीं। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर शिवानी को 'गोरा' कहकर पुकारते थे। रवींद्रनाथ टैगोर की सलाह पर कि हर लेखक को मातृभाषा में ही लेखन करना चाहिए, शिरोधार्य कर शिवानी जी ने हिंदी में लिखना प्रारम्भ किया। शिवानी जी की एक लघु रचना 'मैं मुर्गा हूँ' 1951 में 'धर्मयुग' में छपी थी। इसके बाद आई इनकी कहानी 'लाल हवेली' और तब से जो लेखन–क्रम शुरू हुआ, इनके जीवन के अन्तिम दिनों तक चलता रहा। इनकी अन्तिम दो रचनाएँ 'सुनहुँ तात यह अकथ कहानी' तथा 'सोने दे' इनके विलक्षण जीवन पर आधारित आत्मवृत्तात्मक आख्यान हैं।

उपन्यास, कहानी, व्यक्तिचित्र, बाल उपन्यास और संस्मरणों के अतिरिक्त, लखनऊ से निकलने वाले पत्र 'स्वतन्त्र भारत' के लिए 'शिवानी' ने वर्षों तक एक चर्चित स्तम्भ 'वातायन' भी लिखा। शिवानी जी की 'अमादेर शांतिनिकेतन' और 'स्मृति कलश' इस पृष्ठभूमि पर लिखी गई श्रेष्ठ पुस्तकें हैं। 'कृष्णकली' इनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है।

शिवानी जी की कृतियों में चरित्र चित्रण में एक तरह का आवेग दिखाई देता है। ये चरित्र को शब्दों में कुछ इस तरह पिरोकर पेश करती थीं जैसे पाठकों की आंखों के सामने कोई सुंदर चित्र तैर जाए। इन्होंने संस्कृत निष्ठ हिंदी का प्रयोग किया। कहा जाता है कि लेखक की जिन रचनाओं से पाठक खुद को जोड़ने लगता है वे रचनाएँ उसे विशिष्ट प्रसिद्धि प्रदान करती हैं। शिवानी जी ने अपने पाठकों का ध्यान सामाजिक स्थितियों, मानसिक द्वंद और परंपरागत कुप्रथाओं की ओर अपने लेखन के माध्यम से आकर्षित किया । इनके कटाक्ष और कभी–कभी सीधा कठोर प्रहार तत्कालीन समाज की दिखावटी प्रवृत्ति का मूल्यांकन करता है । समाज का शायद ही कोई पहलू होगा जिस पर इनकी कलम नहीं चली। शिवानी जी अपने समकालीन साहित्यकारों की तुलना में काफी सहज और सादगी से भरी थीं। 1982 में शिवानी जी को भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' से अलंकृत किया गया। इनका साहित्य के क्षेत्र में योगदान अविस्मरणीय है। शिवानी जी की मृत्यु 21 मार्च 2003 को दिल्ली में 79 वर्ष की आयु में हुई ।

शिवानी जी की रचनाएँ–

उपन्यास–कृष्णकली, कालिंदी, अतिथि, पूतों वाली, चल खुसरों घर आपने, श्मशान चंपा, मायापुरी, कैंजा, गेंदा, भैरवी, स्वयंसिद्धा, विषकन्या, रति विलाप और आकाश ।

यात्रा विवरण –चरैवैति एवं यात्रिक

कहानी संग्रह – शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ, शिवानी की मशहूर कहानियाँ, झरोखा एवं मृण्माला की हँसी ।

संस्मरण – अमादेर शांतिनिकेतन, स्मृति कलश, वातायन एवं जालक ।

धारावाहिक–सुरंगमा, रतिविलाप, मेरा बेटा और तीसरा बेटा ।

आत्मकथ्य – सुनहुँ तात यह अमर कहानी

कृष्णा सोबती

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती का जन्म पंजाब प्रांत के गुजरात शहर में 18 फरवरी 1925 को हुआ था, जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है। इन्होंने लाहौर के फतेहचंद कॉलेज से अपनी उच्च शिक्षा की शुरुआत की थी, परंतु भारत और पाकिस्तान विभाजन के बाद इनका पूरा परिवार दिल्ली आकर बस गया । अपनी साहित्य सेवा की शुरुआत इन्होंने दिल्ली से ही की। विभाजन के तुरंत बाद इन्होंने 2 साल तक महाराजा तेज सिंह के शासन में कार्य किया जो कि सिरोही, राजस्थान के महाराजा थे। कृष्णा सोबती जी का निधन दिल्ली में उनके घर पर लंबी बीमारी की वजह से 25 जनवरी 2019 को हुआ ।

कृष्णा सोबती जी मुख्य रूप से कहानी लेखिका थीं । कृष्णा जी की तमाम कहानियां 'बादलों के घेरे' नामक संग्रह में संकलित हैं । वह आज भी अपनी संयमित अभिव्यक्ति और रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं । इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं पर होने वाले विभिन्न तरह के अत्याचारों को उजागर किया है, उनकी विभिन्न समस्याओं के साथ–साथ उनके साथ होने वाली सामाजिक अश्लीलता का भी इन्होंने वर्णन किया है। इनकी तमाम रचनाओं में होने वाली नैतिक और सामाजिक बहसें पाठकों के दिलों पर छा जाने वाली है।

कृष्णा सोबती जी ने हिंदी की कथा– भाषा को एक विलक्षण ताजगी दी है। इनके भाषा–संस्कार के घनत्व, जीवन्त प्रांजलता और सम्प्रेषण ने हमारे समय के अनेक पेचीदा सच आलोकित किए हैं। नारी की मुक्ति की छटपटाहट एवं घर की चहारदीवारी से बाहर जाने की हसरतें कृष्णा जी के कथा साहित्य में ऐसे ही नहीं आती है, बल्कि इन्होंने उसे एक पारदर्शी भाषा द्वारा महिलाओं की कल्पना के सांचे में ढ़ाला है । कृष्णा जी हिंदी साहित्य सागर का ऐसा मोती हैं जिसकी चमक हमेशा बरकरार रहेगी ।

प्रमुख रचनाएं –

उपन्यास– डार से बिछुड़ी, यारों के यार, तीन पहाड़, मित्रो मरजानी, सूरजमुखी अंधेरे के, ऐ लड़की, समय सरगम, सोबती एक सोहबत, जिंदगीनामा एवं जैनी मेहरबान सिंह ।

कहानी संग्रह – बादलों के घेरे ।

सम्मान और पुरस्कार –

वर्ष 1980 में इन्हें 'जिंदगीनामा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था । इन्हें साल 1981 में शिरोमणि पुरस्कार मिला एवं वर्ष 1982 में हिंदी अकादमी पुरस्कार मिला । वर्ष 2017 में इन्हें भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था ।

कहि रहीम इक दीप तें, प्रगट सबै दुति होय।
तन सनेह कैसे दुरै, दृग दीपक जरु दोय।।

व्याख्याः रहीम कहते हैं कि जब एक ही दीपक के प्रकाश से घर में रखी सारी वस्तुएँ स्पष्ट दिखने लगती हैं, तो फिर नेत्र रूपी दो–दो दीपकों के होते तन–मन में बसे स्नेह–भाव को कोई कैसे भीतर छिपाकर रख सकता है! अर्थात मन में छिपे प्रेम–भाव को नेत्रों के द्वारा व्यक्त किया जाता है और नेत्रों से ही उसकी अभिव्यक्ति हो जाती है।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय।
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछिताए । ।

व्याख्याः सब समय का खेल है। समय आने पर फल पकते हैं और समय आने पर झड़ भी जाते हैं। रहीम जी कहते हैं कि समय ही परिस्थितियों को बदलता है अर्थात् समय सदा एक–सा नहीं रहता, इसलिए पछतावा करने का कोई तुक नहीं है।

मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवम्बर, 1944 को उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ जिले के सिर्कुरा नामक गाँव में हुआ था। इनकी आरंभिक शिक्षा झाँसी के खिल्ली गाँव में हुई। अपनी माँ की व्यस्तता के कारण इन्हें उनसे दूर रहकर, असुरक्षा के भाव के साथ शिक्षा ग्रहण करनी पड़ी। कन्या संस्कृत विद्यालय से इनकी शिक्षा आरम्भ हुई। इसके उपरांत आगे की शिक्षा के लिए ये झाँसी के डी.वी. इन्टर कॉलेज आ गयीं। यहाँ परिवहन के समुचित साधन के अभाव में इन्हें हर रोज दस किलोमीटर का फासला साईकिल से तय करना पड़ता था। कॉलेज की शिक्षा के दौरान इन्होंने 'दर्शन शास्त्र' और 'मनोविज्ञान' से बी.ए. की उपाधि हासिल की और फिर बाद में बुंदेलखंड झाँसी से हिंदी साहित्य से एम.ए. की उपाधि हासिल की। आरंभिक जीवन काल गांव में व्यतीत होने की वजह से ये अपने ग्रामीण अनुभवों को साहित्य में लाईं। ऐसा माना जाता है कि उपन्यास सम्राट प्रेमचंद अपनी रचनाओं में गांव की स्त्रियां लाए थे जबकि मैत्रेयी पुष्पा जी के विषय में कहा जाता है कि ये अपने लेखन में स्त्रियों का गांव लेकर आईं हैं। स्त्री– विचार को प्रमुखता से रेखांकित करने वाली यह कथाशिल्पी अपने पहले ही कहानी संग्रह से चर्चा में आ गई थीं । इन्हें राष्ट्रीय सहारा, वनिता जैसी पत्र–पत्रिकाओं में निरंतर सक्रिय लेखन का भी अनुभव प्राप्त है। इनके लेखन में ब्रज और बुंदेल दोनों संस्कृतियों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

मैत्रेयी पुष्पा जी के रचनाकर्म में समाज के प्रति सजगता भलीभांति परिलक्षित होती है। इनकी रचनाओं में स्त्री, दलित के साथ–साथ अन्य उपेक्षितों का सरोकार भी दृष्टिगोचर होता है। इन्होंने उपन्यास, कहानियां, आत्मकथा तथा वैचारिक साहित्य आदि विधाओं में अपनी लेखनी ही चलायी है।

मैत्रेयीपुष्पा का उपन्यास 'कस्तूरी कुण्डल बसै', केवल उपन्यास ही नहीं उनकी आत्मकथा भी है। दरअसल यह पुस्तक पाठकों को एक लेखिका की जीवन शैली, उसके संबंध, सरोकार और संघर्षों की दास्तान बड़ी रोचकता से बताती है। आरंभ से अंत तक रचना के आकर्षण से पाठक की रुचि को बाँधे रखती है। इस पुस्तक में मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने उन अंतरंग और लगभग अनछुए अकथनीय प्रसंग का ताना–बाना कलात्मक ढंग से बुना है, जिन्हें आमतौर पर सामान्य जन छुपा लेते हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी के इस हौसले के कारण उनका यह आत्मकथ्यात्मक उपन्यास हिन्दी में उपलब्ध आत्मकथाओं में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल हुआ है।

प्रमुख रचनाएं –

उपन्यास – चाक, अल्मा कबूतरी, इदन्नमम, स्मृति दंश, कहै इसुरी फाग, झूला नट, बेतवा बहती रही एवं कस्तूरी कुण्डल बसै ।

कहानियाँ – त्रिया हठ (कहानी संग्रह), फैसला, सिस्टर, सेंध, अब फूल नहीं खिलते, बोझ, पगला गई है भागवती, छाँह और तुम किसकी हो बिन्नी?

कहानी संग्रह – चिन्हार, एवं ललमनियां ।

कविता संग्रह – 'लकीरें' शीर्षक से उनकी एक कविता संग्रह भी प्रकाशित हो चुकी है।

आत्मकथा – गुड़िया भीतर गुड़िया ।

यात्रा–संस्मरण– अगनपाखी ।

आलेख – खुली खिड़कियाँ ।

सम्मान और पुरस्कार

मैत्रेयीपुष्पा को अब तक कई सम्मान हासिल हो चुके हैं, जिनमें सुधा स्मृति सम्मान, कथा पुरस्कार, साहित्य कृति सम्मान, प्रेमचंद सम्मान, वीरसिंह जू देव पुरस्कार, कथाक्रम सम्मान, हिंदी अकादमी का साहित्य सम्मान, सरोजिनी नायडू पुरस्कार और सार्क साहित्य पुरस्कार प्रमुख हैं।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके
बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली
श्रेणी में सभासीन हो सकती है।
– मैथिलीशरण गुप्त

जो शिक्षा प्रणाली लड़के लड़कियों को सामाजिक बुराई
या अन्याय के खिलाफ लड़ना नहीं सिखाती, उस
शिक्षा में जरूर कोई न कोई बुनियादी खराबी है।
– मुंशी प्रेमचंद

अतिथि रचनाकार

हिंदी भाषा की आधार शिला है "देवनागरी"

हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का चोली दामन का संबंध है। समस्त भाषाओं का मूल रूप उच्चरित ध्वनियों पर आधारित है। मानव मन के भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति शब्दों व वाक्यों द्वारा होती है। श्रुत्र ध्वनियों को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए, रेखाचित्रों तथा चिन्हों का प्रयोग होता रहा है। इन्ही का परिवर्तित स्वरूप ध्वनियों को निश्चित क्रमानुसार लिखित रूप को सार्थक बनाते हुए प्रस्तुत करना ही लिपिबद्ध करना होता है। भाषा और लिपि मनुष्य के भावों व विचारों के सम्प्रेषण के माध्यम हैं। लिपि और भाषा का अन्योन्याश्रित संबंध है। भाषा में जो ध्वनियां श्रव्य रूप में प्रस्तुत होती हैं वही लिपि में दृश्य रूप में प्रयुक्त होती है। भाषा सदैव समय व स्थान की सीमाओं में सीमित रहती है जबकि लिपि समय और स्थान की सीमाओं से परे भी पहुँच कर अपना अस्तित्व प्रस्तुत करती है। मौखिक भाषा को लिपि द्वारा ही लिखित रूप प्रदान किया जाता है।

देवनागरी लिपि भारत की प्रमुख लिपि मानी जाती है। हिंदी भाषा की समस्त बोलियां जैसे ब्रज अवधी, भोजपुरी, नेपाली, गुजराती इसी भाषा में लिखी जाती है। देवनागरी या नागरी लिपि की उत्पत्ति भारत की प्राचीन भाषा ब्राह्मी से मानी जाती है। गुप्त काल की गुप्त लिपि से पूर्व ब्राह्मी लिपि का प्रचलन था। लगभग आठवीं शताब्दी में प्राचीन नागरी का आविर्भाव हुआ। अशोक के शिलालेखों में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग हुआ है। देवनागरी को लोक नागरी और हिंदी लिपि भी कहा गया है। गुजरात के नागर पंडितों का एक वर्ग था। उन्ही के नाम से नागरी शब्द का उद्‌गम हुआ और देव शब्द संस्कृत भाषा की देन है। इस प्रकार देवनागरी का प्रचलन हुआ।

भारत भूमि पर पल्लवित समस्त भाषाओं को जीवन्त रखने में देवनागरी लिपि का महत्वपूर्ण योगदान है। यही लिपि है जिसने हिंदी भाषा को प्राणवान बनाते हुए, हमारी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्य बनाये रखने में सहयोग किया। समूचे देश की गौरवमयी परम्पराओं, गाथाओं तथा सांस्कृतिक अवधारणाओं को गतिमान करने में सदैव सक्रियता दिखाई है। हमारी राष्ट्रीय गरिमा का परिचय नागरी लिपि पर आधृत है। संस्कृत, अवधी, ब्रज, हिंदी, मराठी, उडिया आदि भाषाओं का साहित्य भी नागरी लिपि द्वारा ही अनुप्राणित हुआ है। डॉ0 मनोज कुमार पाण्डेय ने लिखा है कि "भाषा के बिना यदि संस्कृति पंगु है तो संस्कृति के अभाव में भाषा अंधी है।"

मौखिक भाषा या नाद का चित्रात्मक स्वरुप लिपि कहलाता है। लिपि द्वारा ही हमारी सभ्यता और संस्कृति को एक पीढ़ी से आगे की पीढ़ी में हस्तान्तरित किया जाता है। भारतीय भाषाओं के लिए एक ही सामान्य लिपि को अपनाना अधिक श्रेयस्कर है। इससे राष्ट्रीय भावात्मक एकता को प्रोत्साहन तो मिलेगा ही साथ ही, गौरवमय परम्पराओ को भी बल मिलेगा । हमारे देश का जिस प्रकार एक राष्ट्रीयता, एक राष्ट्रध्वज है उसी प्रकार सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए एक ही लिपि सहजता पूर्वक अपनायी जा सकती है और वह है। "देवनागरी लिपि"। ऐसा होने पर समूचा राष्ट्र एकता के सूत्र में बंधकर परस्पर सहयोग, सहानुभूति, संवेदना और भावात्मक एकता के सूत्र में बंधकर सुदृढ़ बनेगा।

आचार्य महावीर प्रसाद त्रिवेदी जी हिंदी भाषा के प्रकांड पंडित और शिल्पकार थे। जब उनके द्वारा सरस्वती पत्रिका का सम्पादन हुआ करता था तब हिंदी भाषा के क्षेत्र में विशेष प्रगतिशील प्रयास हुए थे। देश के कई साहित्यकार त्रिवेदी के निकट रहकर इस दिशा में प्रचार प्रसार करते रहे। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने भी भारत भारती के माध्यम से भारतीय जनमानस को आन्दोलित किया है और वैचारिक क्रांति का अलख जगाया है। इसी कारण उन्हे राष्ट्र कवि घोषित किया गया था।

भारत विविधताओं का देश है। इसमें अनेक भाषाएँ, धर्म, सम्प्रदाय तथा जातियों के लोग निवास करते है। जिनकी अनेक भाषाएँ और सांस्कृतिक परंपरा है। समस्त विविधताओं के होते हुए भी हम सब एक है फिर भी धर्म, प्रान्त, भाषा, जाति, और सम्प्रदाय के भेदभाव को दूर करना हमारी एकता को सुदृढ़ करना तथा जनमानस में राष्ट्रप्रेम की जोत जगाना आवश्यक है। इसके लिए देवनागरी लिपि समूचे देशवासियों को मणिमाला की तरह एक सूत्र में बांधे रखने में सक्षम है। देश के प्रत्येक भूभाग में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं में यदि देवनागरी लिपि का प्रचलन हो तो देशवासियों की निकटता बढ़ेगी और भावात्मक एकता को संबल मिलेगा।

प्रत्येक भूभाग की भाषा को यदि नागरी लिपि का आश्रय मिल जायेगा तो सभी देशवासी एक दूसरे की सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं से सुपरिचित रहकर परस्पर संबंधों को प्रगाढ़ बना सकेंगे जो राष्ट्रीय समृद्धि और समानता के लिए भी आवश्यक है। किसी भी भाषा में व्यक्त विचारों का या लिखित प्रतिमानों को यदि पढ़ नही सकते तो निकटता का आविर्भाव संभव नही हो सकता अतः लिपि की समानता का होना राष्ट्र व समाज के लिए कल्याणकारी और हितकर होगा। यदि राष्ट्र के नागरिकों में व्याप्त दूरियों, न्यूनताओं और वैचारिक भावनाओं का सुदृढ़ करना है तो नागरी लिपि को सम्पर्क लिपि के रुप में अपनाया जाना चाहिए। इससे देशवासी एक दूसरे के अति निकट आयेंगे और एक दूसरे के दुख दर्द में सहभागी बन सकेंगे। इस संबंध में डॉ0 किशोर काबरा ने कहा है "देवनागरी लिपि प्रेम की लिपि है। यह स्नेह और ज्ञान दोनों का वितरण कर सकती है। यह उत्तर को दक्षिण से और पूर्व को पश्चिम से ही नही बल्कि भारत को एशिया से जोड़ सकती है।"

अतः यह स्पष्ट है कि नागरी लिपि श्रेष्ठतम होने के साथ ही राष्ट्र की एकता को बढ़ाने में भी सहायक है। यह भी आश्चर्य है कि राष्ट्रभाषा के रुप में हिंदी और राष्ट्र लिपि के रूप में देवनागरी को समर्थन देने वाले बंगाल के समाज सुधारक एवं ब्रह्म समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय थे। जिन्होने बंगदूत में बंग्ला, हिंदी तथा अंग्रेजी

की रचनाओं को समान रुप से प्रकाशित करते हुए भी देवनागरी को प्राथमिकता देते रहे। बंकिम चन्द्र चटर्जी, रवींद्रनाथ टैगोर तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने भी हिंदी को ही राष्ट्रभाषा के रुप में स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की थी। राष्ट्रीय चेतना के लिए जिन साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है उनमें मुंशी प्रेम चन्द जी का विशेष नाम लिया जाता है। आचार्य त्रिवेदी जी की प्रेरणा से ही गुप्ताजी ने खड़ी बोली को अपने काव्य ग्रन्थों की रचना का माध्यम बनाया। तत्कालीन सरस्वती पत्रिका के माध्यम से भी आचार्य जी ने हिन्दी भाषा को विशेष प्रश्रय दिया तथा अंग्रेजों की भाषा नीति को समझते हुये बताया कि ''अंग्रेज भारतीय उपभाषाओं, बोलियों को परस्पर लड़ाकर अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व को स्थापित कराने में सर्वप्रथम रोमन लिपि को प्राथमिकता देने लगे थे''।

भारत गांवों का देश है हमारी ग्राम्य संस्कृति बहुत समृद्ध एवं संपन्न है। गांवों की लोक संस्कृति, बोलियां, लोककथा, गीत संगीत और सांस्कृतिक गतिविधियों ने हिंदी की विकास यात्रा में पूरा सहयोग किया है। हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व को संभालने वाले महापुरुषों, साहित्यकारों, कलाकारों और जन प्रतिनिधियों ने यह स्वीकार किया है कि देवनागरी लिपि समस्त भारतीय लिपियों में श्रेष्ठ होने के कारण समूचे राष्ट्र की एकता और अखंडता को बढ़ाने में सक्षम है। इसी लिपि के द्वारा भारतीयों में संगठन शक्ति एकता, राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना का विकास हो सकता है। राष्ट्रभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि राष्ट्र के लिए श्रेयस्कर है। विष्णुप्रिया के सम्पादक डॉ0 सुब्रमण्यम अपने पत्र के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित करते रहे है कि ''बोली के मोह में पड़कर निज भाषा का महत्व न भूले। निज भाषा के मोह में पड़कर हिंदी भाषा का स्थान न भूलें।''

भाषा जिस माध्यम से अंकित होती है उसे लिपि कहा जाता है। लिपि शब्द ''लिप्यते'' शब्द से उत्पन्न हुआ हैं जिसका आशय लिखावट है। भाषा को सुरक्षित रखने, अन्य के पास हस्तान्तरित करने तथा वाणी व ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करने और सुरक्षित रखने के लिए लिपि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वस्तुतः लिपि ध्वन्यात्मक भाषा को सांकेतिक स्वरुप प्रदान करती है। मानव मात्र की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही होती है तथा भाषा के ही द्वारा पाठकों तक संप्रेषित होती है। लिपि भाषा की दृश्य रुप आकृतियाँ है।

देवनागरी लिपि की दो शैलियाँ है 1– उत्तर शैली 2– दक्षिण शैली । उत्तर शैली से गुप्त लिपि, शारदा, कुटिल तथा प्राचीन नागरी लिपि विकसित हुई है। प्राचीन नागरी द्वारा असमिया, बंग्ला, कैथी, मैथिली पश्चिमी नागरी का विकास हुआ। तमिल और मलयालम का उदगम भी इसी लिपि द्वारा हुआ। श्री पांचाल के अनुसार ब्राह्मी की दक्षिण शैली से कलिंग और पश्चिमी लिपि का उद्भव हुआ। देवनागरी लिपि विश्व की समस्त लिपियों में सर्वाधिक वैज्ञानिक मानी जाती है। यह लिपि सर्वाधिक विशेषताओं से परिपूर्ण है। यथा–

- ☞ इस लिपि द्वारा वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण को अलग अलग लिखा जा सकता है।
- ☞ समस्त व्यजनों के अंत में अ निहित है। इससे वर्ण संयोग की विधि वैज्ञानिकता पूर्ण है।
- ☞ इस लिपि में संक्षिप्तता होती है।
- ☞ यह लिपि उच्चारण की सरलतम प्रणाली है।
- ☞ ध्वनि चिन्ह प्रत्येक वर्णो के लिए अलग अलग है। बलाघात भी निहित है।
- ☞ वर्णों का क्रम व्यवस्थित तथा सुसंबद्ध है।
- ☞ इसमें पहले स्वर तथा बाद में व्यजंनों का अविर्भाव होता है।

- ☞ इस लिपि में ह्रस्व एवं दीर्घ का क्रम पूर्णतः वैज्ञानिक है। एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिन्ह प्रयुक्त होता है।
- ☞ इसमें वर्णो की लिखावट सुन्दर तथा कलात्मक होती है।
- ☞ इस लिपि में लचीलापन रहता है।
- ☞ यह लिपि पढ़ने में सहज व सरल है।
- ☞ इसकी आकृति सुस्पष्ट है तथा उच्चारण भी सरल है।
- ☞ नागरी लिपि के जानने वाले विश्व में सबसे ज्यादा है।
- ☞ यह लिपि समस्त भाषाओं के लिए उपयुक्त एवं उपयोगी है।

नागरी लिपि की विशेषताओं के संबंध में डॉ0 मनोज कुमार पाण्डेय ने लिखा है ''भाषा के बिना संस्कृति पंगु है तो संस्कृति के अभाव में भाषा अंधी है और लिपि के बिना यह दोनो ही निष्प्राण है।'' राष्ट्रीय सुरक्षा और भावात्मक एकता का सूत्रपात करने वाली नागरी लिपि ही है। यदि देश की समस्त भाषाओं का चलन नागरी लिपि में हो जाये तो राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक निकटस्त हो जाएगा, हमारी दूरियाँ समाप्त हो जाएगी। यदि नागरी लिपि को सभी भाषाओं की सम्पर्क भाषा के रुप में प्रयुक्त किया जा सके तो राष्ट्रीय चेतना में अभूतपूर्व प्रगति संभव है। नागरी लिपि के द्वारा ही हम अपनी पुरातन संस्कृति का बोध करते हैं, संस्कृत ग्रन्थों से प्राप्त ज्ञान का आत्मिकरण कर पाते है। हमारी प्राचीन एवं पौराणिक संस्कृति का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए नागरी लिपि का विशिष्ट महत्व है। भारत की पुरातन संस्कृति राष्ट्रीय परम्पराओं तथा धार्मिक गतिविधियों और सामाजिक परिवेश का समग्र एवं व्यापक अध्ययन करना है, तो नागरी लिपि का बोध आवश्यक है।

हिंदी भाषा की महत्ता इस तथ्य से भी स्पष्ट है कि आज अमेरिका में भी लगभग 100 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन कराया जाता है। प्रियर्सन ने कहा है ''हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है'' हिंदी का कलेजा एक माँ की तरह उदार है इसमें कितनी ही भाषाओं के शब्द आकर समा गये। बिना संस्कृत व उर्दू के शब्दों के तो हिंदी की कल्पना तक नही कर सकते। हिंदी हमारी माँ है तो उर्दू मौसी है। अंग्रेजी विदेशी है, अपनी माँ की उपेक्षा करके दूसरों को संवारने वाले न अच्छे बेटे हो सकते है और न समझदार इंसान''। हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा है, यह हमारे देश की संस्कृति, धर्म व राजनीति की भाषा है जो समूचे देश में एकता, चेतना तथा देश प्रेम की भावना को संबल प्रदान करने वाली भाषा है जिसका आधार स्तम्भ देवनागरी लिपि है।

शंकर लाल माहेश्वरी
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
आगूचा, भीलवाडा
राजस्थान

बाल बत्तीसी

चतुराई

सियार, खरगोश, सूअर और शेर–चारों साथ रहते थे।
शेर राजा था। सियार व सूअर दीवान थे। खरगोश मुसाहब था।
जंगल का वह बादशाह अपने साथियों के साथ बड़े आराम से रहता था।
एक रोज शेर नें मुँह बाकर जंभाई ली।
सूअर नें कहा– "सरकार! आपके मुँह से बदबू आती है।"
शेर नाराज़ हो गया– "मैं जंगल का राजा! मेरे मुँह से भला बदबू आ सकती है"
वह सूअर पर झपटा। पंजों से उसका पेट फाड़ दिया। बेचारे की मौत हो गई!
अगले दिन शेर नें मुँह बनाकर फिर जंभाई ली और सियार की ओर घूरकर पूछा– "अब तू बता! मेरे मुँह से बदबू आती है ?"
सियार कल सूअर की बुरी गत अपनी आँखों देख ही चुका था। उसने सोचा– राजा का मिजाज गरम हो गया है, हमें नरमी से काम लेना चाहिए । वह बोला – "हुजूर आपके मुँह से इलायची की खुशबू आ रही है !"
शेर को खुश करने की नीयत से सियार ज़ोर ज़ोर से सांस खींचने लगा, मानो खुशबू को वह अपने अंदर भर रहा हो।
शेर ने डांटकर कहा – "चापलूस कहीं के! तुझसे मुझे यही आशा थी .... दस कोस का यह जंगल, इसका मैं अकेला राजा। ताज़ा खून मैं पीऊँ, नोच नोच कर मांस मैं खाऊँ, कलेजा मैं चबाऊँ, फिर बदबू मेरे मुँह से ना आएगी तो किसके मुँह से आएगी ? तेरी मति मारी गई है !"
सियार भी शेर की नाराजगी का शिकार हो गया।
बाकी बचा खरगोश । उससे यही सवाल शेर नें पूछा तो वह बोला – "सरकार! मुझे जुकाम हो गया है, बदबू – खुशबू का कुछ पता ही नहीं चलता !"
शेर उसकी ओर ताकता रह गया।

"जैसे बहे बयार पीठ तब तैसी करना।

साफ साफ बातें कर के नाहक मत मरना।।"

साभारः–नागार्जुन रचनावली –7

राजकमल प्रकाशन

अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यालय द्वारा दिनांक 30.10.22 को वी. एच. 2 में आयोजित दीपावली महोत्सव की झलकियां...

कार्यालयीन टिप्पणियाँ

Action may be taken as proposed	–	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
Carried forward	–	अग्रनीत
Consolidated report may be furnished	–	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।
Day to day administrative work	–	दैनंदिन प्रशासनिक कार्य
Deduction at source	–	स्रोत पर कटौती
Follow up action	–	अनुवर्ती कार्रवाई
For sympathetic consideration	–	सहानुभूतिपूर्ण विचार के लिए
Needful has been done	–	जरुरी कार्रवाई कर दी गई है।
No further action is required	–	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
Seen and returned with thanks	–	देखकर सधन्यवाद वापस किया जाता है।

श्रद्धांजलि

प्रख्यात पुरातत्वविद् और लेखक ब्रज बासी लाल का जन्म 1921 में झांसी में हुआ था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात पुरातत्व में रुचि विकसित की एवं पचास से अधिक वर्षों तक पुरातत्वविद के रूप में काम करते रहे। भारत की संस्कृति और पुरातत्व में इनका अभूतपूर्व योगदान रहा। इन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक पुरातात्विक स्थलों का अन्वेषण एवं उत्खनन किया।

1968 में इन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का महानिदेशक नियुक्त किया गया जहां ये 1972 तक रहे। इसके बाद इन्होंने भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला के निदेशक के रूप में भी कार्य किया। इन्हें वर्ष 2000 में भारत सरकार ने विज्ञान एवं अभियांत्रिकी क्षेत्र में 'पद्म भूषण' से और 2021 में भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

ब्रज बासी लाल जी ने कई पुस्तकें लिखी हैं जिनमें इंद्रप्रस्थ, द ऋग्वेदिक पीपल्स, महाभारत का इतिहास, कौशाम्बी, सरस्वती फ्लोज ऑन आदि प्रमुख हैं । इन्होंने अपनी पुस्तकों में इतने अच्छे तरीके से साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं कि इनकी पुस्तकें बार बार पढ़ने को आकर्षित करती हैं।

ब्रज बासी लाल जी का 10 सितम्बर 2022 को दिल्ली में देहांत हो गया । इनके निधन पर प्रधानमंत्री जी ने कहा कि ''लाल को एक महान बुद्धिजीवी के रूप में याद किया जाएगा, जिन्होंने हमारे समृद्ध अतीत के साथ हमारे संबंधों को गहरा किया।" इनका स्वर्गवास देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है । आई आई टी कानपुर संस्थान दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

ॐ शांतिः! शांतिः!! शांतिः!!!

संपादक – श्री विजय कुमार पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी

ईमेलः arkverma@iitk.ac.in; dalpana@iitk.ac.in
वेबः https://www.iitk.ac.in/new/antas

अभिकल्पः अल्पना दीक्षित
सम्पर्कः
राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाषः0512–259–7122